नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानदंडों पर आधारित हिंदी पाठ्यपुस्तक

सरस्वती सरगम 7

हिंदी पाठमाला

लेखिकाएँ
गीता बुद्धिराजा
एम०ए०, बी०एड्०

डॉ० जयश्री अय्यंगार
एम०ए०, एम०फिल० (हिंदी)
(एन०सी०ई०आर०टी०, डी०एस०ई०आर०टी० द्वारा पुरस्कृत)

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:

- Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
- Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
- Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
- Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
- Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
- Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2020

ISBN: 978-93-53621-56-8

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.

All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2SRG070HINAB19CBY

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

आमुख

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी तथा व्यावहारिक जीवन से जोड़ना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से स्कूल और घर की दूरी कम करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने तथा रटा देने की प्रवृत्ति का प्रबल विरोध किया गया है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में चर्चित बाल-केंद्रित शिक्षा की दिशा में सफलता प्रदान करवाएगा।

इस उद्देश्य में तभी सफलता मिलेगी, जब सभी स्कूलों के प्राचार्य/प्राचार्या और अध्यापक/अध्यापिकाएँ बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों, रचनात्मक प्रश्नों, पाठ से संबंधित प्रश्नों की मदद से सीखने और अपने अनुभवों पर विचार प्रकट करने का अवसर देंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि बच्चों को उचित अवसर, समय और स्वतंत्रता दी जाए तो वे अपने ज्ञान, सूझ-बूझ तथा कल्पना से ऊँची उड़ान भर सकते हैं। बच्चों के सामने यदि ज्ञान की सारी सामग्री परोस दी जाए तो वे अपनी क्षमता के अनुसार उसमें से बहुत अधिक ज्ञानवर्धक चीज़ें निकाल लेते हैं। यदि बच्चों को उपदेश दिया जाए तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। जब वे कहानी तथा कविता पढ़ते हैं या सुनते हैं, तो नैतिक तथा मानवीय-मूल्य सहजता से स्वीकार कर लेते हैं।

- पुस्तक को तैयार करते समय पाठों का चुनाव बच्चों की बौद्धिक क्षमता तथा भाषा-स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
- पाठ के आरंभ में पाठ को स्पष्ट करने वाली भूमिका दी गई है।
- पाठों में दिए गए चित्र तथा अभ्यास बच्चों को आकर्षित करेंगे तथा वे कुछ-न-कुछ संदेश भी अवश्य ग्रहण करेंगे।
- सोचिए और बताइए यह प्रश्न बच्चों के सोचने, समझने और लिखने की क्षमता को बढ़ावा देता है।
- अभ्यास बनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चे स्वयं सोचें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को प्रकट कर सकें।
- बच्चे जब अपने विचारों को प्रकट करेंगे तो उन्हें नए-नए शब्दों की जानकारी होगी तथा उनका शब्द-भंडार भी बढ़ेगा।
- बच्चे और खेल दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए पुस्तक के बीच-बीच में बच्चों को आकर्षित करने के लिए खेल तथा खेल से संबंधित गतिविधियाँ भी दी गई हैं।
- हमारी संस्कृति, कलाओं तथा लोक-कलाओं से भरपूर है। बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए पुस्तक में उन्हें यथा स्थान दिया गया है।
- पुस्तक का निर्माण सी०बी०एस०ई० समेत विभिन्न राज्यों के शिक्षा बोर्ड्स के पाठ्यक्रम को ध्यान रखते हुए किया गया है।
- पाठ्यक्रम को तैयार करते समय अहिंदी भाषी क्षेत्रों के छात्रों का विशेष ध्यान रखा गया है।

शिक्षाविदों एवं अभिभावकों के ऐसे सुझावों का हम स्वागत करेंगे, जिससे पुस्तक के आवश्यक संशोधन में सहायता ली जा सके।

–लेखिकाएँ

विषय-सूची

• यह भी जानिए .... (*vi*)

1. **देश हमारा न्यारा** (देशभक्ति कविता)
   –डॉ० नागेश पांडेय 'संजय' 07
2. **काकी** (मनोवैज्ञानिक कहानी)
   –सियाराम शरण गुप्त 12
3. **पेड़ लगाएँ** (पर्यावरण रक्षा)
   –कीर्ति श्रीवास्तव 19
   ◆ आभी के इलाके में पिकनिक (अतिरिक्त पठन)
   –पवन चौहान 25
4. **मेरा नया बचपन** (कविता)
   –सुभद्रा कुमारी चौहान 29
5. **दुगुनी खुशी** (कहानी)
   –डॉ० शकुंतला कालरा 35
6. **नाम में क्या है?** (नीति कथा) 43
   ◆ नोबेल पुरस्कार विजेता–रवींद्रनाथ टैगोर (व्यक्तित्व) (अतिरिक्त पठन) 49
7. **नीति सागर** (दोहे)
   –बिहारी, तुलसी, रहीम, कबीर 52
8. **गुरुभ्यो नमः– एकलव्य** (पुराण कथाओं के पन्नों से) 57
9. **जयंती आज़ादी की** (कविता)
   –भगवती प्रसाद द्विवेदी 63
   ◆ पदकों की कहानी (अतिरिक्त पठन) 68

10. **काबुलीवाला** (व्यक्ति-चित्र)

–रवींद्रनाथ टैगोर 70

11. **वर दे, वीणावादिनी** (प्रार्थना)

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 77

12. **परीक्षा** (कहानी)

–प्रेमचंद 82

- खेल भावना (अतिरिक्त पठन)

  –देवेश सिंगी 90

13. **शिव का पर्व–शिवरात्रि** (लेख) 92

14. **मानव-जीवन** (कविता)

–सुमित्रानंदन पंत 97

- 2050 तक नहीं रहेंगे बहुत-से पशु-पक्षी (समकालीन समस्या निवारण) (अतिरिक्त पठन)

  –सुनीता तिवारी 102

15. **कुंभ मेले का महत्व** (भारतीय संस्कृति) 104

मेरा पन्ना (परियोजना कार्य) **109–129**

- परियोजना-1 – पत्र-लेखन 109
- परियोजना-2 – अपठित गद्यांश/काव्यांश 117
- परियोजना-3 – अनुच्छेद-लेखन 125
- परियोजना-4 – निबंध-लेखन 128

- शब्दकोश का प्रयोग 130
- हिंदी वर्तनी का मानकीकरण 131
- सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome) 132

यह भी जानिए

तब भी...अब भी...129 वर्ष पूर्व भारतेंदु ने किया था ब्रजभाषा में 'एस०एम०एस०' का प्रयोग

करि वि4 देख्यौ बहुत बिनु 2स न।
तुम बिनु हे विक्टोरिये नित 900 पथ टेक।
ह 3 तुम पर सैन ले 80 कहत करि 100ह।
पै बिन7 प्रताप-बल सत्रु मरोरे भौंह।।

Gबहु Eस अCस बल हरहु प्रजन की रि।
सरU जमुना गंग मैं जब लौं थिर जग नी।
J Kवल तुम दास हैं जासहु तिनकी R।
बढै सY तेज नित Tको अचल लिलार।
भारत के Aकत्र सब Vर सदा बल Pन
Bसहु बित्वा ते रहैं तुमरे नितहि अधीन।

उपरोक्त पंक्तियाँ आज से लगभग 129 वर्ष पूर्व ब्रज भाषा में लिखित एक कविता की हैं, जिसके रचयिता थे, हिंदी के युग प्रवर्तक साहित्यकार– भारतेंदु हरिश्चंद्र। भारतेंदु ने 1877 में लिखी अपनी कविता में एस०एम०एस० भाषा का प्रयोग किया था। इन्होंने सिर्फ़ अंग्रेज़ी भाषा का ही नहीं, गणित के अंकों का भी अत्यंत कुशलता से प्रयोग किया था।

साहित्य में 'सोच की नींव' रखने वाले युगचिंतक थे भारतेंदु

नई दिल्ली। साहित्य में सोच की नींव रखने वाले अग्रणी साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र असाधारण प्रतिभा के धनी व दूरदर्शी युगचिंतक थे और उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज में सार्थक हस्तक्षेप किया और इसकी शक्ति का उपयोग करते हुए आम जनमानस में ज़ागृति लाने की कोशिश की तथा दरबारों में कैद विधा को आम लोगों से जोड़ते हुए इसे सामाजिक बदलाव का माध्यम बना दिया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उस दौर में हिंदी साहित्य के आयाम को नई दिशा दी जब अंग्रेजों का शासन था और अपनी बात कह पाना कठिन था। उन्होंने एक ओर खड़ी बोली के विकास में मदद की वहीं अपनी भावना व्यक्त करने के लिए नाटकों और व्यंग्यों को बेहतरीन इस्तेमाल किया। इस क्रम में भारत दुर्दशा या अंधेर नगरी जैसी उनकी कृतियों को देखा जा सकता है। अंधेर नगरी विशेष रूप से चर्चित हुई।

भारतेंदु के दौर में अपनी बात कहना बेहद कठिन था। विदेशी शासन के प्रति अपने प्रतिरोध को जताने के लिए उन्होंने साहित्य

का सहारा लिया और 34 साल के अपने जीवनकाल में ही उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध कर दिया। भारतेंदु ने साहित्य में सोच की नींव रखी और उस दौर की राजनीति में भी प्रतिरोध को दिशा दी। उनके लेखन से बाद की पीढ़ी को बल मिला। खड़ी बोली के विकास में भारतेंदु की भूमिका उल्लेखनीय थी और वह सही मायनों में खड़ी बोली के सबसे बड़े निर्माता थे। उनकी रचनाओं में बनावटी संस्थागत कार्य के बदले प्रतिरोध का स्वर उभर कर सामने आता है। उनकी कृतियों में उस दौर की स्थिति, समस्याएं उभर कर सामने आती हैं और वह परोक्ष रूप से उसके प्रति लोगों को आगाह करते दिखते हैं।

भारतेंदु के लेखन में परोक्ष रूप से आजादी का स्वप्न और भविष्य के भारत की रूपरेखा की झलक मिलती है। वह धार्मिक एकता व प्रांतीय एकता के भी पक्षधर थे। धार्मिक एकता की जरूरत का जिक्र करते हुए भारतेंदु ने अपने एक भाषण में कहा था कि घर में जब आग लग जाए तो देवरानी और जेठानी को आपसी डाह छोड़कर एक साथ मिलकर घर की आग बुझाने का प्रयास करना चाहिए।

उनकी नजर में अंग्रेजी राज घर की आग के समान था और देवरानी जेठानी का संबंध जिस प्रकार पारिवारिक एकता के लिए अहम है, उसी प्रकार हिंदू मुस्लिम एकता की भावना राष्ट्रीय आवश्यकता है। असाधारण प्रतिभा के धनी भारतेंदु युगचिंतक, दूरदर्शी व विभिन्न विधाओं के प्रणेता साहित्यकार थे।

1 देश हमारा न्यारा

चिंतन-मनन

भारत की महानता अनोखी है। यहाँ विविधता में एकता को देख सकते हैं। हमारी भाषा, परिवेश तथा कर्म अलग-अलग हैं, फिर भी हम भारतवासी एक हैं। देश हमारा न्यारा है।

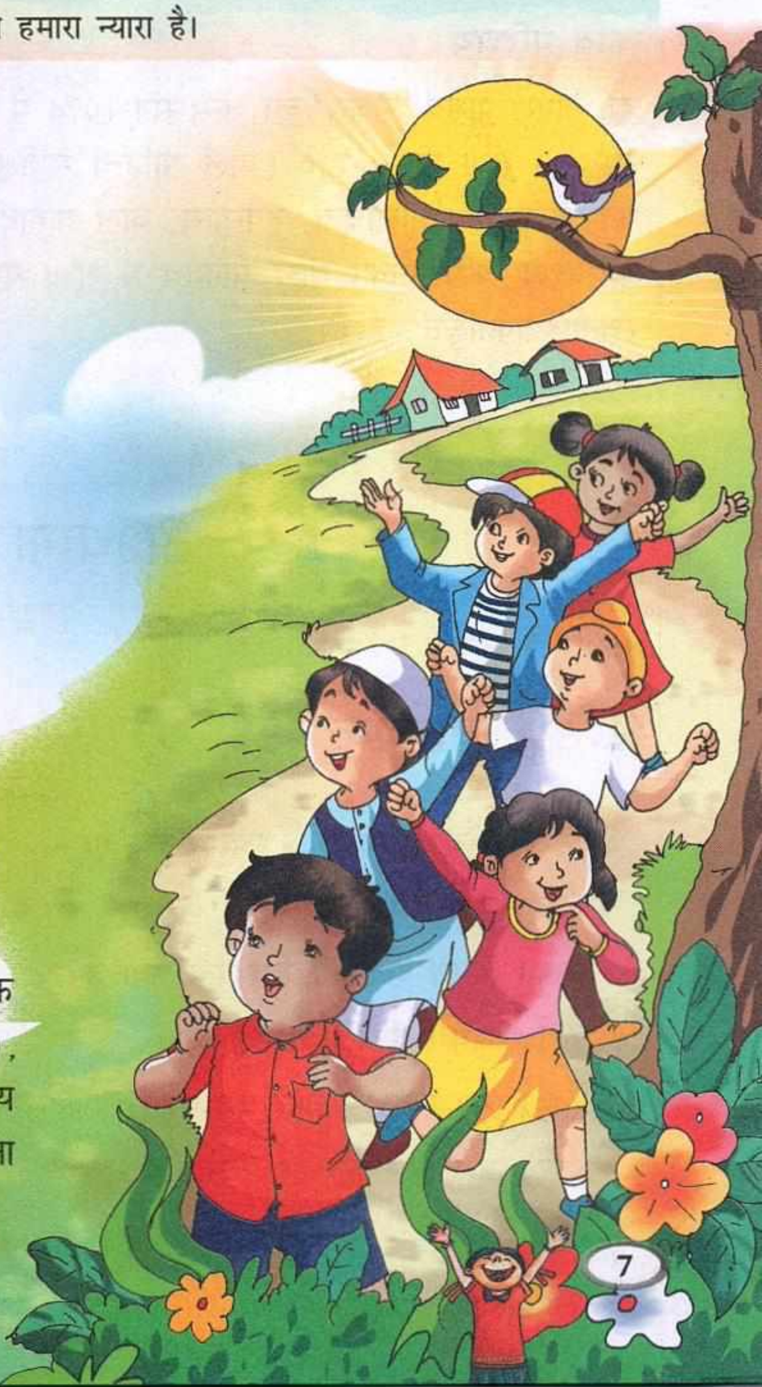

कितना प्यारा
देश हमारा,
देश हमारा
कितना प्यारा।

भले अलग भाषाएँ इसकी,
भले अलग परिवेश।
किंतु एकता में है अपना,
भारत देश विशेष।
मेलजोल की पावन धारा।

जाति धर्म से ऊपर उठकर,
सदा कर्म अपनाते।
सारे जग को अपना कहते,
सबके मन को भाते।
जग जाहिर है भाई चारा।

शब्दार्थ–**प्यारा**–प्रिय (dear), **अलग**–भिन्न, पृथक (different), **परिवेश**–परिधि (surroundings), **मेलजोल**–मिलकर रहना (together), **पावन**–पुण्य (sacred), **कर्म**–काम (duty), **जाहिर**–बतलाना (to announce)

पूरी हों सबकी आशाएँ,
आओ शपथ उठाएँ।
जन गण मन का गीत प्यार से,
हम सब मिलकर गाएँ।
मिलकर खूब लगाएँ नारा।
देश हमारा
कितना न्यारा।

–डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

शब्दार्थ–शपथ–प्रतिज्ञा (to pledge)

कवि परिचय

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' का जन्म सन् 1974 में खुटार शाहजहाँपुर में हुआ। इन्होंने एम०ए० (हिंदी संस्कृत) तथा पीएच०डी० (बाल साहित्य समीक्षा सिद्धांत) की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने अनेक कविता संग्रह, आलोचना, उपन्यास, बाल कहानी संग्रह, बाल एकांकी, शिशुगीत, बाल-पहेलियों की रचना की। इनकी बाल साहित्य में सभी प्रमुख विधाओं की लगभग एक हज़ार से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

अभ्यास के लिए

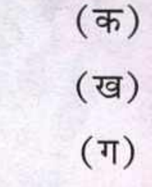

मौखिक

- कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–
  - (क) हमारा देश कैसा है?
  - (ख) भारत देश की विशेषता क्या है?
  - (ग) जग जाहिर क्या है?
  - (घ) हम सब मिलकर क्या गाएँ?
  - (ङ) हम किसका नारा लगाएँ?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'देश हमारा न्यारा' कविता के कवि का नाम .... है।

(ख) भले अलग भाषाएँ इसकी, भले अलग ....।

(ग) .... की .... धारा।

(घ) .... का गीत प्यार से।

(ङ) आओ .... उठाएँ।

2. संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) किंतु एकता में है अपना,
भारत देश विशेष।

....

....

(ख) सारे जग को अपना कहते,
सबके मन को भाते।
जग जाहिर है भाई चारा।

....

....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बच्चों को किस बात की शपथ लेने के लिए कहा गया है?

(ख) भारत देश की विविधता को स्पष्ट कीजिए।

(ग) भारत देश भाई चारे के लिए प्रसिद्ध है, कैसे? (**मूल्यपरक प्रश्न**)

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) भारत देश की महानता का विवरण लिखिए।

(ख) भारत देश विविधता में एकता लिए है, कैसे?

भाषा ज्ञान

1. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) भारत की नदियाँ <u>अपवित्र</u> हो गई हैं। ....

(ख) <u>अनेकता</u> में विविधता है। ....

(ग) भारत के लोग <u>दुखी</u> हैं। ....

(घ) भारत में <u>असमानता</u> है। ....

(ङ) भारत में <u>गरीब</u> लोग भी रहते हैं। ....

(च) लोगों में <u>आशा</u> है। ....

2. निम्नलिखित गद्यांश-पद्यांश में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

(क) गेहूँ की फ़सल पक गई एक दिन किसान खेत पर आया उसने अपने बेटे से कहा किसी से कहकर यह फ़सल कटवा लो सुनकर गौरैया के बच्चे तो डर गए जानते हो क्यों क्योंकि खेत कट गए तो उनका घोंसला उजड़ जाएगा फिर वे कहाँ जाएँगे

(ख) वह कौन सा है तारा
नभ मंडल में घूमता है
वह कौन सा है जीव
आसमान में उड़ता है
खोज उसकी निरंतर व्योम से धरा तक
खोजता रहता मैं निरंतर
इस दिगंत् में

3. तुकांत शब्द लिखिए–

(क) प्यारा – ....हमारा............ (ख) न्यारा – ....

(ग) परिवेश – .... (घ) जन – ....

(ङ) भाते – .... (च) गाएँ – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- कल्पना कीजिए आप भारत के जन-नेता चुने गए हैं। आप भारत में क्या-क्या बदलाव लाना चाहेंगे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

क्रियाकलाप

- इस चित्र को देखकर आपके मन में कौन-से भाव जागृत होते हैं? पक्ष-विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

संकेत बिंदु–समाज, अन्याय, अत्याचार, विरोध, एक अच्छा समाज, सत्य, अहिंसा का मार्ग, भारत–एक सोने की चिड़िया, मेरा भारत महान।

2 काकी

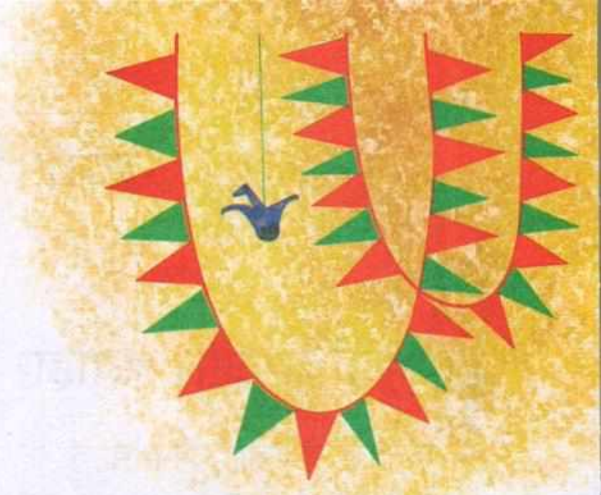

चिंतन-मनन

बच्चे कोमल और भावुक होते हैं। उनके मन को समझना बहुत कठिन होता है। अपनी प्यारी काकी के लिए श्यामू कुछ भी करने के लिए तैयार है। इस कहानी में बाल मन को समझने, समझाने का प्रयास किया गया है। यह बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है।

उस दिन श्यामू की नींद देरी से खुली तब उसने देखा—घरभर में कोहराम मचा हुआ है। उसकी प्यारी काकी—उमा, कंबल पर सोई थी। उसका शरीर कपड़े से ढँका हुआ था और घर के सब लोग उसे घेरकर करुण स्वर में विलाप कर रहे थे।

अंतिम संस्कार के लिए जब उमा के शरीर को ले जाया गया तब श्यामू बिलख-बिलखकर रो उठा, वहाँ पर खड़े लोगों का दिल पसीज उठा। होनी को कोई रोक नहीं सकता था।

काकी के बारे में वह जब भी पूछता तो उसे विश्वास दिलाया जाता कि काकी उसके मामा के यहाँ गई है परंतु सत्य ज़्यादा दिनों तक छिपा न रह सका, उसके अबोध मित्रों के मुँह से बात प्रकट हो ही गई। उसे इस बात का पता चल गया कि काकी ऊपर भगवान राम के यहाँ गई है। वह काकी के लिए लगातार रोता रहता। समय ने उसका रोना तो कम करवा दिया परंतु उसके अंदर का दुख कम न हुआ। वह प्राय: अकेला बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

शब्दार्थ—कोहराम—रोने-पीटने का शोर होना (mourn), **विलाप करना**—रोना, दुख प्रकट करना (weeping), **पसीजना**—दुखी होना (feeling bad), **अबोध**—नादान (immature)

श्यामू को पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। एक दिन उसने छत पर एक पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय खिल उठा। अपने काका विश्वेश्वर के पास जाकर उसने उनसे पतंग की माँग की। पत्नी की मृत्यु के बाद विश्वेश्वर बहुत उदास हो गए थे। पतंग मँगवाकर देने का वादा कर वे उदास भाव से बाहर चले गए।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उतावला हो रहा था। वह अपनी इच्छा को रोक न सका। खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा हुआ था। इधर-उधर देखकर उसने उसके पास एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेब टटोली। उसमें से एक चवन्नी निकालकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया।

श्यामू के घर में सुखिया नामक दासी थी और उसका एक लड़का था भोला, जो श्यामू का समवयस्क था। श्यामू ने भोला को चवन्नी देकर कहा, "अपनी जीजी से चुपचाप एक डोर और पतंग मँगा दो। देखो, किसी को इसकी खबर न हो; कोई जान न पावे।"

पतंग आई। श्यामू खुश था उसने भोला से कहा, "भोला, किसी से न कहे तो एक बात कहूँगा?" देखो, इस बात की खबर किसी को न लगे।

भोला ने भोलेपन से कहा, "नहीं, मैं किसी से नहीं कहूँगा।"

श्यामू ने रहस्य खोला, कहा–"मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा।" भोला के चेहरे पर प्रश्नचिह्न था, उसे ताड़कर श्यामू ने कहा, "इसे पकड़कर काकी नीचे उतरेंगी।" और हाँ, "मैं लिखना नहीं जानता, नहीं तो इस पर नाम लिख देता।"

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा– "बात तो बड़ी अच्छी है लेकिन एक कठिनाई है– यह डोर पतली है। इसे पकड़कर काकी तो उतर नहीं सकतीं। पतंग में मोटी रस्सी हो, तो सब ठीक हो जाए।"

शब्दार्थ–चवन्नी–चार आने (quarter of a rupee)

श्यामू गंभीर हो गया। अब कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए? पास में तो पैसे नहीं थे और घर के जो आदमी उसकी काकी को जला आए थे, श्यामू को वे सभी लोग निर्दयी लगे। उनसे पैसों की उम्मीद करना असंभव था। उस रात श्यामू सो नहीं पाया।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन उसने विश्वेश्वर के कोट से रुपया निकाला और ले जाकर भोला को दे दिया। उसने भोला से कहा, "देख भोला, इसकी किसी को खबर न होने पावे; दो अच्छी रस्सियाँ मँगवा लेना, तब तक जवाहर भैया से कागज़ पर 'काकी' लिखवाकर रखूँगा। नाम की चिट रहेगी तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी।"

पतंग तैयार हो गई थी। इतने में विश्वेश्वर उस कोठरी में पहुँचे। भोला और श्यामू को धमकाकर बोले, "तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?" श्यामू कुछ न बोला।

भोला सकपकाकर बोला, "श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।"

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, "चोरी सीखकर जेल जाएगा। आज मैं तुम्हें अच्छी तरह समझाता हूँ।" कहकर दो-चार थप्पड़ और जड़कर पतंग फाड़ डाली! अब रस्सियों की ओर देखकर पूछा, "यह किसने मँगाई?"

तब भोला ने कहा, "श्यामू ने मँगाई थी। कहता था–इससे पतंग तानकर, काकी जो राम के यहाँ गई है, उसे नीचे उतारेंगे।"

विश्वेश्वर हतप्रभ हो गए, उनकी आँखों से आँसू उमड़ पड़े।

उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उसपर एक कागज़ चिपका था जिसपर लिखा था–'काकी'।

–सियाराम शरण गुप्त

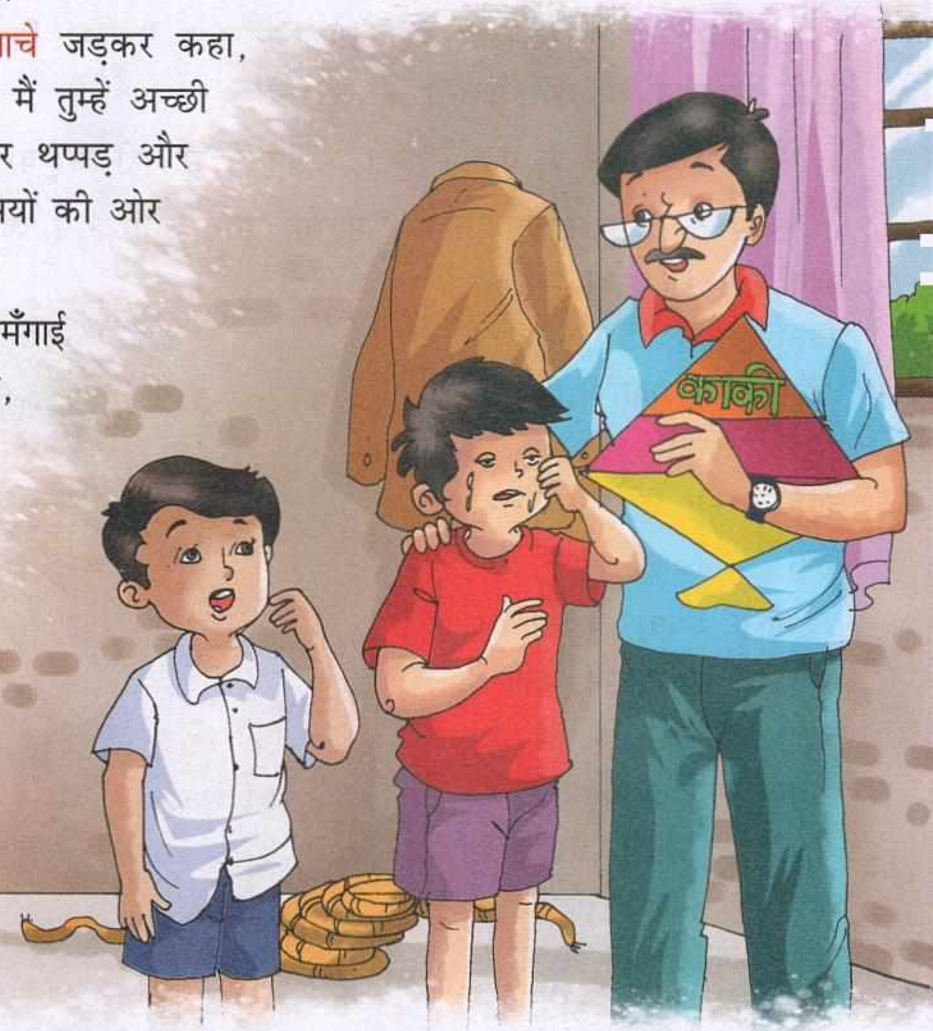

शब्दार्थ–तरकीब–उपाय (idea), **तमाचा**–थप्पड़ (slap), **हतप्रभ**–अवाक (stun)

लेखक परिचय

सियाराम शरण गुप्त का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव नामक गाँव में सन् 1895 में हुआ। हिंदी के प्रसिद्‌ध कवि मैथिलीशरण गुप्त इनके बड़े भाई थे। सियाराम शरण गुप्त की प्राथमिक शिक्षा घर पर हुई। हिंदी के साथ वे संस्कृत, अंग्रेज़ी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं के भी ज्ञाता थे। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– *पाथेय, बापू* (काव्य), *नारी* (उपन्यास), *मानुषी* (कहानी संग्रह) आदि।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) श्यामू को किस बात का शौक था?

(ख) श्यामू ने अपने काका से क्या माँगा?

(ग) श्यामू पतंग कहाँ भेजना चाहता था?

(घ) पतंग के ऊपर क्या लिखा था?

(ङ) विश्वेश्वर की आँखों से आँसू क्यों निकले?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'काकी' पाठ के लेखक का नाम .... है।

(ख) श्यामू के मित्र का नाम .... था।

(ग) 'काकी' एक .... कहानी है।

(घ) पतंग पर .... लिखा था।

(ङ) श्यामू ने विश्वेश्वर के कोट से .... चुराए।

2. किसने, किससे कहा?

(क) "भोला, किसी से न कहे तो एक बात कहूँगा?" ....

(ख) "बात तो बड़ी अच्छी है लेकिन एक कठिनाई है।" ....

(ग) "तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?" ....

(घ) "यह किसने मँगाई?" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'काकी भगवान राम के पास गई है' क्या यह बात श्यामू की समझ में आई थी? नहीं, तो क्यों?

(ख) श्यामू काकी को किस तरीके से नीचे लाना चाहता था? उसने उसके लिए क्या उपाय सोचा?

(ग) विश्वेश्वर क्यों हतप्रभ हो गए? इसके अलग-अलग कारण सोचकर लिखिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) "बच्चे मन से सच्चे तथा भोले होते हैं।" इस विषय पर एक कहानी लिखिए।

(मूल्यपरक प्रश्न)

(ख) "वह काकी के लिए लगातार रोता रहता। समय ने उसका रोना तो कम करवा दिया परंतु उसके अंदर का दुख कम नहीं हुआ।" पाठ में दी गई इन पंक्तियों के अनुसार श्यामू की मन:स्थिति कैसी थी? उसके दुख का कारण क्या था? वर्ग में चर्चा करके लिखिए।

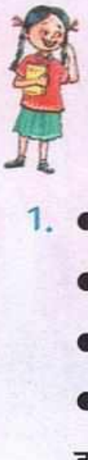

भाषा ज्ञान

1. ● दिल पसीजना
- आकाश की ओर ताकना
- हृदय खिल उठना
- आँखों से आँसू उमड़ना

इन वाक्यांशों का प्रयोग पाठ में किया गया है। जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करें, उन्हें मुहावरे कहते हैं।

उपर्युक्त मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) आँखें दिखाना ....बच्चे जब गलती करते हैं तो बडे आँख दिखाते हैं।............

(ख) कान भरना ....

(ग) फूला न समाना ....

(घ) घी के दीये जलाना ....

(ङ) दाल न गलना ....

3. मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर–

मुहावरों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं हो सकता, जबकि लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसलिए इसका स्वतंत्र प्रयोग किया जाता है। मुहावरा वाक्य का अंश बन जाता है परंतु लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य के अंत में स्वतंत्र रूप से होता है; जैसे–

- दूध का दूध पानी का पानी – न्याय करना।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस – ताकतवर की चलना।

नीचे दिए गए वाक्यों के लिए उपयुक्त लोकोक्तियाँ लिखिए–

(क) अयोग्य व्यक्ति अपनी अधिक प्रशंसा करता है। ....

(ख) बुरी आदतों का परिणाम बुरा होता है। ....

(ग) जैसा कार्य होता है वैसा परिणाम होता है। ....

(घ) काम न आने पर बहाने बनाना। ....

(ङ) दूर से सभी वस्तुएँ सुंदर दिखती हैं। ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर श्यामू आपका सहपाठी होता तो आप उसके साथ किस तरह का व्यवहार करते और उसे किस प्रकार सच्चाई बताते?

क्रियाकलाप

- काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए तथा 'स्वच्छ भारत' की कल्पना का चित्र चिपकाइए।

बच्चों सुनना बड़े गौर से
होगी बड़ी भलाई
रखना अपने आसपास तुम
हरदम साफ़-सफ़ाई...

रहे गंदगी पास अगर तो
होती है बीमारी
गाँव गली और नगर की
बिगड़े सेहत सारी
फिर इलाज में अपनी ही तो
जाती आना-पाई...

सब बच्चे अपनाएँ आदत
हाथ सदा धोने की
फिर कैसे होगी गुंजाइश
बीमारी होने की
स्वच्छ रहे तो स्वस्थ रहेंगे
ये ही है सच्चाई...

स्वच्छ देश अभियान में
बच्चों हम सब हाथ बढ़ाएँ,
अपने-अपने नगर-गाँव को
मिलकर के चमकाएँ।

गंदगी प्रदूषण से बचकर
भारत का नवनिर्माण करेंगे।

—डॉ० अजय जनमेजय

(क) कवि आसपास क्या रखने के लिए कह रहे हैं?
(ख) गंदगी के आसपास रहने से क्या होता है?
(ग) बच्चे कौन-सी आदतें अपनाएँ?
(घ) स्वच्छ रहने से क्या होगा?
(ङ) प्रदूषण से बचकर क्या करेंगे?
(च) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

3 पेड़ लगाएँ

चिंतन-मनन

भविष्य में जल संकट एक भीषण समस्या बन सकती है। पेड़ लगाना इस दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा। इसलिए हमें इस ओर विशेष ध्यान देना होगा।

गरमी का मौसम आ गया था। नंदन वन के सभी जानवरों का हाल बुरा हो रहा था। पीने को भी पानी जुटाना मुश्किल हो रहा था।

तभी एक दिन राजा शेर ने सभा बुलाई। 'गरमी के मौसम में इस पानी की समस्या का निदान पाने का कोई उपाय बताओ।' राजा ने चिंतित स्वर में कहा।

"मेरा तो सुझाव है कि हम किसी और जंगल में चले जाएँ।" चीकू बंदर ने बिना सोचे-समझे ही जवाब दिया।

"जंगल छोड़ना कोई उपाय नहीं है।" राजा ने चीकू को समझाते हुए कहा।

सभी जानवर सोच में पड़ गए कि क्या किया जाए?

"क्यों न वीरू हाथी दूसरे जंगल से अपनी सूँड़ मे पानी भरकर अपने जंगल के तालाब को भर दे।" सुंदर खरगोश ने भी अपना सुझाव राजा के सामने रख दिया।

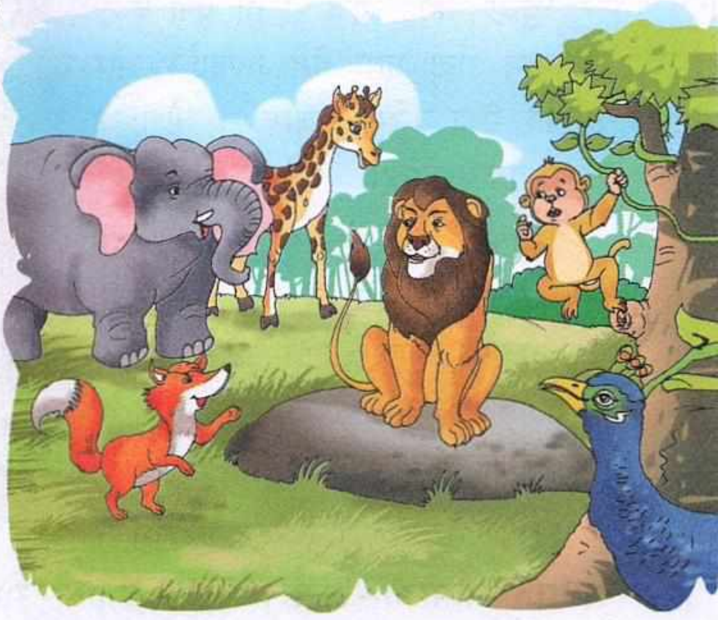

"ये भी संभव नहीं। वीरू अपनी सूँड़ में कितना पानी ला पाएगा, वह थक जाएगा।" भीखू सियार ने बुद्धि का परिचय देते हुए कहा।

"पिछले वर्ष भी बारिश नहीं हुई। मैं तो नाच भी नहीं सका था।" उदास होकर जीतू मोर ने भी अपनी बात रखी।

शब्दार्थ–जुटाना–इकट्ठा करना (to collect), **सूँड़**–हाथी की सूँड़ (trunk)

झुमरू जिराफ़ ने भी राजा के सामने अपनी बात रखते हुए कहा, "मुझे तो हरे पत्ते भी खाने को नहीं मिल पा रहे हैं।"

सभी जानवर अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार पानी की समस्या से निपटने के उपाय दे रहे थे तो कुछ अपनी समस्या बता रहे थे।

तभी वीरू ने सबको शांत करते हुए कहा, "पहले हम इस बात पर विचार करें कि हमारे जंगल में पानी की समस्या आई कैसे? पहले तो हमें कभी पानी की समस्या नहीं हुई।"

"सही कहा वीरू हाथी।" राजा ने वीरू की बात पर अपना समर्थन जताते हुए कहा।

"तुम ही बताओ वीरू, ऐसा क्यों हो रहा है?" चीकू ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"हमारे जंगल में पेड़ों की कमी होती जा रही है।" वीरू ने बताया।

चीकू बंदर ने फिर उछलते हुए पूछा, "तो उससे क्या वीरू।"

"विज्ञान कहता है कि हम जितने अधिक पेड़ लगाएँगे, उतनी ही अधिक बारिश होगी।" वीरू ने चीकू के साथ सभी जानवरों को ये बात समझाई।

"पिछले कई वर्षों से हमने पेड़ लगाने ही बंद कर दिए हैं।" वीरू ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए फिर कहा।

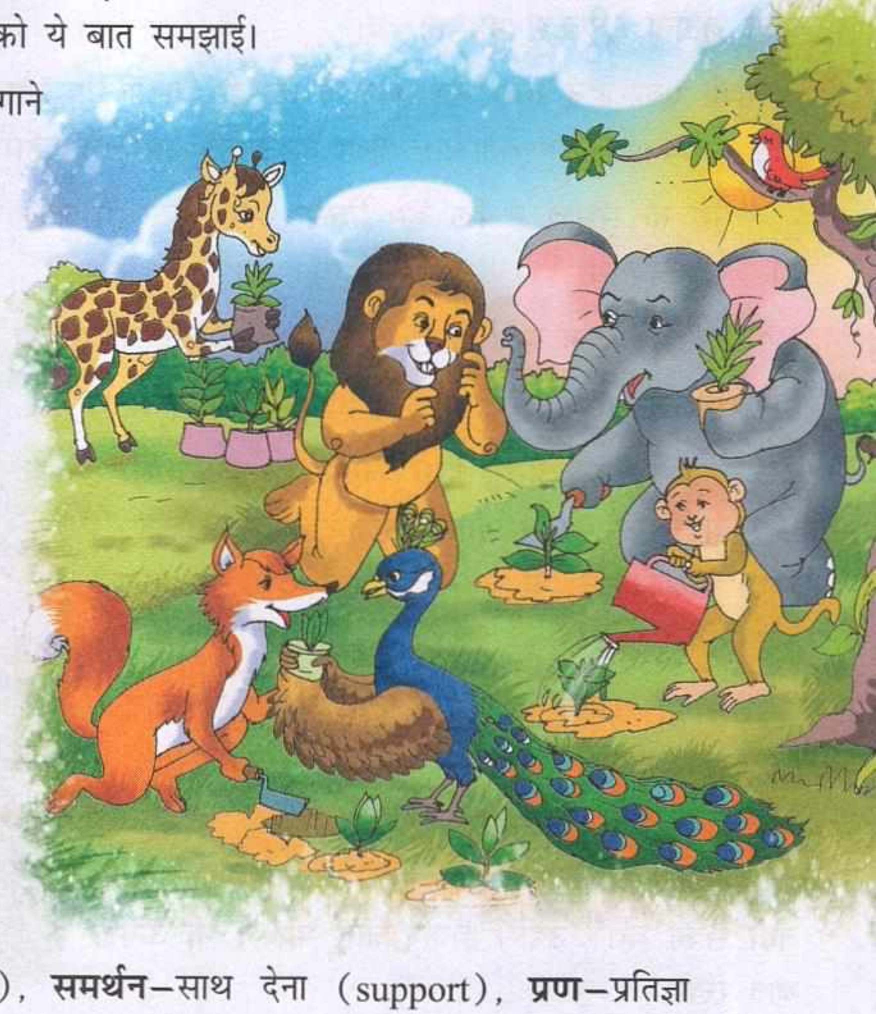

"तो अब हम क्या करें?" सुंदर ने रोनी सूरत बनाते हुए पूछा।

"कुछ नहीं, आज से ही प्रण करो कि हम रोज़ एक पेड़ लगाएँगे और उसकी सेवा करेंगे।" वीरू ने जोश के साथ जवाब दिया।

"ठीक है तो यह तय रहा कि हम सब आज प्रण लेते हैं कि रोज़ एक पेड़ अवश्य लगाएँगे और उन पेड़ों को किसी को काटने भी नहीं देंगे।" राजा ने आदेशात्मक ऐलान किया।

शब्दार्थ–**समस्या**–उलझन (problem), **समर्थन**–साथ देना (support), **प्रण**–प्रतिज्ञा (take oath), **आदेशात्मक**–हुक्म देना (order), **ऐलान**–जाहिर करना (to announce).

ये वर्ष तो जैसे-तैसे सभी जानवरों ने पानी की समस्या से जूझते हुए निकाल दिया, किंतु अगले वर्ष पानी की समस्या से बचने के लिए सभी जानवरों ने रोज़ एक पेड़ लगाया। परिणाम स्वरूप अगले वर्ष अच्छी बारिश हुई। सभी जानवर बहुत खुश हुए।

"वीरू तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारे कारण ही इस वर्ष गरमी में हमें पानी की समस्या से नहीं जूझना पड़ा।" राजा ने वीरू का आभार व्यक्त करते हुए कहा और सभी जानवरों ने खुश होकर तालियाँ बजाईं।

–कीर्ति श्रीवास्तव

लेखिका परिचय

कीर्ति श्रीवास्तव का जन्म 6 जुलाई 1974 में हुआ। इनकी शिक्षा वाणिज्य शाखा में हुई। शुरुआत से ही इनका झुकाव बाल कहानियों, कविताओं तथा लघुकथाओं की ओर रहा। इनकी कई रचनाएँ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं।

मेहनत का फल, होता मीठा (कविता संग्रह), लालच नहीं करूँगा (कहानी संग्रह) इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने बच्चों के प्रोत्साहन हेतु कई कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) किस वन के जानवरों का हाल बुरा था?

(ख) चीकू बंदर ने क्या जवाब दिया?

(ग) वीरू ने पानी की कमी का क्या कारण बताया?

(घ) विज्ञान के अनुसार बारिश किसके कारण होती है?

(ङ) राजा ने क्या ऐलान किया?

लिखित

1. किसने, किससे कहा?

(क) "ये भी संभव नहीं। वीरू अपनी सूँड़ में कितना पानी ला पाएगा, वह थक जाएगा।" ....

(ख) "विज्ञान कहता है कि हम जितने अधिक पेड़ लगाएँगे, उतनी ही अधिक बारिश होगी।" ....

(ग) "तो अब हम क्या करें?" ....

(घ) "पिछले वर्ष भी बारिश नहीं हुई। मैं तो नाच भी नहीं सका था।" ....

(ङ) "जंगल छोड़ना कोई उपाय नहीं है।" ....

2. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "जंगल छोड़ना कोई उपाय नहीं है।" राजा ने चीकू को समझाते हुए कहा।

(ख) "तुम ही बताओ वीरू, ऐसा क्यों हो रहा है?"

(ग) "विज्ञान कहता है कि हम जितने अधिक पेड़ लगाएँगे, उतनी अधिक बारिश होगी।"

(घ) "वीरू तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद।"

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जंगल के जानवरों की समस्या क्या थी?

(ख) सभी जानवरों ने कौन-कौन से दुख व्यक्त किए?

(ग) जंगल में पानी की समस्या क्यों उत्पन्न हुई थी?

(घ) सबने क्या प्रण लिया?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'पर्यावरण' की समस्या आज विश्व की समस्या बन गई है। इस समस्या के कारण तथा निवारण पर अपने विचार लिखिए।

(ख) पेड़ लगाने के क्या-क्या लाभ हैं?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कर लिखिए–

(क) बंदर – .... (ख) हाथी – ....

(ग) मोर – .... (घ) सियार – ....

(ङ) गाय – .... (च) शेर – ....

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) गरमी – ....सरदी.... (ख) संभव – ....

(ग) सुंदर – .... (घ) शांत – ....

(ङ) अधिक – .... (च) जवाब – ....

3. किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। संख्याएँ भी संज्ञा होती हैं, पर कभी-कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं; जैसे–

- कई वर्षों से हमने पेड़ लगाने ही बंद कर दिए हैं।
- एक पेड़ रोज़ लगाएँगे।
- दो साल तक सभी जानवरों ने रोज़ एक पेड़ लगाया।

उपरोक्त वाक्यों में रंगीन पद विशेषण हैं। ये क्रमशः 'वर्षों', 'पेड़', 'साल' आदि की विशेषता बता रहे हैं। ये संख्यावाची विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग उन वस्तुओं के लिए होता है, जिन्हें गिना जा सकता है; जैसे– पाँच हाथी, चार तालाब, तीन फूल, सात संतरे आदि। जिन वस्तुओं को गिना नहीं जा सकता, अपितु मापा-तोला जाता है, वहाँ परिणामवाचक विशेषण होता है; जैसे–एक किलो आम, चार मीटर कपड़ा, दो किलो चीनी, आधा लीटर तेल आदि।

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित संख्यावाचक तथा परिमाणवाचक विशेषणों से कीजिए–

(क) हाथी ने रोज़ .... पेड़ लगाने को कहा।

(ख) हाथी ने .... आलू खा लिए।

(ग) मैं बाज़ार से .... तेल लाया।

(घ) जंगल में .... जानवर हैं।

(ङ) मेरी कमीज़ में .... कपड़ा लगता है।

4. अपनी बात कहते समय हम अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हैं। इससे बात प्रभावशाली बन जाती है। ऐसे प्रयोग को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं–

निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए बॉक्स में से सही एक शब्द चुनकर लिखिए–

मितभाषी   सर्वज्ञ   शाकाहारी   सुनार   अनाथ

(क) सब कुछ जानने वाला ....

(ख) मांस न खाने वाला ....

(ग) सोने के आभूषण बनाने वाला ....

(घ) जिसका कोई न हो ....

(ङ) कम बोलने वाला ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर आपकी मुलाकात पर्यावरणविद मेघा पाटकर से हो तो आप उनके साथ पर्यावरण की रक्षा को लेकर किस प्रकार वार्तालाप करेंगे? लिखिए।

क्रियाकलाप

1. 'जल प्रदूषण' से होने वाली हानियों की जानकारी देकर उसका चित्र सहित वर्णन कीजिए।
2. पानी की कमी को दूर करने की विधियों पर एक चार्ट बनाइए और कक्षा में लगाइए।

अतिरिक्त पठन

'आभी' के इलाके में पिकनिक

इस बार स्कूल पिकनिक के लिए स्थान चुना गया था कुल्लू की '**सरयोलसर**' झील।

पिकनिक स्थल की जानकारी देने के लिए प्रार्थना सभा में प्राचार्य महोदय सब बच्चों को संबोधित करते हुए बोले, "प्यारे बच्चो, इस बार की पिकनिक के लिए हमने कुल्लू जिले की सरयोलसर झील को चुना है। आज जब पूरा भारत स्वच्छता की बात कर रहा है तो इस मौके पर इससे बेहतर जगह कोई और हो ही नहीं सकती। वह इसलिए क्योंकि वहाँ आपको '**आभी**' मिलेगी।"

"वह कौन है सर?" पंक्ति में सबसे आगे बैठी एक लड़की ने पूछा।

"आभी अर्थात् एक छोटी चिड़िया, जो हिमाचल के कुल्लू जिले की समुद्रतल से 10800 फुट की ऊँचाई पर स्थित एकांत और सुदूर सरयोलसर झील के पास रहती है। यह झील चंडीगढ़-मनाली राष्ट्रीय उच्च मार्ग-21 से औट नाम स्थान से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर जलोड़ीपास के नजदीक स्थित है। आभी चिड़िया इस झील को हर तरह की गंदगी से बचाती है। वह इस झील को बारह महीने बिलकुल साफ़ रखती है। इस चिड़िया के बारे में एक बात मैं आपको और बता दूँ, वह यह कि यह चिड़िया किस्मत वालों को ही दिखाई देती है। यह सबको नज़र नहीं आती। लेकिन अभी मई 2016 में कुल्लू के एक पत्रकार हरिकृष्ण शर्मा ने इस चिड़िया को खोज निकाला है। यहाँ के लगभग 70-80 वर्ष के स्थानीय बुजुर्गों का कहना है कि उन्होंने पहले आभी को कई बार देखा है। यह चिड़िया बहुत ही खूबसूरत और सबसे अलग है। हवा में ज़्यादा ऊपर नहीं उड़ती और जब उड़ती है तो ऐसा लगता है जैसे मदमस्त होकर हवा में नाच रही हो। आभी एक छोटी चिड़िया है, जो एकांत जगह पर रहना पसंद करती है। वह बस ईमानदारी से सदियों से इस झील को साफ़ करने का अपना काम चुपचाप किए जा रही है। लेकिन अब वह इस पर्यावरण प्रदूषण और काफ़ी शोर-शराबे के कारण कम ही दिखाई पड़ती है। यह शायद अपना काम करने अब रात को आती होगी। जब एक चिड़िया अपने आस-पास के वातावरण को साफ़ रखने में इतना सहयोग कर रही है तो फिर हम तो इनसान है। एक बुद्धिजीवी वर्ग और बहुत सारी सुविधाओं के मालिक। हम चाहें तो अपने पर्यावरण के लिए क्या नहीं कर सकते। हमें इस हुनर को आभी से सीखना होगा।"

प्राचार्य ने बच्चों को बताया कि सरयोलसर पहुँचते ही जहाँ आप कुल्लू के प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठाएँगे, वहीं आप कल-कल बहती व्यास तथा तीर्थन नदी और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों को भी निहार पाएँगे। आप झील के साथ बने नागणी माता के मंदिर के दर्शन भी कर पाएँगें। मैं आपको एक बात और बता दूँ, बूढ़ी नागिन माता की पूजा यहाँ के स्थानीय लोग देशी घी चढ़ाकर करते हैं। इसी देशी घी की धार को झील के चारों ओर गिराकर झील की परिक्रमा भी करते हैं और अपने परिवार तथा अपने पशुओं के स्वास्थ्य की बेहतरी की कामना करते हैं। पिकनिक मनाने के लिए सरयोलसर से बेहतर और क्या जगह हो सकती है भला। तो फिर बच्चो, क्या कहते हैं आप। चलें सरयोलसर?

"बिलकुल सर।" सभी बच्चे खुशी के मारे ज़ोर-ज़ोर से चीख पड़े। खुश क्यों न हों वे। यह सब बातें सुनकर वे सभी आभी के इलाके से रूबरू होना चाहते थे। आभी की मौजूदगी का अहसास करना चाहते थे। यदि किसी को आभी दिख गई, तो सच में यह उसके लिए इस पिकनिक का नायाब तोहफ़ा होगा।

सभी बच्चे अपने अध्यापकों संग एक साथ स्कूल की बसों में सुबह 6 बजे सरयोलसर की ओर चंडीगढ़-मनाली राष्ट्रीय उच्च मार्ग-21 पर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने जिला मंडी मुख्यालय से 4 कि०मी० की दूरी पर कुछ देर रुककर **'हिमाचल दर्शन फ़ोटो गैलरी'** के दर्शन किए। यह फ़ोटो गैलरी भारत की एकमात्र ऐसी गैलरी है, जहाँ पूरे प्रदेश को एक साथ एक नज़र में बड़े-बड़े छायाचित्रों के जरिए देखा जा सकता है। बच्चों ने यहाँ सरयोलसर झील के भी दर्शन किए। सभी बच्चे अब सरयोलसर को देखने के लिए और ज़्यादा उत्साहित हो गए थे। थोड़े से आगे के सफ़र पर बच्चों ने व्यास नदी पर बने **पण्डोह बाँध** के दर्शन किए। बच्चों ने जाना कि इस बाँध के जरिए बी०एस०एल० परियोजना द्वारा सलापड़ नामक जगह पर 990 मेगावाट बिजली तैयार की जाती है। आगे के सफ़र में थलौट नामक जगह से सभी 3 कि०मी० लंबी सुरंग में दाखिल हुए, जिसके जरिए वे औट तक पहुँचे। इतनी लंबी सुरंग से होकर जाना बच्चों में रोमांच का जो अहसास जगा गया, वह बहुत ही शानदार था।

औट नामक स्थान पर कुछ देर रुककर सुबह का नाश्ता किया। उसके बाद सभी राष्ट्रीय उच्च मार्ग-21 को पीछे छोड़ते हुए जलोड़ी पास के रास्ते मुड़ चुके थे। यहाँ से जलोड़ी पास का रास्ता लगभग 45 कि०मी० था। इस सफ़र के दौरान जब बच्चों ने एक और 216 मेगावाट की क्षमता वाले लारजी बाँध को देखा तो उनके मन में कई प्रश्न उमड़ने-घुमड़ने लगे। उन्होंने अध्यापकों से पूछा, "सर हमें अपने पर्यावरण की रक्षा की शपथ हर बार दिलाई जाती है, लेकिन इस सुंदर घाटी में तो पहाड़ों को काट-काटकर सुरंगे और बाँध तैयार किए जा रहते हैं। यह तो पर्यावरण के साथ खिलवाड़ हो रहा है। इससे पर्यावरण कहाँ तक बचा रह पाएगा?"

"सही कह रहे हो बच्चो तुम। यह विकास के नाम पर पर्यावरण के साथ खिलवाड़ ही तो है, परंतु यदि हम इसका दूसरा पक्ष देखें तो यह देशहित के लिए ज़रूरी भी हैं। लेकिन इस बात का अवश्य ही ध्यान रखा जाना चाहिए कि पर्यावरण को कम-से-कम नुकसान हो।" बच्चों के साथ जा रहे अध्यापकों ने अपनी बात रखी।

बच्चे अध्यापकों की बात से सहमत थे।

बच्चे और अध्यापक कुल्लू की इस अनछुई घाटी की खूबसूरती के दर्शन करते हुए आगे बढ़े चले जा रहे थे। बंजार नामक स्थान पर पहुँचकर सबने यहाँ के प्रसिद्ध व प्राचीन देव श्रृंगाऋषि मंदिर के दर्शन किए और अपने सुखद भविष्य का आशीर्वाद माँगा। अब जलोड़ी पास भी आ चुका था। यह इस रास्ते का सबसे ऊँचाई का स्थान था। अब इससे आगे सरयोलसर के लिए लगभग 5 कि०मी० का पैदल रास्ता तय करना था। बच्चे अपनी सारी थकान को भूलकर बस एक बार इस झील के दर्शन कर लेना चाहते थे। देवदार के घने जंगल से होते हुए सभी प्रकृति को करीब से निहार रहे थे। वे सभी हँसते-गाते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे थे। कुछ ही देर में सभी सरयोलसर झील के पास थे। झील को देखकर सभी सच में हैरान थे। पेड़ों से घिरी इस झील में एक तिनका, एक पत्ता तक नहीं था। पानी एकदम साफ़ था। यह बात सच में सबको अचंभित कर रही थी। यहाँ हर वक्त कोई इनसान भी तो नहीं आता है। सभी ने झील के साथ बने बूढ़ी नागिन माता के दर्शन किए और देखा कि माता की पूजा सच में ही घी से की जाती है। मूर्ति के ऊपर चिपका ढेर सारा घी इस बात की गवाही दे रहा था। यहाँ इस गरमी के मौसम में भी खूब सारी ठंडक थी। माता के मंदिर में माथा टेकने के पश्चात सभी अध्यापकों व बच्चों ने झील की परिक्रमा की। झील का पानी इतना साफ़ था कि झील के किनारों के धरातल तक को आसानी से देखा जा सकता था।

आभी चिड़िया अभी तक किसी को नज़र नहीं आई थी। आभी की पुष्टि करने के लिए दो लड़कों ने चुपके से कुछ पत्ते झील में फेंक दिए और चुपचाप झील की ओर नज़रें गड़ाए रहे। पत्तों को झील में गिरे कुछ समय ही बीता था कि उन्हें एक ग्रे (स्लेटी) और पीले रंग की छोटी-सी चिड़िया नज़र आई, जो पलभर में ही एक डुबकी लगाकर झील में गिरे पत्तों को अपनी चोंच में उठाकर झील से बाहर ले गई। वे समझ गए कि यही आभी है। खुशी के मारे दोनों लड़के ज़ोर-ज़ोर से सबको उस चिड़िया की ओर इशारा करते हुए चिल्लाए, "वह देखो आभी। वह हमारे गिराए पत्तों को ले जा रही है। वो देखो, वह जा रही है।" स्कूल के सभी लड़के-लड़कियों ने आभी को देखा। यह दृश्य सच में उन्हें हैरान कर रहा था। सभी सोच रहे थे कि जब एक चिड़िया सफ़ाई के प्रति इतनी सजग हो सकती है, तो हम क्यों नहीं? सभी बच्चे व अध्यापक मन ही मन चिड़िया को सलाम करते हुए अपने आपसे पर्यावरण को साफ़ रखने का वादा कर रहे थे। सच में यह पिकनिक सबके लिए एक अनोखी व यादगार पिकनिक थी।

–पवन चौहान

4 मेरा नया बचपन

चिंतन-मनन

एक बार बीता जीवन वापस लौटकर नहीं आता। बचपन मधुर है और मानव-जीवन में सबसे सुंदर स्वर्णिम काल है– बचपन का। कवयित्री ने इस कविता के माध्यम से बचपन की अबोधता को बताने का प्रयास किया है। कवयित्री अंत में अपने खोए हुए बचपन को अपनी बेटी में पाती है।

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी,
गया ले गया तू जीवन की
सबसे मस्त खुशी मेरी।।

चिंता रहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनंद!

मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई
मुझको उठा लिया,
झाड़-पोंछकर चूम-चूमकर
गीले गालों को सुखा दिया।

शब्दार्थ–**मधुर**–मीठा (melody), **स्वच्छंद**–मुक्त (free)

दादा ने चंदा दिखलाया
नेत्र नीर युत दमक उठे,
धुली हुई मुसकान देखकर
सबके चेहरे चमक उठे।

आ जा बचपन एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शांति,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृत विश्रांति।

मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन वन-सी फूल उठी वह
छोटी-सी कुटिया मेरी।

'माँ ओ!' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने लाई थी।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ– दमक–चमकना (shining), **निर्मल**–शुद्ध (pure), **प्राकृत**–नैसर्गिक (natural), **नंदन वन**–उपवन (park)

कवयित्री परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 में प्रयाग में हुआ। इन्होंने प्रयाग तथा वाराणसी में शिक्षा प्राप्त की। जबलपुर के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से इनका विवाह हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ा। दुर्भाग्यवश एक मोटर दुर्घटना में 1948 में इनकी मृत्यु हो गई। *कोयल* तथा *सभा का खेल* इनकी प्रसिद्ध बाल कृतियाँ हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) बचपन कैसा था?

(ख) दादा ने क्या दिखलाया?

(ग) कवयित्री बचपन से क्या माँगती है?

(घ) माँ की कुटिया कैसे खिल उठी?

(ङ) बच्ची माँ को क्या खिलाने लेकर आई?

लिखित

1. संदर्भ के अनुसार जोड़कर लिखिए–

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म	(*i*) चंदा दिखलाया।
(ख) 'कोयल' तथा 'सभा का खेल'	(*ii*) बेटी में पाया।
(ग) मैं बचपन को बुला रही थी	(*iii*) समय बचपन का ही है।
(घ) मानव जीवन का सबसे सुंदर	(*iv*) 1904 में प्रयाग में हुआ।
(ङ) खोया हुआ बचपन	(*v*) सुभद्रा जी की रचनाएँ।
(च) दादा ने	(*vi*) बोल उठी बिटिया मेरी।

2. संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) "चिंता रहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनंद!"

(ख) 'माँ ओ!' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने लाई थी।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी' इन पंक्तियों का भाव क्या है?

(ख) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है और क्यों? इसका कारण लिखिए।

(ग) 'दादा ने चंदा दिखलाया', यह काव्य पंक्ति आपको क्या याद दिलाती है?

(घ) बच्ची द्वारा खिलाई गई मिट्टी माँ को कैसी लगती होगी?

(ङ) बचपन के वापस आने से क्या होगा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'झूठ से परे होता है बचपन' इस पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। (**मूल्यपरक प्रश्न**)

(ख) बचपन की किसी अबोध एवं चंचलतापूर्ण घटना को याद करके लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. बच्चा – बचपन　　　शिशु – शिशुता

ध्यान दीजिए, 'बच्चा' शब्द जातिवाचक संज्ञा है, 'बचपन' भाववाचक संज्ञा है। इससे पता चलता है कि जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाई जा सकती है।

नीचे कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ दी जा रही हैं, उनसे भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

(क) लड़का – लड़कपन	(ख) बाल – ....
(ग) पशु –	(घ) शत्रु – ....
(ङ) चोर –	(च) प्रभु – ....

2. नंदन वन-सी बालिका, छोटी-सी गुड़िया में 'सी' वाचक शब्द का प्रयोग समानता के लिए किया गया है।

निम्नलिखित उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

सफ़ेद, मीठी, कड़वी, ठंडी, कोमल, हलकी, चिकनी, मुलायम

(क) बर्फ़-सी ……ठंडी…… (ख) रुई-सी ……………

(ग) हवा-सी …………… (घ) तेल-सी ……………

(ङ) शहद-सी …………… (च) दवाई-सी ……………

(छ) दूध-सी …………… (ज) मखमल-सी ……………

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- कल्पना कीजिए कि यदि आप फिर एक बार पहली कक्षा में जाएँ तो आपको कैसा लगेगा?

क्रियाकलाप

1. यह चित्र माँ और बेटी का है। इन दोनों में किस प्रकार का संवाद हो रहा होगा? कल्पना करके लिखिए।

माँ – ……………………………………

बेटी – ……………………………………

माँ – ……………………………………

बेटी – ……………………………………

माँ – ……………………………………

बेटी – ……………………………………

माँ – ……………………………………

बेटी – ……………………………………

माँ – ……………………………………

बेटी – ……………………………………

2. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को पूर्ण कीजिए–

इक था बचपन,
तितली–सा उड़ता,
रंग–बिरंगे गुब्बारों का बचपन
इतने में मैंने देखा–

....

....

....

....

....

फिर एक बार
तितली–सा उड़ूँगा,
गुब्बारे ले दौड़ूँगा...
माँ की लोरी सुन
चैन की नींद सोऊँगा।

5 दुगुनी खुशी

चिंतन-मनन

मित्र वही जो मित्र की कष्ट में सहायता करे। एक-दूसरे की मदद करने से खुशी मिलती है। जिसे मदद की ज़रूरत हो और जो कष्ट में हो, उसकी हमेशा मदद करनी चाहिए।

जनवरी का महीना था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। चारों तरफ़ कोहरा-ही-कोहरा था। संजय रोज़ की तरह अपने स्कूल जा रहा था। उसका स्कूल घर से दो किलोमीटर की दूरी पर था। स्कूल जाते वक्त संजय की साइकिल को एक कार ने पीछे से टक्कर मार दी। उसकी बायीं टाँग की हड्डी टूट गई। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहाँ ऑपरेशन करके उसकी हड्डी जोड़कर दो महीने का प्लास्टर चढ़ा दिया गया।

संजय दसवीं कक्षा में पढ़ता था। दो महीने बाद ही उसकी बोर्ड की परीक्षा थी। पढ़ाई की चिंता में वह चोट का दर्द भूल गया। सारा दिन बैठे-बैठे यही सोचता कि वह परीक्षा दे पाएगा या नहीं। इसी चिंता में वह उदास रहने लगा। बोर्ड की परीक्षा और उसकी तैयारी के तनाव ने उसे चिड़चिड़ा बना दिया।

एक दिन संजय की माँ स्कूल गई और उसकी क्लास टीचर से मिलकर संजय की परेशानी बताई।

शब्दार्थ–**कोहरा**–ओस, धुँधलापन (fog), **चिड़चिड़ा**–मन की अवस्था, स्वभाव (irritation)

टीचर ने थोड़ा सोचते हुए कहा, "आप कहाँ रहते हैं? मैं किसी बच्चे की नोट बुक आपको दिला देती हूँ। आप समय पर मुझे वापस दे जाएँ। वैसे यह बहुत मुश्किल काम है। बोर्ड की परीक्षा नजदीक होने के कारण दूसरे बच्चों को भी अपनी तैयारी करनी है।"

संजय की माँ ने उनका धन्यवाद किया। यह समस्या सचमुच बहुत बड़ी थी। उसे कौन अपनी नोट बुक देगा? मैडम सोच में डूब गईं। तभी आगे के डेस्क पर बैठे कक्षा के सबसे मेधावी छात्र ने हाथ उठाकर मैडम से कुछ कहना चाहा। मैडम ने कहा, "हाँ बोलो! क्या कहना है?"

अमर ने कहा, "मैडम अगर आप इजाजत दें तो मैं यह काम कर सकता हूँ, मैं संजय के घर से थोड़ी ही दूरी पर रहता हूँ। मैं खुद जाकर संजय के घर से नोटबुक ले आऊँगा। आप इन्हें मेरी नोटबुक दे दें।" अब तो सारी समस्या हल हो गई।

अमर रोज़ समय निकालकर संजय के घर जाने लगा। उसे स्कूल का सारा हाल बताता। बातों-बातों में उस दिन के पढ़ाए गए पाठों की महत्वपूर्ण जानकारी भी दे देता। अब संजय को परीक्षा का बिलकुल भी डर नहीं लग रहा था कि बिना विद्यालय जाए वह सब कैसे कर पाएगा। उसे लगता, हर रोज़ वह घर बैठे-बैठे वही सब कुछ पढ़ रहा है, जो दूसरे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे हैं। इस तरह उसका आत्मविश्वास लौटने लगा।

अमर उसे अपने नोट्स दे जाता। जो भी होमवर्क मिलता, उसे संजय के साथ मिलकर करता। उसकी सारी नोटबुक ले जाकर टीचर को दे देता। टीचर उसकी जाँच करके वापस अमर को लौटा देती।

अमर इस काम को प्रसन्नता से कर रहा था। उसे देखकर संजय के माता-पिता को बड़ी खुशी होती। एक दिन संजय की माँ ने अमर से कहा- "बेटा! तुम रोज़ यहाँ आते हो। इसमें तुम्हारा बहुत समय खराब होता है। पूरा समय तुम संजय को पढ़ाते रहते हो। फिर तुम कब पढ़ते हो? तुम तो थक जाते होंगे। पहले स्कूल, फिर घर, फिर यहाँ और यहाँ से फिर घर।"

शब्दार्थ–मेधावी–होशियार (genious), **समस्या**–उलझन (problem)

"आंटी, आप ऐसा न कहें। दादी माँ कहती हैं, "बच्चे तो अथक होते हैं फिर थकावट कैसी? संजय मेरा दोस्त ही नहीं, मेरा भाई है। वैसे भी मैं इसे अलग समय नहीं देता हूँ। मैं भी इसके साथ बैठकर अपना होमवर्क कर लेता हूँ। साथ पढ़कर हम दोनों एक-दूसरे से सीखते हैं। कभी-कभी मैं गणित का प्रश्न हल नहीं कर पाता, उसे संजय फटाफट कर देता है।" यह कहकर बड़े स्नेह से संजय की ओर देखा। फिर मुसकराते हुए कहा, "है न संजय! मैं ठीक कह रहा हूँ न।"

संजय ऐसे दोस्त को पाकर मन ही मन गर्वित हो उठा। उसके पिता भी अमर की बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने अमर को हृदय से लगा लिया और पत्नी से बोले, "देखो, बच्चे ही सच्ची सेवा करते हैं। जब बच्चा किसी की मदद या सेवा करता है, तो बिलकुल अहसान नहीं जताता। सब कुछ करते हुए भी अमर हमें अहसान-मुक्त रखना चाहता है कि वह स्वयं ही संजय से कुछ सीख रहा है।"

संजय की माँ ने अमर का माथा चूम लिया और बोली, "तुम जैसा बालक तो घर की शान है, विद्‌यालय की आन है और पूरे समाज का गौरव है, अच्छा यह तो बताओ, यह सब तुम्हें किसने सिखाया?"

हँसते हुए बड़े भोलेपन से अमर ने कहा, "आंटी, मुझे किसी ने नहीं सिखाया। मैंने देखा है, मेरी माँ अपने हर पड़ोसी के लिए कुछ-न-कुछ करती रहती हैं। पिता जी भी दूसरों के काम करते रहते हैं। मेरे पड़ोस के एक अंकल अकसर काम पर बाहर जाते रहते हैं, तो पापा उनके बच्चे को भी मेरे साथ-साथ स्कूल बस में बिठा आते हैं। आंटी मैं देखता हूँ कि उन्हें ऐसे कामों से बड़ी खुशी मिलती है।"

अमर बोल रहा था और वे दोनों उसकी बातों को सुन रहे थे। थोड़ा रुककर उसने कहा, "मैंने माँ को बताया कि संजय के पाँव पर प्लास्टर चढ़ा है, वह स्कूल नहीं जा पा रहा है। मैं उसके घर पर जाकर उसके साथ बैठकर अपना गृहकार्य करूँगा तो माँ ने खुशी-खुशी इज़ाजत दे दी।"

अमर उत्साह में बताने लगा, "हम दोनों ने मिलकर कितनी जल्दी अपना काम पूरा कर लिया है। अपना सिलेबस पूरा करने की खुशी तो है ही, किंतु संजय का भी पूरा हो जाने के कारण मेरी खुशी दुगुनी हो गई है।"

संजय के प्रति अमर की सुंदर मैत्री-भावना से वे दोनों गद्‌गद् हो गए। संजय के पिता सोचने लगे, "हम बच्चों को दूसरों की सेवा या मदद का उपदेश ही देते हैं, बच्चों पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता। अमर ने माता-पिता की करनी से ही सब कुछ सीखा है। हम बच्चों को समाज-सेवा का पाठ पढ़ाकर उन्हें समाज सेवा के लिए तैयार करने की भूल करते हैं।"

शब्दार्थ– गर्वित–घमंड (proud), **अहसान**–उपकार, कृतज्ञ (greateful), **अहसान-मुक्त**–ऋण मुक्त (out of obligation)

संजय की माँ अंदर जाकर एक बहुत सुंदर गिफ़्ट ले आईं, जिसे अमर को देते हुए बोली, "लो बेटा इसे रखो।"

"आंटी, यह सब मैंने किसी इनाम के लालच में नहीं किया। कृपया आंटी, ऐसा कर मेरी खुशी को न छीनें...।"

यह कहकर अमर तेज़ी से अपने घर की ओर चल पड़ा। वे दोनों वहीं ठगे से खड़े रह गए।

–डॉ० शकुंतला कालरा

लेखिका परिचय

डॉ० शकुंतला कालरा का जन्म 2 मार्च 1947 में बक्सर में हुआ। इन्होंने एम०ए०, एम०लिट०, पीएच०डी० तथा डी०लिट० की उपाधि प्राप्त की। शुरू से ही इनकी बाल साहित्य के प्रति रुचि रही। साक्षात्कार, कहानी, यात्रा वृतांत, कविता, आत्मकथा में इनका बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। इन्होंने लगभग चालीस पुस्तकें लिखीं। समय-समय पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया। ये मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से ऐसोसिएट प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत हुईं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

  (क) संजय का घर स्कूल से कितना दूर था?

  (ख) संजय कौन-सी कक्षा में पढ़ता था?

  (ग) संजय की कौन-सी टाँग टूटी थी?

  (घ) संजय के चिड़चिड़ेपन का कारण क्या था?

  (ङ) संजय की मदद किसने की?

  (च) अमर की कौन-सी बात सबको अच्छी लगती?

  (छ) उपहार पाकर अमर ने क्या कहा?

लिखित

1. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "मैडम अगर आप इज़ाजत दें तो मैं यह काम कर सकता हूँ?"

(ख) "संजय मेरा दोस्त ही नहीं भाई है।"

(ग) "कृपया आंटी, ऐसा कर मेरी खुशी न छीनें...।"

2. चरित्र चित्रण कीजिए–

(क) संजय के गुणों का वर्णन कीजिए।

(ख) अमर 'अच्छे मित्र' की मिसाल है, कैसे? लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संजय के साथ क्या दुर्घटना हुई?

(ख) अध्यापिका ने संजय की मदद कैसे की?

(ग) अमर संजय का सच्चा साथी कैसे बना?

(घ) 'मदद करनी है' अमर ने यह सीख किससे और कैसे सीखी? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) अगर आपके मित्र को आपकी मदद की आवश्यकता पड़े तो आप क्या करेंगे?

(ख) 'दुगुनी खुशी' शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) परीक्षा –	(ख) मेधावी – ....
(ग) प्रसन्नता –	(घ) लालच – ....
(ङ) मदद –	(च) विद्यालय – ....

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) डर – ……निडर……　　(ख) प्रसन्नता – ……………

(ग) अमर – ……………　　(घ) खुशी – ……………

(ङ) सुंदर – ……………　　(च) तेज़ – ……………

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) घर की शान – ……………………………………

(ख) आत्मविश्वास लौटना – ……………………………………

(ग) मन गर्वित होना – ……………………………………

(घ) लालच न करना – ……………………………………

4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

- संजय रोज़ की तरह अपने स्कूल जा रहा था।
- दो महीने बाद ही उसकी बोर्ड की परीक्षा थी।
- आप मुझे समय पर वापस दे जाएँ।
- वे दोनों उसकी बातें को सुन रहे थे।

इन सभी वाक्यों में रेखांकित पद सर्वनाम हैं। सर्वनाम वे होते हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में सर्वनाम के भेदों के नाम लिखिए–

(क) बच्चों ने अपना काम स्वयं कर लिया। ……………

(ख) बाहर कौन खड़ा है? ……………

(ग) हम घर जा रहे हैं। ……………

(घ) जो करेगा, सो भरेगा। ……………

(ङ) बच्चों से कहा गया कि वे अपना काम अपने-आप ही कर लेंगे। ……………

वर्तनी से संबंधित

प्राचीन रूप

गये, आयीं, उठायी, गयीं, गयी, दायें, आये, फैलाये, चलायी, उठाये, बनाये, जायेंगे

उपर्युक्त शब्दों को पढ़कर आपको लगा होगा कि ये शब्द गलत हैं, आप अपनी जगह बिलकुल सही सोच रहे होंगे। वर्तमान समय में हम इन्हें अशुद्ध मानते हैं लेकिन पहले ये शब्द ऐसे ही लिखे जाते थे। भाषा परिवर्तनशील है, इसमें परिवर्तन होते रहते हैं। अब उपर्युक्त शब्दों का निम्नलिखित रूप देखिए, जिनका प्रयोग हम वर्तमान समय में करते हैं–

वर्तमान रूप (परिवर्तित रूप)

गए, आईं, उठाईं, गईं, गई, दाएँ, आए, फैलाए, चलाई, उठाए, बनाए, जाएँगे

आप हिंदी भाषा बोलते और लिखते समय उपर्युक्त शब्दों की वर्तनी को ध्यान में रखें।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- 'मारने वाले से ज़्यादा जान बचाने वाला महान होता है' ऐसा क्यों कहा गया है? क्या आपने भी कभी किसी ज़रूरतमंद की मदद की है? बताइए।

क्रियाकलाप

1. नीचे काव्य पंक्तियाँ दी गईं हैं। इस 'पद्यांश' को गद्यांश के रूप में लिखिए–

मैं हूँ किसान, मैं हूँ किसान।
प्रातः उठूँ बैलों को जोड़ूँ,
धरती जोतूँ, ढेले फोड़ूँ,
कर दूँ मिट्टी एक समान।
मैं हूँ किसान, मैं हूँ किसान।।
प्यारा मुझको है वह बादल,
प्यारा मुझको नहरों का जल,
करता कभी नहीं मैं छल-बल,
पशु-धन ही हैं मेरे प्राण।
मैं हूँ किसान, मैं हूँ-किसान।।

2. यह चित्र देखकर आपके मन में जो भाव आ रहे हैं, उन्हें लिखिए–

3. चित्र को देखकर विज्ञापन लिखिए, ध्यान रहे कि विज्ञापन संक्षिप्त और सटीक हो।

6 नाम में क्या है?

चिंतन-मनन

इस पाठ में केवल नाम को प्रधानता देने वाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है। नाम से नहीं, अपितु काम के द्‌वारा नाम की महिमा बढ़ जाती है। संसार कर्म प्रधान है, इसलिए कर्म करना चाहिए। गीता में श्रीकृष्ण ने भी कर्म करने को कहा है।

तक्षशिला के महाविद्‌यालय में पापक नाम का विद्‌यार्थी था। उसके साथी उसे 'पापी', 'पापक' कहकर जब पुकारते तो उसे अपने अशुभ नाम पर दुख होता था। एक दिन उसने सोचा कि इस बुरे नाम के स्थान पर अपना कोई अच्छा नाम रख ले तो उसका गौरव बढ़ जाएगा। वह अपने गुरु के पास गया और बोला, "गुरुदेव, मुझे अपने कुनाम के कारण दूसरों के सामने नीचा दिखना पड़ता है इसलिए कृपा करके आप मेरा कोई सुंदर नाम रख दें ताकि मैं भी अपने नाम पर गर्व करूँ।"

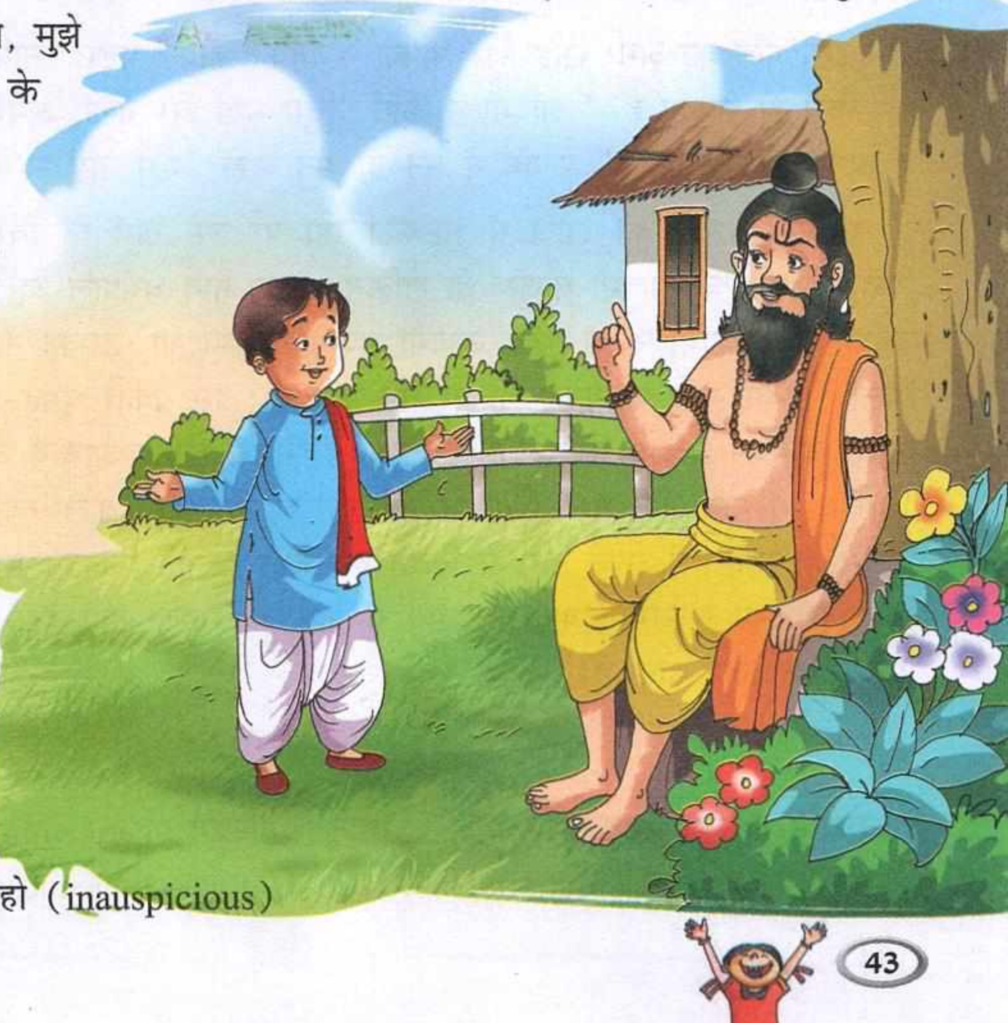

गुरु ने कहा, "मैं तुम्हारा नाम बदलने के लिए तैयार हूँ पर मैं चाहता हूँ कि तुम आस-पास के गाँवों में जाकर अपने लिए कोई अच्छा और योग्य नाम ढूँढ़ लो।"

शब्दार्थ–अशुभ–जो शुभ न हो (inauspicious)

पापक नाम की खोज में चल पड़ा। घूमते-घूमते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ उसे एक स्त्री सिर पर गठ्ठर ढोती हुई मिली। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे। उसने उसका नाम पूछा। स्त्री ने अपना नाम 'धनलक्ष्मी' बताया। इसके बाद पापक ने उसका काम पूछा स्त्री ने कहा–"मैं एक गरीब स्त्री हूँ, मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालती हूँ।" पापक को आश्चर्य हुआ–'नाम तो धनलक्ष्मी और रुपयों के लिए तरसती है।' उसने स्त्री से पूछा, "आप तो धनलक्ष्मी हैं फिर भी निर्धन क्यों?"

स्त्री बोली, "बेटा, नाम से क्या होता, है, वह तो एक पहचान के लिए है, तुम नाम के धोखे में न पड़ो। संसार में कर्म प्रधान है, नाम नहीं।"

पापक दूसरे गाँव पहुँचा। वहाँ किसी की मृत्यु हो गई थी। पापक ने एक आदमी से पूछा– "क्यों भाई, कौन मर गया?"

"इसी गाँव का अमर सिंह है।" पापक ने चकित होकर पूछा, "नाम अमर सिंह और वह मर गया! यह कैसे हो सकता है?" आदमी ने कहा, "तुम मूर्ख हो! भला, अमर सिंह नाम होने से कोई संसार में अमर हो सकता है!" पापक ने मन-ही-मन कहा, 'ऐसे नाम से क्या लाभ जो सार्थक न हो!'

वह योग्य नाम की खोज में भटकता रहा पर उसे नाम के विरुद्ध काम करते हुए लोग ही दिखाई दिए। एक आदमी कंजूस था लेकिन उसका नाम धर्मपाल था; एक व्यक्ति अशिक्षित था और उसका नाम विद्याधर था; एक आदमी गंदगी में पड़ा था, उसका नाम निर्मलनाथ था; एक महिला मिली जिसका नाम कोकिला था पर वह गूँगी थी। इस प्रकार घूमते-घूमते उसे अनुभव हो गया कि केवल नाम से महिमा सिद्ध नहीं होती। वह निराश होकर आचार्य के पास लौट आया और बोला, "गुरुदेव, मैं गाँव-गाँव घूम आया पर नाम को सार्थक करने वाला व्यक्ति शायद ही मिला। अब मुझे मालूम हो गया कि अच्छे नाम से किसी को बड़प्पन नहीं मिलता। मनुष्य वास्तव में गुण और चरित्र के अनुसार मान-सम्मान पाता है। अब मैं नाम को महत्व नहीं देता। नाम से क्या होता है, वह तो पुकारने के लिए होता है।

–संकलित

शब्दार्थ– **खोजना**–ढूँढ़ना (search), **मेहनत**–परिश्रम (hard work), **संसार**–विश्व (world), **अमर**–न मरने वाला (immortal), **अशिक्षित**–अनपढ़ (uneducated)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मरने वाला व्यक्ति कौन था?

(ख) कंजूस आदमी का नाम क्या था?

(ग) नाम की खोज करते समय पापक ने क्या देखा?

(घ) मनुष्य को मान-सम्मान किससे प्राप्त होता है?

(ङ) यह पाठ क्या संदेश देता है?

लिखित

1. रिक्त स्थानों को भरिए–

(क) .... के महाविद्यालय में पापक नाम का विद्यार्थी था।

(ख) गुरुदेव, मुझे अपने .... के कारण नीचा दिखना पड़ता है।

(ग) नाम तो .... है पर रुपयों के लिए तरसती है।

(घ) संसार में .... प्रधान है .... नहीं।

(ङ) नाम सिर्फ़ .... के लिए होता है।

2. किसने, किससे कहा?

(क) "कृपा करके आप मेरा कोई सुंदर नाम रख दें।" ....

(ख) "बेटा, नाम से क्या होता है?" ....

(ग) "अमर सिंह नाम होने से कोई संसार में अमर हो सकता है?" ....

(घ) "मैं तुम्हारा नाम बदलने के लिए तैयार हूँ।" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) पापक को अपने नाम पर दुख क्यों होता था? चर्चा करके लिखिए।

(ख) गुरु ने उसे अच्छे नाम की खोज करने के लिए क्यों भेजा? क्या वे स्वयं अच्छा नाम नहीं सुझा सकते थे?

(ग) पापक ने नाम में और काम में क्या फ़र्क पाया?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) गाँव-गाँव घूमकर आखिर पापक किस निष्कर्ष पर पहुँचा? नाम अच्छा होना चाहिए या काम? अपने विचार लिखिए।

(ख) 'व्यक्ति का कार्य सदैव श्रेष्ठ होता है' उसकी पहचान उसके नाम से नहीं, बल्कि कार्य से होती है' इस पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. • लिखित कार्य की कॉपियाँ एकत्रित कर लीजिए।
   • क्या आज काम किया है?
   • मैं घर पर नियमित रूप से अध्ययन और लिखित कार्य कर रहा हूँ।
   • आज भी तुमने काम नहीं किया।

उपर्युक्त वाक्यों को ध्यान से पढ़िए। पहले वाक्य में आज्ञा दी जा रही है, ऐसे वाक्यों को आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य में प्रश्न किया जा रहा है, ऐसे वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। तीसरे वाक्य में कार्य के होने के बारे में बताया गया है, ऐसे वाक्यों को विधिवाचक वाक्य कहते हैं। चौथे वाक्य में कार्य के न होने का बोध हो रहा है, ऐसे वाक्यों को निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

उपर्युक्त सभी वाक्य अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद हैं। निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनके वाक्य भेद लिखिए–

(क) मैं तुम्हारा नाम बदलने के लिए तैयार हूँ। ....

(ख) तुम अभी नाम की खोज में चले जाओ। ....

(ग) आप तो धनलक्ष्मी हैं फिर भी निर्धन क्यों? ....

(घ) केवल नाम से महिमा सिद्ध नहीं होती। ....

(ङ) अब बैठकर पढ़ो। ....

(च) क्या आप पैदल जाएँगे? ....

(छ) गुरु ने बच्चों को कहानी सुनाई। ....

(ज) किसी को भी तंग नहीं करना चाहिए। ....

2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं; जैसे–माला–मालाएँ, बच्चा-बच्चे आदि।

निम्नलिखित रिक्त स्थानों को कोष्ठक में दिए गए उचित वचन चुनकर भरिए–

(क) वह घूमते-घूमते एक .... में पहुँचा। (गावों/गाँव)

(ख) मैं एक गरीब .... हूँ। (स्त्री/स्त्रियाँ)

(ग) वह .... बहुत मेहनती था। (लड़का/लड़के)

(घ) एक .... अशिक्षित था। (व्यक्तियों/व्यक्ति)

(ङ) बहुत-सी .... घर की ओर जा रही थीं। (महिला/महिलाएँ)

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. अगर आपका नाम 'पापक' होता तो आप क्या करते? अपने मित्रों से भी उनके विचार पूछिए।
2. आपको कौन-सा नाम पसंद है? कारण बताते हुए नाम की सार्थकता पर एक परिच्छेद लिखिए।

क्रियाकलाप

1. "जैसी करनी वैसी भरनी" इस उक्ति पर एक कहानी लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

2. यह चित्र तेनालीराम और राजा कृष्णदेवराय का है। इनसे संबंधित कोई कहानी पढ़िए और उसका अभिनय कीजिए–

अतिरिक्त पठन

नोबेल पुरस्कार विजेता–रवींद्रनाथ टैगोर

किसी के कार्य की सराहना करना तथा उसे पुरस्कृत करना, यह गौरव की बात होती है। जिस प्रकार भारत सरकार द्वारा भारत रत्न, पद्मश्री, पद्मभूषण जैसे कई सर्वोच्च नागरिक सम्मान पुरस्कार दिए जाते हैं, उसी प्रकार पूरे संसार में साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा आदि कई क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले लोगों को 'नोबेल फाउंडेशन' द्वारा स्वीडन के वैज्ञानिक 'अल्फ्रेड नोबेल' की याद में पुरस्कार दिए जाते हैं। इसमें पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति-पत्र के साथ चौदह लाख डालर की राशि प्रदान की जाती है। नोबेल को मालूम था कि विध्वंसक शक्तियों को दूर करने के लिए निरंतर अनुसंधानों की आवश्यकता है। इसी कारण अपनी मृत्यु के पूर्व, अपनी विपुल संपत्ति का एक हिस्सा उन्होंने ट्रस्ट के लिए सुरक्षित रख दिया। उनकी इच्छा थी कि इन रुपयों के ब्याज से हर साल उन लोगों को सम्मानित किया जाए जिनका काम मानव जाति के लिए सबसे कल्याणकारी हो। स्वीडिश बैंक में जमा इस राशि के ब्याज से नोबेल फाउंडेशन द्वारा हर वर्ष शांति, साहित्य, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा जगत और अर्थशास्त्र में सर्वोच्च योगदान के लिए पुरस्कार दिया जाता है। नोबेल फाउंडेशन की स्थापना 29 जून, 1900 को हुई तथा 1901 से नोबेल पुरस्कार दिया जाने लगा। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार की शुरुआत 1968 से की गई। पहला नोबेल शांति पुरस्कार 1901 में 'रेड क्रॉस' के संस्थापक 'हैनरी दुनांत' और 'फ्रेंच पीस सोसायटी' के संस्थापक अध्यक्ष 'फ्रेडरिक पैसी' को संयुक्त रूप से दिया गया।

हम भारतीयों के लिए यह गौरव की बात है कि श्री रवींद्रनाथ टैगोर जो 'गुरुदेव' के नाम से भी पहचाने जाते हैं उन्हें उनके कवित्व, दार्शनिक तत्व तथा साहित्य के लिए 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारतीय साहित्य के एकमात्र नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। इनके पिता का नाम देवेंद्रनाथ और माता का नाम शारदा देवी था। उनकी स्कूल की पढ़ाई सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्हें बचपन से ही कविता लिखने का शौक था। उन्होंने आठ साल की

उम्र में पहली कविता लिखी। 1877 में केवल सोलह वर्ष की अवस्था में उनकी लघुकथा प्रकाशित हुई। रवींद्र के पिता उन्हें बैरिस्टर बनाना चाहते थे इसलिए सन् 1878 में इंग्लैंड के ब्राइटोन में एक पब्लिक स्कूल में नाम लिखवाया। उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से कानून का अध्ययन किया लेकिन 1880 में पदवी को प्राप्त किए बिना वे भारत लौट आए। सन् 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। रवींद्रनाथ टैगोर को बचपन से ही प्रकृति का सानिध्य भाता था। उनकी सोच थी कि प्रकृति के सानिध्य में छात्र अच्छा अध्ययन कर सकता है। इसी को मूर्तरूप देने के लिए उन्होंने अपना गाँव छोड़ दिया और प्रकृति के सानिध्य में 'शांति निकेतन' की स्थापना की। इनके घर का वातावरण ब्रह्म-समाजी नियमों से प्रभावित था फलस्वरूप उनपर भी इसका प्रभाव पड़ा, जो उनकी रचनाओं में भी प्रतिबिंबित हुआ है। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में जान फूँकने वाले युगदृष्टा टैगोर संसार के लिए एक मिसाल हैं। साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा हो जिसमें उन्होंने लिखा न हो। उन्होंने कविता, गीत, कथा, उपन्यास, नाटक, प्रबंध, शिल्पकला आदि सभी विधाओं में रचना की। उनकी प्रकाशित कृतियों में 'गीतांजलि', 'गीतावली', 'गीतिमाल्या' आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कुछ पुस्तकों का अंग्रेज़ी में अनुवाद भी किया। अंग्रेज़ी अनुवाद के बाद उनकी प्रतिभा पूरे विश्व में फैली।

रवींद्र ने संगीत के क्षेत्र में भी अनुपम योगदान दिया। उन्होंने लगभग 2,230 गीतों की रचना की। प्रकृति के प्रति गहरा लगाव रखने वाले ये ऐसे एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने दो देशों के लिए राष्ट्रगान लिखा। टैगोर ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में चित्र बनाना आरंभ किया। उनके चित्रों में युग संशय, मोह और दुख की रेखाएँ चित्रित हैं। जीवन के अंतिम दिन उन्होंने कोलकाता में बिताए। यह महान चेतना 7 अगस्त, 1941 को पंचमहाभूतों में विलीन हो गई। उनकी काव्य रचना 'गीतांजलि' के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्त हुआ। रवींद्रनाथ टैगोर एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। भारत के लिए यह गौरव की बात है। 'जन-गण-मन' और 'आमार-सोनार-बांग्ला' गाकर हर भारतवासी अपने-आपको धन्य मानता है। इस महान चेतना गुरुदेव को शत-शत प्रणाम!

–संकलित

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता!
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंगा
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता!
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय जय हे!

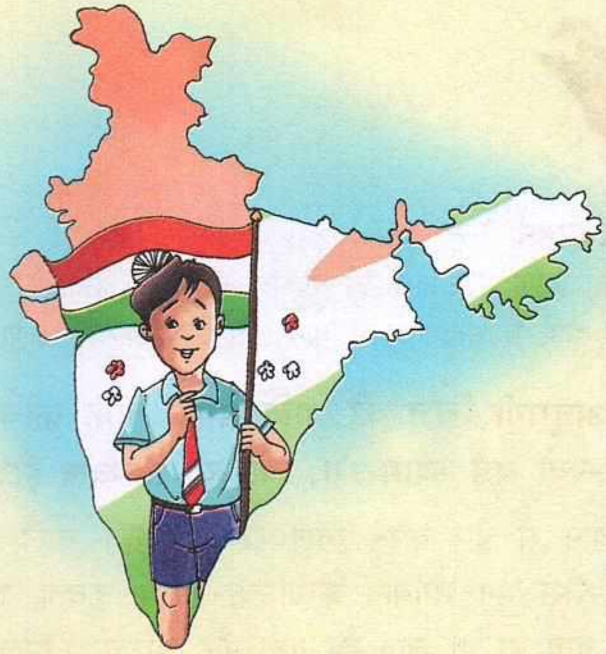

राष्ट्रगान के विषय में कुछ विशेष तथ्य–

- भारत का गौरवमय राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' अपने सौ साल पूरे कर चुका है।
- यह गीत नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने लिखा था।
- 'जन-गण-मन' 27 दिसंबर, 1911 को 'कलकत्ता भारतीय कांग्रेस समिति' में गाया गया। जनवरी 1950 में यह 'राष्ट्रगान' के रूप में संवैधानिक रूप से स्वीकृत हुआ।
- मूल रूप में यह राष्ट्रगान बंगाली भाषा में लिखा गया है। यह गान मूल रूप से पाँच पदों में है। पहले पद को 'भारतीय राष्ट्रगान' के रूप में चुना गया।
- सन् 1919 में रवींद्रनाथ टैगोर ने इस गीत का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर संगीतबद्ध किया। इन्होंने इस गीत का शीर्षक दिया–'द मॉर्निंग सांग ऑफ़ इंडिया'।

7 नीति सागर

चिंतन-मनन

संतों की वाणी में समाज को बदलने की क्षमता होती है। इनके छोटे-छोटे दोहों में जीवन का सार छिपा रहता है। इन दोहों में भी गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।

1. या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नाहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥ (बिहारी लाल)

भगवान से प्रेम करने वाले इस मन की चाल को कोई नहीं समझता। जैसे-जैसे मन भगवान कृष्ण के रंग में डूबता जाता है; वैसे-वैसे इसके सारे दोष दूर हो जाते हैं। यह और अधिक निर्मल होता जाता है।

2. काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुवरहिं भजु, जाहि भजहिं सब संत॥ (तुलसीदास)

काम, क्रोध, मद, लोभ मनुष्य को नरक में ले जाते हैं। इसलिए इन विकारों को छोड़कर भगवान राम को भजना चाहिए। सभी सज्जन उनका भजन करते हैं।

3. जो गरीब के हित करै, ते 'रहीम' बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरौ, कृष्ण मिताई जोग॥ (रहीम)

वही व्यक्ति बड़ा होता है जो अमीर-गरीब का भेदभाव नहीं रखता। श्रीकृष्ण ने मित्रता के लिए सुदामा का 'कलेवा' खाया और उसे गले लगाया।

शब्दार्थ–अनुराग–प्रेम (love), **समुझै**–समझना (understanding), **उज्ज्वल**–निर्मल (fresh), **परिहरि**–छोड़ना (left), **भजना**–पूजना (to pray), **गरीब**–निर्धन (poor), **मिताई**–मित्रता (friendship), **जोग**–योग्य/लायक (able)

4. **प्रेम न खेती ऊपजै, प्रेम न हाटि बिकाय।**
राजा परजा जेहि रुचै, सीस दै सो लै जाय।। (कबीरदास)

प्रेम किसी खेत में पैदा नहीं होता। वह किसी बाज़ार में भी नहीं बिकता। राजा से लेकर प्रजा तक जो भी प्रेम पाना चाहे, उसे अपने-आपको न्योछावर करना पड़ेगा।

शब्दार्थ–ऊपजै–उपजना (to grow), **हाटि**–बाज़ार (market), **बिकाय**–बिकना (to sell), **परजा**–प्रजा (people), **सीस**–सिर (head)

कवि परिचय

- **बिहारी लाल**–हिंदी साहित्य के रीतिकालीन कवि बिहारी लाल अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं। 'गागर में सागर' भरने की क्षमता उनके दोहों में है। इनका जन्म ग्वालियर के समीप गोविंदपुर ग्राम में सन् 1595 के आस-पास हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। वे जयपुर के महाराजा जयसिंह के आश्रित थे। बिहारी सतसई इनकी प्रमुख रचना है। इनका देहावसान सन् 1663 के आस-पास माना जाता है।
- **तुलसीदास**–रामाश्रयी काव्य-शाखा के रामभक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सबसे पहले गिने जाते हैं। तुलसीदास जी का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। जनश्रुति के अनुसार तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दूबे था तथा माता का नाम हुलसी था। इनके द्वारा रचित 12 ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं। इनमें दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस, पार्वतीमंगल आदि प्रमुख हैं। सन् 1623 में इनकी मृत्यु हुई।
- **रहीम**–रहीम का पूरा नाम 'अब्दुर्रहीम खानखाना' था। इनकी गणना अकबर के दरबार के नवरत्नों में होती है। इनका जन्म सन् 1556 में हुआ था। इनका पालन-पोषण एवं शिक्षा अकबर के निरीक्षण में हुई। इनकी योग्यता से प्रसन्न होकर अकबर ने 1584 में इन्हें 'खानखाना' की उपाधि प्रदान की। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–बरवै नायिका भेद, नगर शोभा, मदनाष्टक। इनकी मृत्यु सन् 1626 में मानी जाती है।
- **कबीरदास**–कबीरदास जी की जन्मतिथि को लेकर मतभेद है। जनश्रुति के अनुसार, इनका जन्म सन् 1398 के आस-पास माना जाता है। मुसलमान जुलाहा दंपति नीरू और नीमा ने इनका लालन-पालन किया। कबीर अनपढ़ थे परंतु अनुभवों की खान थे। कबीर निर्गुणवादी थे। इन्होंने मूर्ति-पूजा का विरोध किया। हिंदू और मुसलमानों में प्रचलित अंधविश्वासों को दूर करने का अथक प्रयास किया। कबीर के शिष्यों ने अपने गुरु की वाणी का संग्रह बीजक नामक ग्रंथ में किया है, जिनके तीन भाग हैं–सबद, रमैनी और साखी। कबीर की भाषा 'सधुक्कड़ी' या 'खिचड़ी भाषा' कहलाती है। इनकी मृत्यु सन् 1518 में मानी जाती है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मन कब निर्मल होता है?

(ख) नरक के पंथ कौन-से हैं?

(ग) कौन-से व्यक्ति बड़े होते हैं?

(घ) प्रेम कहाँ से उपजता है?

(ङ) भगवान को भजने से क्या होगा?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) मन हमेशा ………………… होता है।

(ख) हमेशा ………………… का नाम जपना चाहिए।

(ग) श्रीकृष्ण ने ………………… के लिए सुदामा का कलेवा खाया।

(घ) प्रेम का संबंध ………………… से होता है।

(ङ) कबीरदास जी ………………… थे।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'कृष्ण के रंग में रंगना' का क्या अर्थ है?

(ख) सज्जन लोगों के क्या लक्षण हैं?

(ग) क्या सज्जन बनकर जीवन बिताया जा सकता हैं?

(घ) कौन मनुष्य को नरक में ले जाता है?

(ङ) प्रेम पाने के लिए क्या करना पड़ेगा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'जो अमीर-गरीब का भेदभाव नहीं रखता, वही बड़ा व्यक्ति है।' क्या आप इस विचार से सहमत हैं? इस कथन के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) प्रेम की महिमा को बताइए और इससे संबंधित किसी ऐसी घटना के बारे में लिखिए जिससे यह पता चलता हो कि प्रेम से सब कुछ पाया जा सकता है। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के पुरुष जाति के होने का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिग कहते हैं; जैसे–दादा, नौकर, अध्यापक, ससुर आदि।

किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के स्त्री जाति के होने का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–दादी, नौकरानी, अध्यापिका, सास आदि।

दिए गए शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

(क) भगवान – .... (ख) मित्र – ....

(ग) बलवान – .... (घ) नायक – ....

(ङ) गायक – .... (च) राजा – ....

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

(क) जोग – .... (ख) हाट – ....

(ग) सीस – .... (घ) समुझै – ....

(ङ) उपजै – .... (च) परजा – ....

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) अनुराग – ....

(ख) उज्ज्वल – ....

(ग) लोभ – ....

(घ) गरीब – ....

(ङ) हित – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- "काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
  पल में परलय होयगी, बहुरि करोगे कब।।"

  यह कबीरदास जी का प्रसिद्ध दोहा है। इसी प्रकार के अन्य दोहों की रचना कीजिए जो आज के सामाजिक विषय से संबंधित हों; जैसे–

  आज करै सो कल कर, कल करै सो परसों।
  इतनी जल्दी क्या है, अब भी जीना है बरसों।।

क्रियाकलाप

1. जात न पूछौ साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
   मोल करौ तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

   पाहन पूजै हरि मिलैं, तो मैं पूजौं पहार।
   तातें ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

   उपरोक्त दोहे किसके हैं? इस संत कवि के बारे में वर्ग में चर्चा कीजिए।
2. 'मित्रता' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए; जैसे– कृष्ण-सुदामा, कर्ण-दुर्योधन।

8 गुरुभ्यो नमः- एकलव्य

चिंतन-मनन

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव– इन तीन महान बुनियाद पर हमारी भारतीय संस्कृति टिकी हुई है। इतिहास और पुराण कथाओं के पन्ने इसी परंपरा की महानता के गीत गाते पाए जाते हैं। प्रगति के नाम पर आज हम कोसों दूर आ गए हैं, पर हमारी जड़ें मात्र वहीं पर मज़बूत हैं।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग्भवेत।"

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी माया-मोह से मुक्त हों अर्थात् ज्ञानी हों तथा भाईचारे की भावना से इस पृथ्वी पर निवास करें और किसी को कोई कष्ट न हो। इस तरह विश्वमंगलकारिणी भावना से ओत-प्रोत भारतीय संस्कृति अपने-आप में अनूठी है। भारत की संस्कृति, भारतीय वेद, ऋचाएँ अत्यंत प्राचीन हैं। उसी प्राचीन पन्ने का महानायक एकलव्य है, जिसने गुरु द्रोण को गुरुदक्षिणा में अँगूठा भेंट किया था।

शब्दार्थ–**बुनियाद**–नींव (base), **निरोगी**–आरोग्य (healthy)

एकलव्य महाभारत का एक पात्र है। वह हिरण्य-धनु नामक निषाद का पुत्र था। उसमें धनुर्विद्या सीखने की इच्छा थी। एकलव्य धनुर्विद्या सीखने के उद्देश्य से द्रोणाचार्य के पास आया किंतु निषाद पुत्र होने के कारण द्रोणाचार्य ने उसे अपना शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। गुरु द्रोणाचार्य कौरव और पांडवों के राजगुरु थे। वे सिर्फ़ राजकुमारों को विद्यादान करते थे। उनका प्रिय शिष्य अर्जुन था। वे अपनी सारी विद्या अर्जुन को देना चाहते थे। जब द्रोणाचार्य ने एकलव्य को विद्या देने से इनकार किया तो वह निराश नहीं हुआ। वह वन में चला गया। वहाँ पर उसने द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाई और उस मूर्ति को गुरु मानकर धनुर्विद्या का **अभ्यास** करने लगा।

एकाग्रचित्ता, गुरु के प्रति अपार श्रद्धा तथा ईमानदारी के कारण वह धनुर्विद्या में अत्यंत **निपुण** हो गया। अपने मानसगुरु द्रोणाचार्य के प्रति उसके मन में अपार श्रद्धा थी। एक बार गुरु द्रोण अपने शिष्यों के साथ उसी वन में आए जहाँ एकलव्य अपना आश्रम बनाकर धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था। गुरु द्रोण तथा उनके शिष्यों के साथ उनका **श्वान** भी आया था। राजकुमारों का श्वान भटककर एकलव्य के आश्रम में जा पहुँचा। एकलव्य को देखकर श्वान भौंकने लगा, भौंकने से एकलव्य की साधना में खलल पड़ रहा था, अतः उसने अपने बाणों से श्वान का मुँह बंद कर दिया। एकलव्य ने इतनी **कुशलता** से बाण चलाए थे कि उस श्वान को किसी प्रकार की चोट नहीं लगी। श्वान के लौटने पर कौरव, पांडव तथा स्वयं द्रोणाचार्य यह कौशल देखकर दंग रह गए और बाण चलाने वाले की खोज करते हुए एकलव्य के पास पहुँचे। उन्हें यह जानकर और भी आश्चर्य हुआ कि द्रोणाचार्य को 'मानसगुरु' मानकर एकलव्य ने स्वयं ही अभ्यास से यह विद्या प्राप्त की है। गुरु द्रोण को एकलव्य की धनुर्विद्या को देखकर संतोष हुआ। ऐसा योग्य तीरंदाज़ उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। द्रोणाचार्य के साथ अर्जुन भी था, वास्तव में द्रोणाचार्य अपनी सारी विद्या अर्जुन को देना चाहते थे और उसी को श्रेष्ठ धनुर्धर बनाना चाहते थे। उन्होंने अर्जुन को यह वचन दिया था कि वे उसे उच्च शिखर तक ले जाएँगे।

शब्दार्थ–अभ्यास–प्रयत्न (practice), **निपुण**–पारंगत (skilled),
श्वान–कुत्ता (dog), **कुशलता**–निपुणता (skill)

द्रोणाचार्य अर्जुन के मोह में अंधे हो गए थे, फलस्वरूप उन्होंने एकलव्य से गुरुदक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने अपने-आपको धन्य समझा और द्रोणाचार्य को अपना अँगूठा दक्षिणा के रूप में समर्पित किया। गुरुदक्षिणा देकर एकलव्य महान शिष्य साबित हुआ।

गुरु द्रोणाचार्य दूरदर्शी थे। उन्होंने एकलव्य के गुणों को परखा था और उन्हें विश्वास था कि बिना अँगूठे के धनुष चलाने की कला वह आत्मसात कर लेगा। यह भी माना जाता है कि अँगूठा कट जाने के बाद एकलव्य ने तर्जनी और मध्यमा अँगुली का प्रयोग कर तीर चलाने का अभ्यास किया। महान शिष्य के रूप में एकलव्य आज भी प्रसिद्ध है। एकलव्य की कहानी यह सिद्ध करती है कि '**विकलांगता** सफलता की राह में बाधा नहीं बन सकती।' जीवन को सकारात्मक रूप से देखने का यह तरीका मानव को नई दिशा प्रदान करता है।

–संकलित

शब्दार्थ–विकलांग–किसी एक अंग की कमी रहना (handicapped)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) 'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव' का अर्थ क्या है?

(ख) इतिहास और पुराणों के पन्ने किससे भरे हैं?

(ग) एकलव्य के पिता का नाम क्या था?

(घ) एकलव्य ने गुरुदक्षिणा में क्या भेंट किया?

(ङ) एकलव्य की साधना में खलल क्यों पड़ रही थी?

(च) यह कहानी क्या सिद्ध करती है?

लिखित

1. जोड़कर लिखिए–

क	ख	
(क) गुरु द्रोणाचार्य	गुरुदक्षिणा में भेंट किया	....
(ख) अर्जुन	गुरु द्रोणाचार्य जी	....
(ग) श्वान	गुरु द्रोणाचार्य का प्रिय शिष्य	....
(घ) मानसगुरु	कुत्ता, जो कौरव-पांडवों के साथ था	....
(ङ) अँगूठा	राजगुरु	....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को विद्या देने से मना क्यों किया?

(ख) एकलव्य ने वन में जाकर क्या किया?

(ग) 'विश्वमंगलकारिणी' का क्या तात्पर्य है और इसकी क्या आवश्यकता है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) विद्या न देकर भी गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरुदक्षिणा ले ली। क्या यह सही है? पक्ष-विपक्ष में लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) भारतीय संस्कृति 'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव' एवं 'आचार्य देवो भव' पर टिकी है। क्या आप इससे सहमत हैं? चर्चा करके लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूँ पाय, बलिहारी गुरु आपणे गोविंद दियो बताय।" इस दोहे के भावार्थ के आधार पर एक कहानी लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. • वे सिर्फ़ राजकुमारों को विद्यादान करते थे।
   • एकलव्य तीर चला रहा है।
   • धनुष चलाने की कला वह आत्मसात कर लेगा।

उपर्युक्त वाक्यों को ध्यान से पढ़िए। क्या आपको इनमें कुछ अंतर पता चला? आपने बिलकुल ठीक पहचाना।

पहला वाक्य भूतकाल, दूसरा वाक्य वर्तमान काल तथा तीसरा वाक्य भविष्यत् काल का है। जो कार्य बीते समय में हो गया हो, उसे **भूतकाल** कहते हैं। जो वर्तमान समय में चल रहा है, उसे वर्तमान काल तथा जो कार्य भविष्य में होगा, उसे **भविष्यत् काल** कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनके काल लिखिए–

(क) भारतीय संस्कृति अपने-आप में अनूठी है। ....

(ख) बिना अँगूठे के धनुष चलाने की कला वह आत्मसात कर लेगा। ....

(ग) द्रोणाचार्य अर्जुन के मोह में अंधे हो गए थे। ....

(घ) वह एकलव्य के पास पहुँचे। ....

(ङ) वह वन में चला गया। ....

2. एक-सा अर्थ बताने वाले शब्दों को **पर्यायवाची** शब्द कहा जाता है; जैसे–

गुरु – अध्यापक, शिक्षक, आचार्य

नारी – वनिता, स्त्री, ललना

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्दों से अलग अर्थ वाले शब्द पर ( ) गोला लगाइए–

(क) इच्छा	–	अभिलाषा	चाह	(प्रेम)	कामना
(ख) पुत्र	–	सुत	तनय	बेटा	आत्मजा
(ग) बादल	–	जलधर	पयोद	घन	समीर
(घ) जंगल	–	विपिन	कानन	बगीचा	वन

3. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) खलल पड़ना – ..बाधा आना..........................

....

(ख) अभ्यास करना – ....

....

(ग) स्वीकार न करना – ....

....

(घ) निपुणता – ....

....

(ङ) धन्य समझना – ....

....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर आप एकलव्य की जगह होते तो अपने गुरु को किस प्रकार की गुरुदक्षिणा देते? इस विषय में चर्चा करके गुरु-शिष्य के वार्तालाप को लिखिए।

क्रियाकलाप

- "गुरु द्रोणाचार्य एक महान गुरु रहे हैं।" इस कथन पर विचार करके द्रोणाचार्य जी के जीवन पर एक निबंध लिखिए।

9 जयंती आज़ादी की

चिंतन-मनन

आज़ादी की पुकार महात्मा गांधी जी ने की थी। आज़ादी के लिए लड़ने वाले कई शूरवीर थे, उनके नाम इतिहास के पन्नों पर नहीं हैं। उन सबको एकजुट करने वाले आज़ादी के पुजारी महात्मा गांधी जी थे। उनके कार्यों को याद करता यह एक आज़ादी का गीत है।

याद स्वदेश और खादी की
आज जयंती आज़ादी की।

किसको भला दासता भाती
पशु-पक्षी तक को न सुहाती,
सुख-सुविधा मनचाहा जीवन
मगर गुलामी रास न आती।

वीरों ने दी थी कुर्बानी
प्राण तजे अनगिन बलिदानी,
माँ-बहनों के त्याग से लिखी
स्वतंत्रता की अमिट कहानी।

पावन धरती है गांधी की,
आज जयंती आज़ादी की।

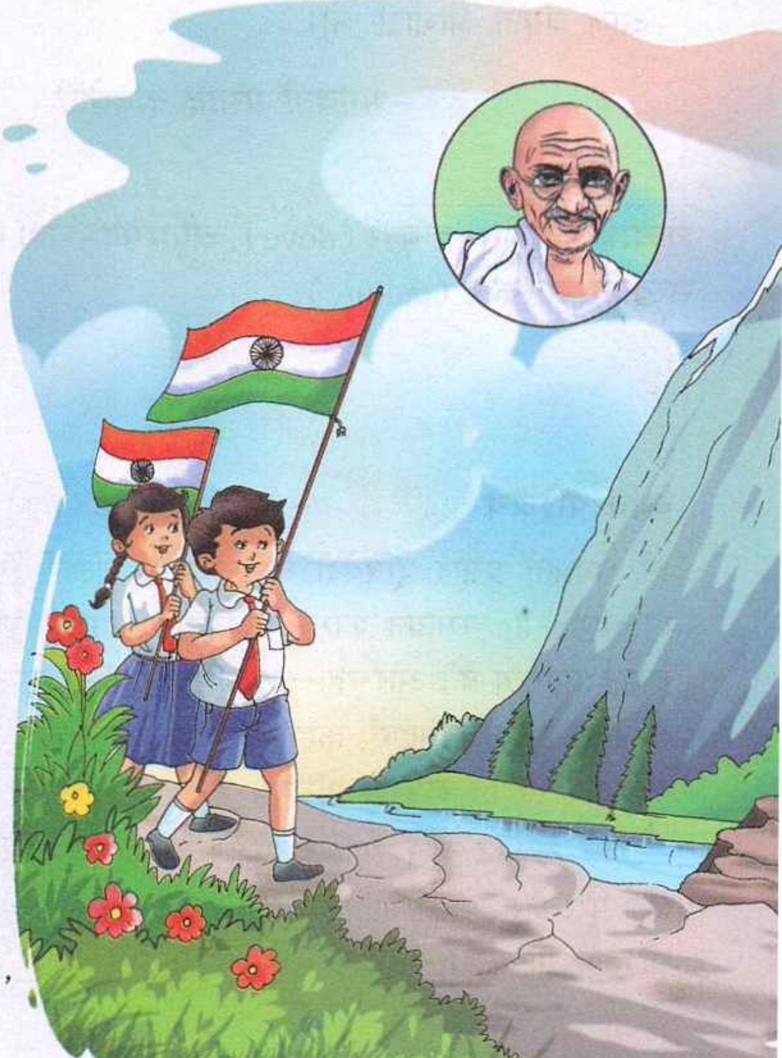

शब्दार्थ–**स्वदेश**–अपना देश (mother land),
गुलामी–दासता, पराधीन (slavery),
त्याग–न्योछावर करना (sacrifice)

शांति कपोत उड़ाए हमने
प्रगति-अश्व दौड़ाए हमने,
खुशहाली-विकास के झंडे
चौतरफा फहराए हमने।

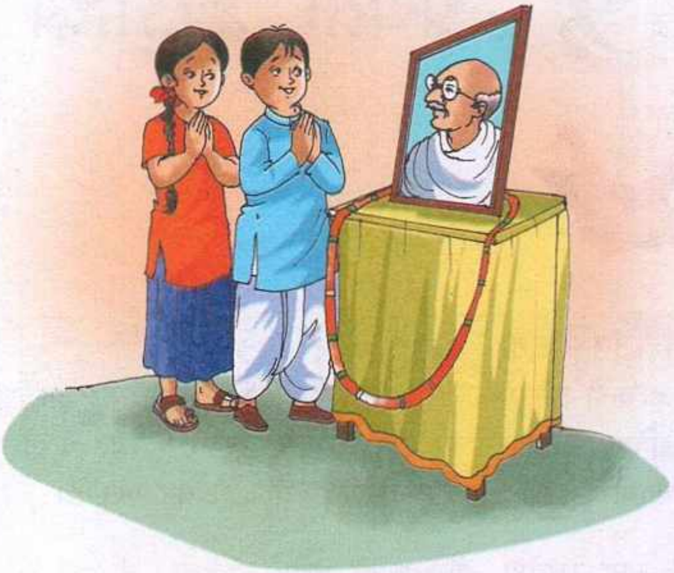

आज़ादी का अलख जगाएँ
सदा स्वदेशी ही अपनाएँ,
अपनी माता, अपनी भाषा
अपनी संस्कृति के गुण गाएँ।

दिशा मोड़ दें हर आँधी की
आज जयंती आज़ादी की।

–भगवती प्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ–कपोत–कबूतर (dove), **चौतरफा**–चारों तरफ़ (sorrounding), **संस्कृति**–संस्कार (culture)

कवि परिचय

श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी का जन्म 3 जुलाई 1955 को बलिया, उत्तर प्रदेश में हुआ। इन्होंने एम०एस०सी० रसायन शास्त्र में किया। भगवती प्रसाद द्विवेदी विज्ञान के छात्र रहे, पर उनका रुझान साहित्य की ओर रहा। इनकी लगभग 83 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें बाल साहित्य के साथ-साथ कविताएँ, कहानियाँ, आलोचना तथा लोककथाओं का समावेश है। इनकी 251 बाल कविताएँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

इन्हें उत्कृष्ट बाल-साहित्य सृजन हेतु चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, शकुंतला बाल साहित्य पुरस्कार, जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। बाल साहित्य का सर्वोच्च सम्मान 'बाल साहित्य भारती' भी इन्हें प्राप्त है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) याद किसकी आती है?

(ख) गुलामी किसको रास नहीं आती?

(ग) वीरों ने क्या किया?

(घ) पावन धरती किसकी है?

(ङ) झंडे कहाँ फहराए गए?

(च) सदा क्या अपनाना चाहिए?

लिखित

1. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) "आज़ादी का अलख जगाएँ,
सदा स्वदेशी ही अपनाएँ"

(ख) "अपनी माता, अपनी भाषा
अपनी संस्कृति के गुण गाएँ।"

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'मगर गुलामी रास न आती' का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'शांति कपोत उड़ाए हमने' से क्या तात्पर्य है?

(ग) 'दिशा मोड़ दें हर आँधी की' चर्चा कर उत्तर लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'जयंती आज़ादी की' कविता का सार लिखिए।

(ख) आज़ादी के लिए देशभक्त वीरों ने किस प्रकार के बलिदान दिए होंगे?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को गद्य रूप में लिखिए–

(क) वीरों ने दी थी कुर्बानी

....

(ख) पावन धरती है गांधी की

....

(ग) प्रगति-अश्व दौड़ाए हमने

....

(घ) खुशहाली-विकास के झंडे चौतरफा फहराए हमने

....

2. अच्छा – बुरा – ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विपरीतार्थक हैं। इन्हें विलोम शब्द या उलटे अर्थ वाले शब्द कहते हैं।

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) सुख	– ..दुख..........	(ख) गुलामी	– ....
(ग) वीर	–	(घ) शांति	– ....
(ङ) विकास	–	(च) स्वदेशी	– ....
(छ) गुण	–	(ज) आज	– ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- यदि देश को आज़ाद कराने में आपकी मदद की ज़रूरत हो तो आप किस प्रकार मदद करेंगे?

क्रियाकलाप

- निम्नलिखित संकेत बिंदुओं की सहायता से छोटी-सी कविता लिखिए–

ज्ञान ⋯ बाँटेंगे ⋯ खुशियों के दीप ⋯ निरक्षरता ⋯ भगाएँगे ⋯ खुशहाल भारत ⋯ साक्षर भारत ⋯ निर्माण करेंगे। बापू का ⋯ स्वराज्य की कल्पना को ⋯ साकार करेंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अतिरिक्त पठन

पदकों की कहानी

ताडितस्थ हि योधस्य श्लाघनीयेन कर्मणा।।
आकालातरिता पूजा नारायत्मेव वेदनाम्।।

"शत्रु के विरुद्ध लड़ने पर जब योद्धाओं को सम्मानित किया जाता है या सराहा जाता है तो उनका बलिदान सार्थक होता है, उनका दर्द कम होता है।"

भारत सरकार कला, शिक्षा, उद्योग, साहित्य, विज्ञान, खेल, चिकित्सा और समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को पुरस्कृत करती है। कुछ सम्मान उनके जीवनकाल में दिए जाते हैं तो कुछ मरणोपरांत दिए जाते हैं। वैसे तो कई सम्मान सरकार की ओर से दिए जाते हैं पर उनमें से कुछ का परिचय इस प्रकार है–

भारत रत्न पुरस्कार–'भारत रत्न' भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। यह सम्मान राष्ट्रीय सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। इन सेवाओं में कला, साहित्य, विज्ञान व सार्वजनिक सेवा शामिल हैं। इस सम्मान की स्थापना 2 जनवरी, 1954 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद द्वारा की गई थी। प्रारंभ में इस सम्मान को मरणोपरांत देने का प्रावधान नहीं था, यह प्रावधान 1955 में जोड़ा गया। सबसे पहला पुरस्कार प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन को दिया गया। डॉ० अब्दुल कलाम को भी यह पुरस्कार 1997 में दिया गया। इसका कोई लिखित प्रावधान नहीं है कि भारत रत्न केवल भारतीय नागरिकों को ही दिया जाए। यह पुरस्कार स्वाभाविक रूप से भारतीय नागरिक बनी मदर टेरेसा को दिया गया तथा दो अन्य गैर भारतीय– खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान और नेल्सन मंडेला को 1990 में प्रदान किया गया।

भारत रत्न

पद्मविभूषण, पद्मभूषण, पद्मश्री पुरस्कार–इन्हें 'पद्म पुरस्कार' भी कहा जाता है। भारत सरकार द्वारा आमतौर पर यह सिर्फ़ भारतीय नागरिकों को दिया जाने वाला सम्मान है। यह पुरस्कार शासकीय सेवकों द्वारा प्रदत्त सेवा सहित किसी भी क्षेत्र में; जैसे–कला,

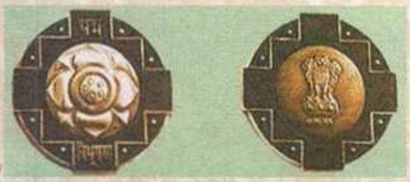

पद्मविभूषण

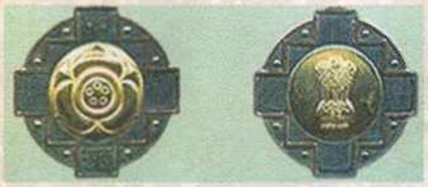

पद्मभूषण

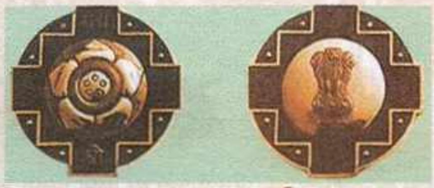

पद्मश्री

शिक्षा, उद्योग, साहित्य, विज्ञान, खेल, चिकित्सा, समाज सेवा और सार्वजनिक जीवन आदि में उनके विशिष्ट योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए दिया जाता है। पद्म पुरस्कारों की सिफ़ारिशें राज्य सरकारों, संघ राज्य प्रशासनों, केंद्रीय मंत्रालयों, विभागों, उत्कृष्ट संस्थानों आदि से प्राप्त की जाती हैं जिन पर पुरस्कार समिति द्वारा विचार किया जाता है। पुरस्कार समिति की सिफ़ारिश के आधार पर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर इन पद्म सम्मानों की घोषणा की जाती है।

परमवीर चक्र–'परमवीर चक्र' सेना तथा उससे जुड़े हुए लोगों को दिया जाने वाला भारत का सर्वोच्च वीरता सम्मान है। यह पदक शत्रु के सामने अद्वितीय साहस का परिचय देने पर दिया जाता है। यह सम्मान 26 जनवरी, 1950 में शुरू किया गया। यह पदक मरणोपरांत भी दिया जाता है।

परमवीर चक्र

अशोक चक्र

अशोक चक्र–मरणोपरांत सैनिक की देश के लिए समर्पण की भावना के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह 4 जनवरी, 1952 में आरंभ किया गया। इसे तीन भागों में बाँटा गया–प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग तथा तृतीय वर्ग।

बहादुरी सम्मान–बच्चों की असाधारण बहादुरी और निस्वार्थ त्याग को सम्मान देने के लिए 'भारतीय बाल कल्याण परिषद्' द्वारा 1957 में राष्ट्रीय पुरस्कार देना आरंभ किया गया था। प्रत्येक वर्ष सोलह वर्ष की आयु से कम बच्चों को ये पुरस्कार दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों की घोषणा बाल दिवस 14 नवंबर को की जाती है। प्रधानमंत्री द्वारा गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर यह पुरस्कार दिया जाता है। विजेताओं को एक पदक, प्रमाण-पत्र और सांकेतिक रूप में नकद राशि प्रदान की जाती है।

इस प्रकार उत्कृष्ट कार्यों की सराहना के लिए कई सम्मान दिए जाते हैं। अन्य सम्मान हैं–सर्वोत्तम युद्ध सेवा सम्मान, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, समर सेवा स्टार, रक्षा पदक, होमगार्ड, उत्तम जीवन रक्षा पदक, विदेशी सेवा पदक आदि।

–संकलित

10 काबुलीवाला

चिंतन-मनन

'काबुलीवाला' रवींद्रनाथ टैगोर की एक भावनाप्रधान मनोवैज्ञानिक कहानी है। काबुलीवाला छोटी मिनी में अपनी बेटी का रूप देखता है। अपने कर्तव्य को याद करके वह अपने देश की ओर चल पड़ता है। इस कहानी में काबुलीवाला और मिनी के भावनात्मक लगाव को दर्शाया गया है।

मेरी पाँच वर्ष की छोटी बेटी मिनी से पल भर भी बात किए बिना नहीं रहा जाता था। उसकी माता उसे ज़्यादा बोलने के लिए डाँटती-फटकारती थीं किंतु मैं ऐसा नहीं करता था। वह मेरे साथ ही अपने भावों का आदान-प्रदान अधिक करती थी।

मेरा घर सड़क के किनारे ही था। एक दिन एक काबुलीवाले को सड़क पर जाते देख मिनी ने उसे आवाज़ लगाई–"काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले।" मिनी के चिल्लाने पर ज्यों ही काबुलीवाले ने उसकी ओर मुँह फेरा और घर की ओर बढ़ने लगा; त्यों ही मिनी भय खाकर भीतर चली गई। उसे विश्वास था कि वह बच्चों को पकड़कर अपने थैले में डालकर ले जाता है।

काबुलीवाले ने आकर मुझे अभिवादन किया। उसे घर बुलाकर कुछ न खरीदना अच्छा न था। उससे मैंने कुछ सौदा खरीदा।

शब्दार्थ–अभिवादन–प्रणाम (obeisance)

बातों-ही-बातों में मुझे पता चला कि उसका नाम रहमत था। रहमत ने इधर-उधर की कुछ बातें करके पूछा–"बाबू जी, आपकी बच्ची कहाँ गई।"

मैंने बच्ची के मन से उसका भय दूर करने के लिए उसे भीतर से बुलवा लिया। रहमत ने उसे कुछ काजू एवं किशमिश देनी चाही पर उसने नहीं ली और दुगुने डर के साथ मेरे पैरों से लिपट गई। उसका पहला परिचय इस प्रकार हुआ।

।।2।।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन मैं किसी आवश्यक कार्य से बाहर जा रहा था। देखा कि बाहर दरवाज़े के पास बेंच पर बैठी हुई मिनी काबुलीवाले से हँस-हँसकर बातें कर रही थी। काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठकर मुसकराता हुआ उसकी बातें सुन रहा था। मिनी को अपने पाँच वर्ष के जीवन में मेरे सिवाय, ऐसे **धैर्य** वाला श्रोता शायद ही कोई मिला हो। मिनी को उसने ढेर सारे मेवे दे रखे थे। मैंने रहमत को एक **अठन्नी** देते हुए कहा–"आगे से इसे मेवा मत देना।"

कुछ देर बाद घर लौटकर देखा तो उस अठन्नी ने बड़ा भारी उपद्रव मचा रखा था। मिनी रो-रोकर कह रही थी, "मैंने काबुलीवाले से माँगी नहीं थी। उसने मुझे स्वयं दी है।" मैंने आकर मिनी को इस मुसीबत से निज़ात दिलाई। पता चला कि मिनी से काबुलीवाले की यह दूसरी ही मुलाकात थी। धीरे-धीरे काबुलीवाले ने पिस्ता-बादाम दे-देकर उसके हृदय पर अधिकार कर लिया था।

हमारे देश में लड़कियाँ जन्म से ही ससुराल से परिचित रहती हैं, लेकिन हम तनिक नई पीढ़ी के होने के कारण बच्ची को ससुराल के विषय में कुछ ज़्यादा ज्ञानी नहीं बना पाए थे। रहमत मिनी से कहता–"तुम ससुराल कभी मत जाना, अच्छा।" मिनी रहमत से उलटा पूछती–"तुम ससुराल जाओगे?" रहमत हँसकर कहता–"हम ससुर को मारेगा।" मिनी 'ससुर' नामक किसी अनजाने जीव की कल्पना करके हँसती।

मिनी की माँ बड़ी **वहमी** तबीयत की थी। वह काबुलीवाले पर नज़र रखने के लिए मुझसे कहती रहती थी। हर वर्ष माघ मास में रहमत अपने देश लौट जाता था। इस समय वह घूम-घूमकर व्यापारियों से अपना पैसा इकट्ठा करता, लेकिन मिनी से उसकी भेंट एक बार अवश्य हो जाती थी।

अचानक एक दिन मैंने देखा कि रहमत को दो सिपाही पकड़े हुए लिए जा रहे थे। रहमत के ढीले-ढाले कुरते पर खून के दाग थे और एक सिपाही के हाथ में खून से लथपथ छुरा। मैंने सिपाही से पूछा–"क्या बात है?"

शब्दार्थ–धैर्य–साहस (endurance), **अठन्नी**–पचास पैसे का सिक्का (half of a rupee), **वहमी**–शंकित (in doubt)

कुछ सिपाही से तथा कुछ पड़ोसियों से पता चला कि रहमत को किसी से अपने पैसे लेने थे। बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर घोंप दिया। इतने में 'काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला!' पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई। आते ही उसने पूछा–"तुम ससुराल जाओगे?" रहमत ने कहा–"वहीं तो जा रहा हूँ।"

॥3॥

रहमत का ध्यान धीरे-धीरे हमारे मन से उतर गया था। कितने ही वर्ष बीत गए थे।

आज मिनी का विवाह है। पूरे घर में चहल-पहल है। मैं अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठा हिसाब-किताब लिख रहा था। इतने में रहमत आया और अभिवादन करके एक कोने में खड़ा हो गया। पहले तो मैं उसे पहचान न सका, फिर मैंने पूछा–"कब आए।"

उसने कहा–"आज ही आया हूँ। मैं बच्ची से मिलना चाहता हूँ।"

मैंने उसे टालने के लिए कहा–"हमारे घर में कुछ आवश्यक कार्य है। तुम कल आना।"

मायूस होकर वह बोला–"क्या बच्ची को तनिक देख भी नहीं सकता?"

मैंने कहा–"आज घर में बहुत काम है। सो किसी से भेंट न हो पाएगी।"

वह बोला–"यह अंगूर, बादाम, किशमिश बच्ची के लिए लाया था, उसको दे दीजिएगा।"

रहमत ने एक पुराने कागज़ पर अपनी पुत्री के हाथ की छाप दिखाते हुए कहा–"यह मेरी बच्ची के हाथ के निशान हैं, मैं इसी के सहारे यहाँ अपने दिन काटता हूँ।"

शब्दार्थ–मायूस–उदास (deject)

उसकी इस भावना को देखकर मैं भूल गया कि मैं एक उच्च वंश का रईस हूँ। मैंने तत्काल मिनी को बाहर बुलवाया। अंदर घर में इस बात पर आपत्ति की गई। विवाह के वस्त्रों एवं अलंकारों से सजी हुई मिनी मेरे पास आकर लजाती हुई खड़ी हो गई। उसे इस दशा में देखकर रहमत पहले तो सकपका गया, फिर हँसकर बोला–"लल्ली, ससुराल जा रही हो क्या?"

मिनी अब ससुराल का अर्थ अच्छी तरह समझती थी। वह शर्म से लाल हो गई और वापिस भीतर चली गई।

मिनी के जाने के बाद रहमत गहरी साँस लेकर फ़र्श पर बैठ गया। इन आठ वर्षों में उसकी बेटी की न जाने क्या दशा हुई होगी? वह भी अब विवाह के योग्य हो गई होगी।

मैंने उसे कुछ रुपए निकालकर देते हुए कहा–"तुम अपने देश जाकर अपनी बेटी की सुध लो।"

–रवींद्रनाथ टैगोर

शब्दार्थ–उच्च वंश–बड़ा खानदान (high gentry), **अलंकार**–गहने, जेवर (ornaments)

लेखक परिचय

रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 में कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। इन्हें गुरुदेव नाम से भी जाना जाता है। रवींद्रनाथ एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार से सम्मानित व्यक्ति हैं। इनकी रचनाएँ हैं–*गीतांजली, गीतिमाल्य, भोलानाथ, क्षणिका* । इनकी मृत्यु 7 अगस्त, 1941 को कोलकाता में हुई।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

    (क) लेखक का घर कहाँ था?

    (ख) काबुलीवाले का व्यवहार मिनी के साथ कैसा था?

    (ग) काबुलीवाला हर वर्ष किस मास अपने देश जाता?

    (घ) रहमत अपने दिन किस प्रकार काटता था?

    (ङ) मिनी को विवाह के जोड़े में देखकर काबुलीवाले को किसकी याद आई?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) .... की उम्र दस साल की थी।

(ख) काबुलीवाला .... बेचता था।

(ग) मिनी की माँ बड़ी वहमी .... की थी।

(घ) .... मिनी से मिलना चाहता था।

(ङ) रहमत ने एक कागज़ पर अपनी बेटी के हाथों की .... दिखाई।

2. किसने, किससे कहा?

(क) "बाबू जी, आपकी बच्ची कहाँ गई?" ....

(ख) "आगे से इसे मेवा मत देना।" ....

(ग) "लल्ली, ससुराल जा रही हो क्या?" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रहमत को सिपाही क्यों पकड़कर ले जा रहे थे?

(ख) मिनी के घर के लोग मिनी को रहमत से क्यों मिलवाना नहीं चाहते थे?

(ग) मिनी काबुलीवाले को देखकर क्यों डरी होगी?

(घ) कहानी का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'काबुलीवाले ने पिस्ता-बादाम देकर उसके हृदय पर अधिकार कर लिया था।' इस वाक्य का क्या तात्पर्य है? इससे काबुलीवाले का कौन-सा गुण उजागर होता है?

(ख) 'ससुराल मत जाना', काबुलीवाले के इस कथन का क्या कारण हो सकता है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

(ग) 'बच्चों के मन में भेद-भाव नहीं होते, उन्हें जिस रंग में ढालो, उसी रंग में ढल जाते हैं' इस विषय पर एक परिच्छेद लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. 'स्वावलंबी'– स्व + अवलंब + ई

स्वावलंबी शब्द में मूल शब्द अवलंब है, इसमें स्व उपसर्ग है और ई प्रत्यय है। हमारी भाषा में अनेक शब्द ऐसे हैं, जो मूल शब्द में उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर बनाए गए हैं।

निम्नलिखित शब्दों को आप भी ऐसे ही जोड़कर पूरा कीजिए–

उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द
अभि	मान	ई	....
अ	सफल	ता	....
स्व	तंत्र	ता	....
बे	कार	ई	....
अप	मान	इत	....
सु	लभ	ता	....
परि	पूर्ण	ता	....
स्व	चाल	इत	....
बे	चैन	ई	....

2. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

(क) थैला – .... (ख) बात – ....

(ग) दरवाज़ा – .... (घ) कमरा – ....

(ङ) बच्चा – .... (च) किताब – ....

3. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) अभिवादन – ....

(ख) उपद्रव – ....

(ग) परिचित – ....

(घ) भेंट – ....

(ङ) निशान – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति आया है, जिससे आप प्रेरित हुए हों; जैसे–आपके पड़ोसी, आपका मित्र, अध्यापक या फिर अन्य कोई? उनका संक्षिप्त वर्णन करके उनके बारे में या फिर उनसे संबंधित किसी ऐसी घटना के बारे में लिखिए जिसे आप भूल नहीं पाए हों।
2. 'बच्चे प्रेम के भूखे होते हैं' इस विषय पर चर्चा कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

क्रियाकलाप

1. नीचे बने कार्टूनों की तरह ही कुछ कार्टूनों का संग्रह करके उनका एलबम तैयार कीजिए।

2. श्री केशव शंकर पिल्ले अच्छे कार्टूनिस्ट थे। उनकी जीवनी की चर्चा कीजिए।

11 वर दे, वीणावादिनी

चिंतन-मनन

कवि विद्या की देवी सरस्वती से यह प्रार्थना करता है कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति ज्ञानवान एवं समृद्ध हो। प्रकृति में, पशु-पक्षियों में और उनके स्वरों में भी नवीनता हो।

वर दे, वीणावादिनी वर दे।
वर दे, वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद-तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

नव गति, नव लय-ताल, छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मंद्ररव
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर नव स्वर दे।

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ–वर दे–वरदान देने वाली (Goddess who blesses), **रव**–ध्वनि (sound), **नव**–नवीन (new), **अंध उर**–अंधकार भरा हृदय (heart full of sorrow), **ज्योतिर्मय**–प्रकाशमय (full of light), **निर्झर**–झरना (waterfall), **कलुष**–पाप, गंदगी (sin), **तम**–अंधकार (darkness), **जगमग**–प्रकाशित (lightened), **नवल**–नया (new), **विहग**–पक्षी (bird), **वृंद**–समूह (group), **पर**–पंख (feather)

कवि परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के श्रेष्ठ छायावादी कवि हैं। उन्हें युगांतकारी कवि कहा जाता है। *अनामिका, गीतिका, आराधना, कुकुरमुत्ता, नये पत्ते* आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। प्रस्तुत कविता 'गीतिका' से ली गई है। इस कविता में कवि सरस्वती से प्रार्थना कर रहा है कि भारत में एक नया स्वर भर दे, अज्ञान दूर कर दे, इस तरह का परिवर्तन पैदा करे कि सारे देश में एक नई चेतना, नया उत्साह एवं नई उमंग पैदा हो जाए।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) कवि किससे वर माँग रहा है?

(ख) वीणावादिनी किसे कहा जाता है?

(ग) किस तरह के बंधन काटने के लिए कहा गया है?

(घ) 'विहग-वृंद' को किसकी आवश्यकता है?

(ङ) कवि भारत में क्या भरने की प्रार्थना करते हैं?

लिखित

1. पद्य पूरा करके लिखिए–

नव गति ....

.... मंद्रख

नव नभ ....

.... स्वर दे।

2. **निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित भावार्थ लिखिए–**

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद-तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) कवि किस बंधन की बात कर रहे हैं? वह बंधन किस तरह टूट सकता है?

(ख) 'नव पर नव स्वर दे।' इससे किसको और कैसा स्वर मिलेगा?

(ग) 'प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव, भारत में भर दे।' इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है? चर्चा करके लिखिए।

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–**

(क) 'अन्नदानं महादानं, विद्यादानं महत्तरम' अर्थात् अन्न दान महादान है, परंतु इससे क्षणिक तृप्ति मिलती है और विद्या इससे भी बड़ा दान है जो जीवनपर्यंत साथ देती है, इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) 'विद्या विनयेन शोभिते' इस उक्ति पर एक कहानी लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. काव्य की भाषा आम बोलचाल की भाषा से अलग होती है। इसमें एक विशेष प्रकार का सौंदर्य होता है।

निम्नलिखित पद्यांश को अपनी भाषा में लिखिए–

वर दे, वीणावादिनी वर दे।
वर दे, वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

....

....

....

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

(क) नव – .... (ख) निर्झर – ....

(ग) तम – .... (घ) पर – ....

(ङ) नभ – .... (च) कलुष – ....

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) तम – ....

(ख) नवल – ....

(ग) विहग – ....

(घ) ज्योतिर्मय – ....

(ङ) वृंद – ....

(च) जलद – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर आपके सामने भगवान आ जाएँ तो आप उनसे कौन-सा वर माँगेंगे– धन-दौलत, शोहरत, विद्या या आरोग्य का? आप किसे पहला स्थान देंगे? इनमें से आपको क्या महत्वपूर्ण लगता है? एक परिच्छेद लिखिए।

क्रियाकलाप

- निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ किन कवियों की हैं? चित्र चिपकाकर उनके विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए–

❖ नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पगतल में
पीयूष स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।

❖ निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

❖ पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।

❖ हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरो दरद न जान्यो कोय।
घायल की गति घायल जाणै की जिण लाई होय।

❖ वियोगी होगा पहला कवि
आह से निकला होगा गान।

❖ मैया मोरी! मैं नहिं माखन खायो।
भोर भये गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।

12 परीक्षा

चिंतन-मनन

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के महान कहानीकार, उपन्यासकार रहे हैं। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' में संग्रहित हैं। 'परीक्षा' कहानी में उन्होंने लालची, मौकापरस्त, स्वार्थी, ढोंगी लोगों का पर्दाफ़ाश करते हुए यह बताया है कि निस्वार्थ तथा सेवाभाव से काम करने वाला व्यक्ति जीवन की 'परीक्षा' में सफल होता है।

देवगढ़ की रियासत के दीवान सरदार सुजानसिंह काफ़ी बूढ़े हो गए थे। उन्होंने महाराज से विनती की कि अब वह कुछ समय परमात्मा का ध्यान करना चाहते हैं। शरीर अब शिथिल हो रहा है और ऐसे में कहीं कोई भूल-चूक हो गई, तो बुढ़ापे में दाग लग जाएगा।

राजा साहब अपने नीतिकुशल अनुभवी दीवान का बहुत आदर करते थे। पहले तो उन्हें समझाया पर अंत में नया दीवान चुनने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं पर डाल दी। अगले दिन प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान के लिए विज्ञापन निकला-"जो सज्जन अपने-आपको देवगढ़ रियासत के दीवान के पद के योग्य समझते हों, वे वर्तमान दीवान सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। मंदाग्नि के मरीज़ को यहाँ आने की आवश्यकता नहीं है। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार को परखा जाएगा। जो उम्मीदवार इस परीक्षा में खरा उतरेगा, वह ही इस पद के योग्य होगा।"

शब्दार्थ–नीतिकुशल–नीति में निपुण (well-mannered, tactful), **मंदाग्नि**–पाचन शक्ति का कमज़ोर होना (week digestion)

इस विज्ञापन ने सभी जगह तहलका मचा दिया। ऐसा ऊँचा पद और इतनी आसानी से मिल जाए। सैकड़ों व्यक्ति अपना-अपना भाग्य आज़माने के लिए चल दिए। देवगढ़ में विभिन्न राज्यों के नए-नए मनुष्य आने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से झुंड-के-झुंड उतरते। कोई पंजाब से, कोई मद्रास से, कोई नए फ़ैशन का, तो कोई पुरानी सादगी को समेटे हुए। सबसे अधिक संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से पर्दा तो ढँका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन सभी आगंतुकों के आदर-सत्कार का बहुत अच्छा प्रबंध किया हुआ था। रोज़ेदार मुसलमानों की तरह लोग एक-एक दिन काटकर गिना करते थे। हर व्यक्ति अपने-आपको सर्वश्रेष्ठ दिखाने की कोशिश में था। मि० अ नौ बजे तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मि० ब को हुक्का पीने की लत थी, आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके कमरे में सिगार पीते हैं। मि० द, स और ज से उनके घर के नौकरों की नाक में दम था, लेकिन आजकल ये सज्जन 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। मि० ल को किताबों से घृणा थी, किंतु आजकल ये बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात करो, वही नम्रता का पुजारी और सदाचार का देवता बना नज़र आता था। शर्मा जी रात से ही वेद-मंत्र पढ़ने लगते और मौलवी साहब को नमाज़ के सिवाय कोई काम न था।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ, सब देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

एक दिन नए फ़ैशनवालों को सूझी कि हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। सोचा, शायद यह हुनर ही कुछ काम आ जाए। इसे भी क्यों न आज़माया जाए। पक्का निश्चय होने के बाद फ़ील्ड बन गया और खेल शुरू हो गया।

शब्दार्थ–**सनद**–प्रमाण-पत्र (certificate), **उषा**–सुबह (morning), **लत**–व्यसन (addict), **हुनर**–कारीगरी (talent)

गेंद किसी दफ़तर के नए अप्रेंटिस की तरह इधर-से-उधर ठोकरें खाने लगी।

देवगढ़ वालों के लिए यह खेल बिलकुल निराला था। पढ़े-लिखे लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। भाग-दौड़ के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े जोश के साथ चल रहा था। लोग गेंद को लेकर इस तेज़ी के साथ दौड़ते मानो कोई लहर बढ़ी आ रही है। दूसरी तरफ़ के लोग उस गेंद को ऐसे रोक देते, मानो कोई लोहे की दीवार सामने हो।

संध्या तक खेल इसी प्रकार चलता रहा। खेलने वाले पसीने से तर-बतर हो रहे थे, लेकिन हार-जीत का फ़ैसला न हो सका।

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से कुछ दूरी पर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना-जाना पड़ता था। एक किसान अनाज से भरी गाड़ी लेकर इस रास्ते से आया। एक तो नाले में कीचड़ था, दूसरा नाले की चढ़ाई अधिक थी। इसलिए गाड़ी ऊपर न चढ़ पाती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, तो कभी हाथ से पहिए को ऊपर धकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर ही न चढ़ती। थोड़ी-सी ऊपर चढ़कर वापिस नीचे आ जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा बार-बार इधर-उधर याचना-भरी दृष्टि से देखता, किंतु कोई सहायक नज़र नहीं आता। अनाज से भरी गाड़ी छोड़कर भी नहीं जा सकता था। बड़ी मुसीबत में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी भी वहाँ से गुज़रने लगे। किसान ने उनकी तरफ़ दयनीय दृष्टि से देखा, किंतु मेहमानों से मदद माँगने का उसका साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा, मगर देखकर भी अनदेखा कर दिया। उन आँखों में सहानुभूति न थी, स्वार्थ और मद था। प्रेमभाव व उदारता कहीं दिखाई नहीं दे रही थी।

मनुष्यों के उस झुंड में एक उदार, दयालु मनुष्य भी था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैर में चोट लग गई थी। वह लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था। अचानक उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। गाड़ीवान पर दृष्टि जाते ही वह उसकी समस्या समझ गया। उसने हॉकी एक किनारे रखकर कोट उतारा और किसान के पास जाकर बोला–"मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा एक लंबा और गठे हुए बदन का सुदृढ़ नवयुवक सामने खड़ा था। वह झुककर बोला–"हुज़ूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?" युवक ने कहा–"मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो। अच्छा, अब तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाएगी।"

शब्दार्थ–पथिक–यात्री (traveller), **सुदृढ़**–मज़बूत (solid)

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहिए को ज़ोर लगाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर ज़ोर लगाया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

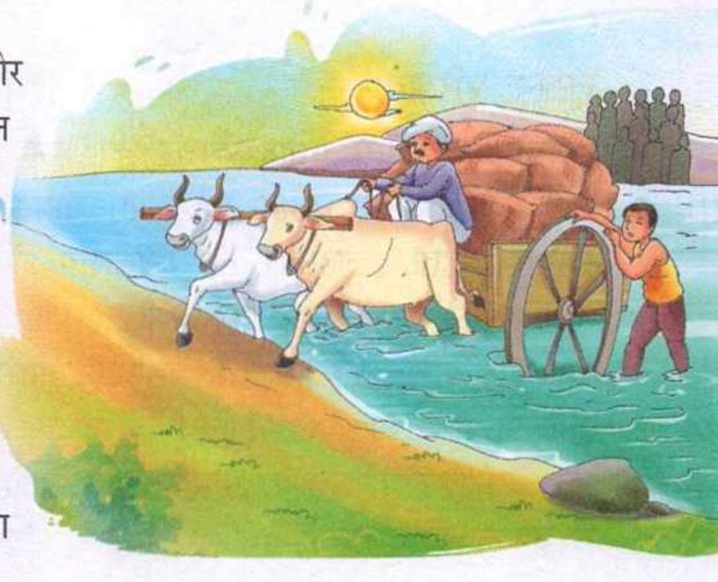

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और उसे धन्यवाद देते हुए बोला–"आज आपने मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात मुझे यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा–"अब मुझे कुछ इनाम देना चाहते हो?" किसान ने गंभीर भाव से कहा–"नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

यह सुनते ही युवक ने किसान की तरफ़ गौर से देखा। उसके मन में संदेह हुआ कि कहीं यह किसान सरदार सुजानसिंह ही तो नहीं हैं! किसान ने उसके मन की बात भाँप ली। वह मुसकराकर बोला–"गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलते हैं।"

महीना पूरा होने पर चुनाव का दिन आ गया। उम्मीदवार उषाकाल से ही अपनी किस्मत का फ़ैसला सुनने को बेताब थे। प्रतीक्षा में समय कठिनाई से व्यतीत होता है। आज न जाने किसके भाग्य के द्‌वार खुलेंगे!

संध्या के समय राजा का दरबार सजाया गया। सभी उम्मीदवार दिल थामकर बैठे थे।

सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा–"दीवानी के उम्मीदवार महाशयो, मैंने आपको जो कष्ट दिया, उसके लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ। इस पद के लिए दयावान, उदार, आत्मबल से भरपूर एवं वीर महापुरुष की आवश्यकता थी। सौभाग्य से हमें ऐसा व्यक्ति मिल गया है। ऐसे गुणवाले व्यक्ति संसार में विरले ही होते हैं और जो हैं, वह कीर्ति और मान के उच्च शिखर पर बैठे हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं है। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के लोगों ने उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा। सरदार सुजानसिंह ने आगे कहा–"जो व्यक्ति स्वयं ज़ख्मी होकर एक गरीब किसान की गाड़ी नाले से निकालकर ऊपर चढ़ा दे, ऐसे व्यक्ति में आत्मबल, साहस एवं उदारता जैसे गुण भरपूर होते हैं और ऐसा व्यक्ति सभी का भला चाहेगा। उम्मीद है, आप सब भी इस फ़ैसले से सहमत होंगे।"

–प्रेमचंद

शब्दार्थ–भाँपना–समझना (apprehend), **विरले**–कम मिलने वाले (rare)

लेखक परिचय

भारत के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचंद ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी। प्रेमचंद की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, संपादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) राजा किसका बहुत आदर करते थे?

(ख) समाचार-पत्रों में किसके लिए विज्ञापन निकला?

(ग) बूढ़ा जौहरी किसे कहा गया?

(घ) पढ़े-लिखे लोग किस प्रकार के खेल खेलते थे?

(ङ) सभी उम्मीदवार दिल थामकर क्यों बैठे थे?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) .... देवगढ़ के दीवान थे।

(ख) उम्मीदवारों ने .... खेल खेलने का निश्चय किया।

(ग) गाड़ी .... से भरी थी।

(घ) नारायण ने चाहा तो .... आपको ही मिलेगी।

2. किसने, किससे कहा?

	किसने	किससे
(क) "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"	....	....
(ख) "हुज़ूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?"	....	....
(ग) "अब मुझे कुछ इनाम देना चाहते हो?"	....	....

3. जोड़कर लिखिए–

(क) मुंशी प्रेमचंद को	(*i*) हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।
(ख) समाचार-पत्रों में	(*ii*) ताश एवं शतरंज खेला करते थे।
(ग) पढ़े-लिखे लोग	(*iii*) उपन्यास सम्राट कहा जाता है।
(घ) किसान युवक के सामने	(*iv*) यह विज्ञापन छपा।

....

....

....

....

4. सही या गलत लिखिए–

(क) दूसरों की भलाई का कार्य कभी नहीं करना चाहिए। ....

(ख) संध्या के समय में राजदरबार सजा था। ....

(ग) राजा साहब दीवान साहब का अनादर करते थे। ....

(घ) एक दिन कुछ लोगों ने क्रिकेट खेलने की सोची। ....

(ङ) किसान घोड़ा गाड़ी चला रहा था। ....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) देवगढ़ रियासत के दीवान का नाम क्या था?

(ख) किसान की गाड़ी में क्या भरा था?

(ग) गाड़ी कहाँ फँसी थी?

(घ) किसान ने युवक को धन्यवाद देते हुए क्या कहा?

(ङ) सुजानसिंह ने किसे नया दीवान घोषित किया?

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) मुखिया या मुख्य व्यक्ति को कैसा होना चाहिए? दयावान, धर्मवान या कर्मवान? इन तीनों में आपको कौन-सा गुण मुख्य लगता है? लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) सद्गुणी व्यक्ति सभी का मन जीत लेते हैं। इसके क्या कारण हैं? आपके अनुसार सद्गुणी कौन है? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. नगर की हर गली में मिठाई वाले का स्वर सुनाई पड़ता है।

उपर्युक्त वाक्य में की, में, का इन चिह्नों के कारण वाक्य में पूर्णता आ गई है। इन्हीं संबंध बोधक शब्दों को कारक कहते हैं।

ने, को, से, को, से, में, पर, हे, अरे–ये कारक चिह्न हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में उचित कारक चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

(क) राम .... मोहन .... मारा।

(ख) पेड़ .... फल हैं।

(ग) गिलास .... पानी है।

(घ) सीता .... मुलाकात हुई।

(ङ) ....! तुम कहाँ जा रहे हो।

2. गद्यांश पढ़कर संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से कुछ दूरी पर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना-जाना पड़ता था। एक किसान अनाज से भरी गाड़ी लेकर इस रास्ते से आया। एक तो नाले में कीचड़ था, दूसरा नाले की चढ़ाई अधिक थी। इसलिए गाड़ी ऊपर न चढ़ पाती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, तो कभी हाथ से पहिए को ऊपर धकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर ही न चढ़ती। थोड़ी-सी ऊपर चढ़कर वापिस नीचे आ जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा बार-बार इधर-उधर याचना-भरी दृष्टि से देखता, किंतु कोई सहायक नज़र नहीं आता। अनाज से भरी गाड़ी छोड़कर भी नहीं जा सकता था। बड़ी मुसीबत में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी भी वहाँ से गुज़रने लगे। किसान ने

उनकी तरफ़ दयनीय दृष्टि से देखा, किंतु मेहमानों से मदद माँगने का उसका साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा, मगर देखकर भी अनदेखा कर दिया। उन आँखों में सहानुभूति न थी, स्वार्थ और मद था। प्रेमभाव व उदारता कहीं दिखाई नहीं दे रही थी।

....

....

....

3. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) विनती – ....

(ख) आदर – ....

(ग) परीक्षा – ....

(घ) खेल – ....

(ङ) दिन – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- आपको दीवान का पद मिल जाता, तो आप क्या-क्या करते?

क्रियाकलाप

1. 'गुल्ली-डंडा' प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी के बारे में चर्चा कीजिए और इसके पात्रों के नाम लिखिए।
2. उस घटना का वर्णन कीजिए जब आपने किसी की मदद की हो?

अतिरिक्त पठन

खेल भावना

कई वर्षों के बाद नंदन वन में खेलकूद की विभिन्न प्रतियोगिताओं के भव्य आयोजन की घोषणा हुई। सभी जानवर बहुत खुश थे। सभी को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। सारे खेलों के आयोजन का ज़िम्मा हिरण को सौंपा गया था।

हिरण सोचने लगा, 'खेल-प्रतियोगिताओं का मूल उद्देश्य आपस में सद्भावना व एकता पैदा करना होता है। वह कैसे खेलों का आरंभ करे कि सभी खिलाड़ी जानवरों को खेलों की इस मूल भावना का अहसास हो जाए।'

अचानक उसके मन में एक दिलचस्प विचार आया जिसे सोचकर वह मुसकरा दिया।

कार्यक्रम का आरंभ खरगोश व कछुए की दौड़ से होगा। सभी जानवर आश्चर्यचकित थे। यह बात सभी की समझ के बाहर थी। तेज़ी के लिए खरगोश की और धीमी गति के लिए कछुए की चाल के उदाहरण दिए जाते हैं, फिर भी हिरण ने कार्यक्रम के आरंभ में ही यह दौड़ क्यों रखी? हिरण अपनी सहृदयता और दूरदर्शिता के लिए जाना जाता है। ऐसी दौड़ बरसों पहले हुई थी जिसमें नींद की आदत के कारण खरगोश को हारना पड़ा था, परंतु वह एक घटना मात्र थी। हर बार तो खरगोश सोने की गलती करने से रहा।

लेकिन खरगोश मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसे कछुए से अपने पूर्वज की हार का बदला लेने का बहुत सुनहरा मौका मिला था जिसके कारण उसे हमेशा नीचा दिखना पड़ता था। भले ही कछुए ने कभी उसे कुछ नहीं कहा, परंतु जंगल के दूसरे जानवर उसका हमेशा मज़ाक उड़ाते रहते थे। उसकी नींद लेने की आदत ने उसे हरा दिया था। इस बार उसने तय कर लिया कि चाहे जो हो इस बार वह विजय रेखा तक पहुँचे बिना कहीं नहीं रुकेगा। पीछे पलटकर भी न देखेगा। इस बार उसे हारना नहीं है।

हिरण ने दौड़ का मार्ग घोषित किया। खरगोश और कछुए के साथ छोटे-छोटे कई जानवर थे। दौड़ आरंभ हुई। खरगोश बिजली की तेज़ी से दौड़ने लगा। वह बिना पीछे देखे दौड़ रहा था, परंतु अचानक एक जगह आकर वह घबराकर रुक गया। सामने एक गहरी नदी बह रही थी। नदी के उस पार विजय रेखा पर झंडा लहरा रहा था, परंतु वह वहाँ पहुँचे कैसे? उसे तो तैरना भी नहीं आता था। "ओह! तो हिरण ने उसे फिर से हराने के लिए यह चाल चली थी।" खरगोश गुस्से से उफनने लगा।

थोड़ी देर में कछुआ आ पहुँचा। खरगोश को चुपचाप नदी के सामने खड़े देखकर वह सारा माजरा समझ गया।

"भाई खरगोश! परेशान मत होओ। आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। हम दोनों नदी पार कर लेंगे फिर तुम दौड़कर विजय का झंडा लहराना। मुझे उस समय भी जीत पर कोई बहुत खुशी नहीं हुई थी और इस बार हारकर दुख नहीं होगा। मेरा उद्देश्य तो हमेशा खेल में भाग लेना होता है, हारना जीतना नहीं।" कछुए ने कहा।

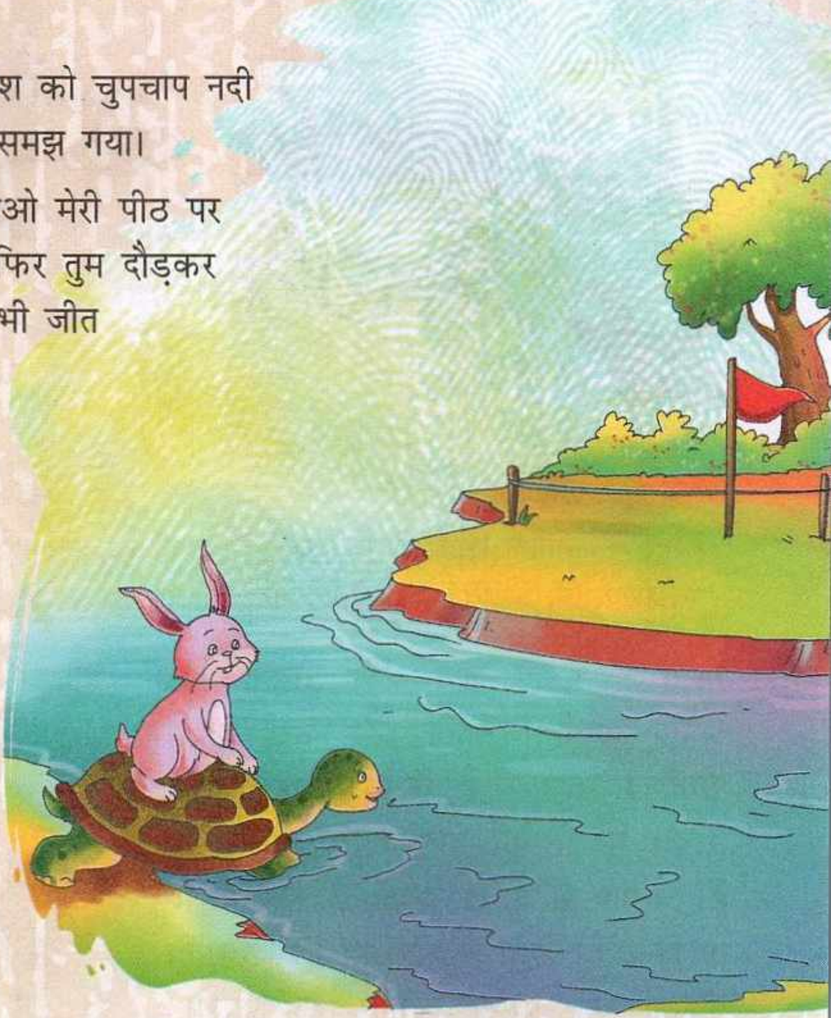

खरगोश कछुए की बात सुनकर चकित रह गया। यही तो सच्ची खेल भावना है। कछुआ तो सचमुच महान खिलाड़ी कहलाने लायक है। कुछ सोचकर खरगोश कछुए की पीठ पर बैठ गया। नदी का किनारा आते ही वह तेज़ी से दौड़ पड़ा और झंडा उठाकर फहराने लगा। वह दौड़ जीत गया था।

आयोजन समिति के अध्यक्ष शेरसिंह ने खरगोश को मंच पर स्वर्ण पदक लेने के लिए बुलाया। सारे जानवर तालियाँ बजाने लगे। वह धीरे-धीरे चलता हुआ मंच पर पहुँचा। फिर माइक हाथ में लेकर बोला, "दोस्तो, भले ही मैंने यह दौड़ जीती है, परंतु स्वर्ण पदक पाने का सच्चा हकदार मेरा दोस्त कछुआ ही है। मैं यह दौड़ कभी नहीं जीतता, यदि कछुआ मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार नहीं करवाता। कछुए ने महान खेल भावना का परिचय दिया। अत: मैं शेरसिंह से प्रार्थना करता हूँ कि यह स्वर्ण पदक कछुए को दिया जाए।" खरगोश ने सच्ची घटना सभी को बताई।

शेरसिंह आश्चर्य से खरगोश की ओर देखने लगे। वहीं हिरण पास खड़ा हुआ मुसकरा रहा था। हिरण ने कहा, "भाइयो! मुझे सब कुछ ऐसा ही होने का पूर्वानुमान था। अत: मैंने इस दौड़ के लिए दो स्वर्ण पदक तैयार कर रखे हैं। एक खरगोश के लिए और दूसरा कछुए के लिए। आपस में ऐसी ही सद्भावना पैदा करना हमारे इस आयोजन का उद्देश्य है।"

सारा जंगल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

–देवेश सिंगी

13 शिव का पर्व–शिवरात्रि

चिंतन-मनन

संसार के निर्माता शिव जी माने जाते हैं। उन्हीं के कारण संसार का पालन होता है। पाठ में शिव के पावन पर्व शिवरात्रि का विश्लेषण किया गया है।

भारत में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। किसी का संबंध पौराणिक घटना से है, तो कई त्योहार अवतारी सिद्ध पुरुषों की पुण्य-स्मृति से संबंधित हैं। जन्माष्टमी कृष्ण जयंती से संबंधित है, तो शिवरात्रि शिव से संबंधित है। शिवरात्रि हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। फाल्गुन चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव ने तांडव करते हुए अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से ब्रह्मांड को समाप्त कर दिया था। इसीलिए इसे 'महाशिवरात्रि' अथवा 'कालरात्रि' कहा गया है।

शब्दार्थ–पौराणिक–पुराण से संबंधित (mythological), **सृष्टि**–जगत, संसार (world), **प्रलय**–नाश (destroy)

शिवरात्रि मनाने के पीछे एक पौराणिक कथा इस प्रकार है– एक गाँव में एक शिकारी रहता था। वह पशुओं की हत्या करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। उसने साहूकार से ऋण लिया था लेकिन वह समय पर ऋण चुका नहीं सका। क्रोधित होकर साहूकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। अनजाने में शिकारी ध्यानमग्न होकर शिव-संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा। चतुर्दशी को उसने शिवरात्रि व्रत की कथा सुनी। संध्या होते ही साहूकार ने उसे बुलाया। शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन देकर बंधन से छूट गया। रोज़ की भाँति वह जंगल में शिकार के लिए निकला। इतने में एक जंगली जानवर शिकारी का पीछा करते हुए आया, तब अपनी जान बचाने के लिए वह एक पेड़ पर चढ़ गया। वह पेड़ 'बिल्व' का था। इस वृक्ष के नीचे शिवलिंग था, शिकारी को उसका पता न था। जंगली जानवर पेड़ के नीचे खड़ा था। इसलिए शिकारी को रात पेड़ पर ही बितानी पड़ी।

डर के मारे शिकारी रातभर बेचैनी से पत्ते नीचे फेंकता रहा। सुबह होने तक शिकारी ने शिवलिंग पर हज़ार से ज़्यादा बिल्व पत्र डाले। इससे शिव जी खुश हुए और उन्होंने संतुष्ट होकर उस शिकारी के सारे कष्ट दूर कर दिए। शिकारी ने वचन दिया कि वह शिकार नहीं करेगा और अपना समय पूजा-अर्चना में बिताएगा।

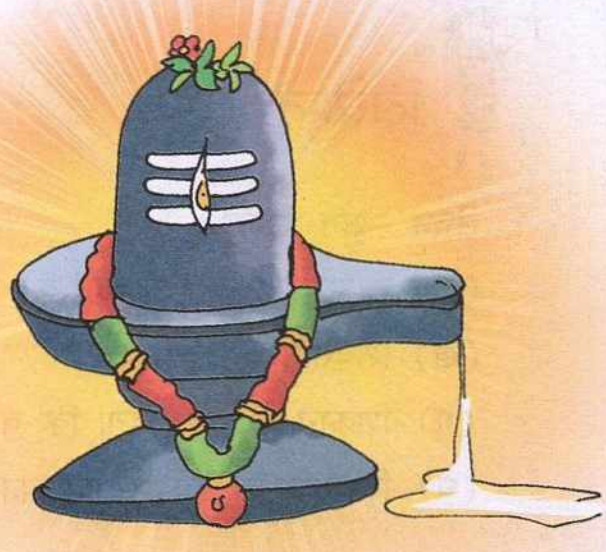

शिवरात्रि के दिन शिवभक्त, शिव-मंदिरों में जाकर शिवलिंग पर बेल-पत्र चढ़ाते हैं। पूजन, उपवास तथा रात्रि को जागरण करते हैं। इस दिन मिट्टी के बरतन में पानी भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक, धतूरे के पुष्प, चावल आदि डालकर शिव का पूजन किया जाता है। रात्रि को जागरण करके, शिवपुराण का पाठ सुनकर, अगले दिन उपवास खोला जाता है। दूसरे दिन विविध मिष्ठान बनाए जाते हैं और खीर का भोग लगाया जाता है। लोगों में विश्वास है कि शिवरात्रि के व्रत से पापों का नाश होता है और मन शुद्ध होता है। शिवरात्रि का पर्व प्राणियों पर दया का पर्व भी है।

शब्दार्थ–क्रोधित–कुपित (to get angry), **संतुष्ट**–खुश होना (happy), **जागरण**–रातभर जागना (to be awake), **व्रत**–उपवास (fast), **पाप**–गलत कार्य (sin)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

  (क) जन्माष्टमी के पर्व का संबंध किससे है?

  (ख) शिवरात्रि का पर्व कब मनाया जाता है?

  (ग) शिव जी ने कौन-सा नृत्य किया था?

  (घ) शिव जी की पूजा किन पत्रों से की गई?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) .... हिंदुओं को प्रमुख त्योहार है।

(ख) शिवरात्रि के दिन .... भगवान का पूजन होता है।

(ग) शिकारी ने वचन दिया कि वह .... नहीं करेगा।

(घ) शिवरात्रि के व्रत से पापों का .... होता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) शिवरात्रि का पर्व क्यों मनाया जाता है?

(ख) शिकारी के ऋण न चुकाने पर साहूकार ने क्या किया?

(ग) शिवरात्रि के दिन शिवभक्त क्या करते हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) शिकारी ने शिवमठ में बंदी होने पर क्या किया?

(ख) शिकारी जंगल में रातभर क्यों रहा और उसने क्या किया?

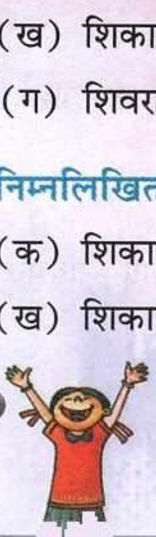

भाषा ज्ञान

1. शब्दों को सही अर्थ से मिलाइए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

शब्द	अर्थ		
सत्य	मीठा भोजन (मिठाइयाँ)	....	....
सृष्टि	त्योहार	....	....
पर्व	जीव-दया	....	....
प्राणि-दया	जगत	....	....
मिष्ठान	सच	....	....

2. निम्नलिखित गद्यांश में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

भारत में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार की अपनी अपनी विशेषताएँ हैं किसी का संबंध पौराणिक घटना से है तो कई त्योहार अवतारी सिद्ध पुरुषों की पुण्य स्मृति से संबंधित हैं जन्माष्टमी कृष्ण जयंती से संबंधित है तो शिवरात्रि शिव से संबंधित है शिवरात्रि हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है फाल्गुन चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव ने तांडव करते हुए अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से ब्रह्मांड को समाप्त कर दिया था इसीलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा गया है

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. 'पर्व धर्म की रक्षा करते हैं।' इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. 'पर्व राष्ट्रीय एकता के प्रतीक होते हैं।' इस विषय पर चर्चा कीजिए।

3. अपने प्रिय पर्व के बारे में लिखिए।

4. शिवरात्रि का पर्व जीवों पर दया करना सिखलाता है। आपको भी जीवों पर दया करनी चाहिए। इसके लिए आप क्या करेंगे? जैसे–

(क) ……जितना हो सके उतना शाकाहारी बनेंगे।……………………………………

(ख) ……प्राणियों की हत्या नहीं करेंगे।……………………………………

(ग) ……………………………………………………………………

(घ) ……………………………………………………………………

(ङ) ……………………………………………………………………

क्रियाकलाप

1. क्षमा, शांति, दया, अहिंसा के साथ शुद्ध आचरण का उपदेश देने वालों में ईसा मसीह भी थे। उनके जीवन की चर्चा करके उनके बारे में लिखिए; जैसे–

(क) ……ईसा मसीह मानवता के पुजारी थे।……………………

(ख) ……………………………………………………

(ग) ……………………………………………………

(घ) ……………………………………………………

(ङ) ……………………………………………………

2. भारत में मनाए जाने वाले कुछ प्रमुख पर्वों के नामों की सूची बनाइए। किसी एक त्योहार के विषय में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

14 मानव-जीवन

चिंतन-मनन

प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत ने इस कविता के माध्यम से यह उद्गारित किया है कि न तो सुख स्थायी है और न ही दुख। ये दोनों मन की दशा हैं। अतः हमें समभाव से साथ रहना चाहिए।

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,
मैं नहीं चाहता चिर-दुख,
सुख-दुख की आँख-मिचौली,
खोले जीवन अपना मुख।

सुख-दुख के मधुर मिलन से,
यह जीवन हो परिपूरण,
फिर घन में ओझल हो शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन।

जग पीड़ित है अति दुख से,
जग पीड़ित रे, अति सुख से,
मानव-जग में बँट जावे,
दुख-सुख से औ सुख-दुख से।

शब्दार्थ– चिर–दीर्घ (long time), **आँख-मिचौली**–एक प्रकार का खेल, लुका-छिपी का खेल (hide and seek), **परिपूरण**–परिपूर्ण (complete), **शशि**–चंद्रमा (moon), **ओझल**–अदृश्य (invisible), **घन**–बादल (clouds), **पीड़ित**–दुखी (victim), **औ**–और (and)

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न,
दुख-सुख की निशा-दिवा में,
सोता-जगता जग-जीवन।

यह साँझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का,
चिरहास-अश्रुमय आनन,
रे! इस मानव जीवन का।

—सुमित्रानंदन पंत

शब्दार्थ—अविरत—निरंतर (continuous), **उत्पीड़न**—दुख (trouble), **निशा**—रात्रि (night), **दिवा**—दिन (day), **साँझ-उषा**—सायंकाल, सुबह (evening, morning), **चिरहास**—हँसी (laugher), **आनन**—मुख (face)

कवि परिचय

श्री सुमित्रानंदन पंत हिंदी के प्रमुख कवियों में से एक हैं। हिंदी के छायावादी कवियों में इनका विशेष स्थान है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त इस कवि की रचनाओं में *पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, बूढ़ा चाँद, शिल्पी, स्वर्णधूलि* आदि प्रमुख हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए—**

(क) कवि क्या नहीं चाहता?

(ख) जीवन कब परिपूर्ण होता है?

(ग) जग किससे पीड़ित है?

(घ) मानव जीवन कैसा है?

(ङ) मानव-जीवन कविता के कवि कौन हैं?

लिखित

1. भावार्थ लिखिए–

(क) "सुख-दुख के मधुर मिलन से,
यह जीवन हो परिपूरण"

(ख) "मानव-जग में बँट जावे,
दुख-सुख से औ सुख-दुख से।"

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि चिर-सुख और चिर-दुख क्यों नहीं चाहता?

(ख) 'सुख-दुख की आँख-मिचौली' का अर्थ क्या है?

(ग) कवि के अनुसार जीवन की परिपूर्णता किसमें है?

(घ) इस कविता से क्या सीख मिलती है? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) जीवन में आने वाले दुखों को सामना आप कैसे करेंगे?

(ख) गाँव के बच्चों के जीवन और शहरी जीवन जीने वाले बच्चों की तुलना कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. रेखांकित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) जीवन में हमेशा सुख होता है। ....

(ख) जीवन में सुख-दुख बाँटने चाहिए। ....

(ग) शशि का अर्थ चंद्र है। ....

(घ) जीवन मधुर है। ....

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

(क) शशि – ....

(ख) निशा – ....

(ग) जग – ....

(घ) घन – ....

(ङ) मानव – ....

3. आप जानते ही हैं कि जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं तथा जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

निम्नलिखित रेखांकित पदों के आगे लिखिए कि वे विशेषण हैं या विशेष्य–

(क) मधुर मिलन .... (ख) अति दुख ....

(ग) इन चरणों .... (घ) निठल्ले लड़के ....

(ङ) घनी छाया .... (च) मलिन शरीर ....

(छ) दुर्बल हाथ .... (ज) नीला आसमान ....

4. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) मधुर – ....

(ख) ओझल – ....

(ग) पीड़ित – ....

(घ) आँगन – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- जीवन में सिर्फ़ सुख ही सुख या फिर दुख ही दुख हों तो जीवन कैसे रहेगा? कल्पना करके लिखिए।

क्रियाकलाप

- नीचे दिए गए चित्र में दिखाई गई वस्तुएँ मानव-जीवन के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं? लिखिए।

अतिरिक्त पठन

2050 तक नहीं रहेंगे बहुत-से पशु-पक्षी

बहुत से पशु-पक्षियों की ऐसी प्रजातियाँ हैं, जिन्हें आज चाहकर भी देखा नहीं जा सकता। वे बदलते वक्त के साथ विलुप्त हो गए हैं। इनका जिक्र सिर्फ़ किताबों व फ़िल्मों आदि में होता है। आने वाले समय में भी पशु-पक्षियों में बहुत-से बदलाव आएँगे। पर क्या होंगे उनमें बदलाव? क्या डायनासोर को फिर से पृथ्वी पर देख सकेंगे? और घर में चहकने वाली गौरैया क्या खत्म होने जा रही है? आपके मन में भी ऐसे ही बहुत-से सवाल होंगे। हमने पटना के जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी डॉ० गोपाल शर्मा से मन में उमड़ते-घुमड़ते रोचक सवालों के जवाब पूछे। आप भी जान लें, क्या कहना है उनका इस बारे में–

शेर और बाघों की संख्या निरंतर घट रही है, उसके लिए क्या कर रहे हैं?

भारत में वर्ष 1973 में 'सेव टाइगर प्रोजेक्ट' की स्थापना की गई थी, ताकि बाघों को बचाया जाए और उनकी संख्या को बढ़ाया भी जाए। इसके लिए बाघों के निवास स्थान और भोजन की भी व्यवस्था की गई। उनके भोजन के लिए हिरन प्रजाति के जानवरों की संख्या बढ़ाई गई। इससे बाघों की संख्या बढ़ गई। अभी भी देश में कई सरकारी और गैर सरकारी विभागों द्वारा बाघों को बचाने की कोशिशें जारी हैं। रही बात शेर की तो वह भारत में एकमात्र गिर के जंगल में पाया जाता है। वहाँ भी इसे बचाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास हो रहे हैं।

क्या डायनासोर फिर पृथ्वी पर दिखेंगे?

जो भी प्राणी पृथ्वी से लुप्त हो जाता है, उसे फिर से जीवित करने के लिए सुरक्षित डीएनए की ज़रूरत होती है। डायनासोर तो बहुत पहले ही लुप्त हो चुके हैं, केवल उनके जीवाश्म ही बचे हैं। वैसे ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि लुप्त हो चुके गेस्ट्रिक ब्रूडिग मेढक का भ्रूण उन्होंने बना लिया है। इस प्रकार डायनायोर को जीवित करने के प्रयास भी लगातार किए जा रहे हैं।

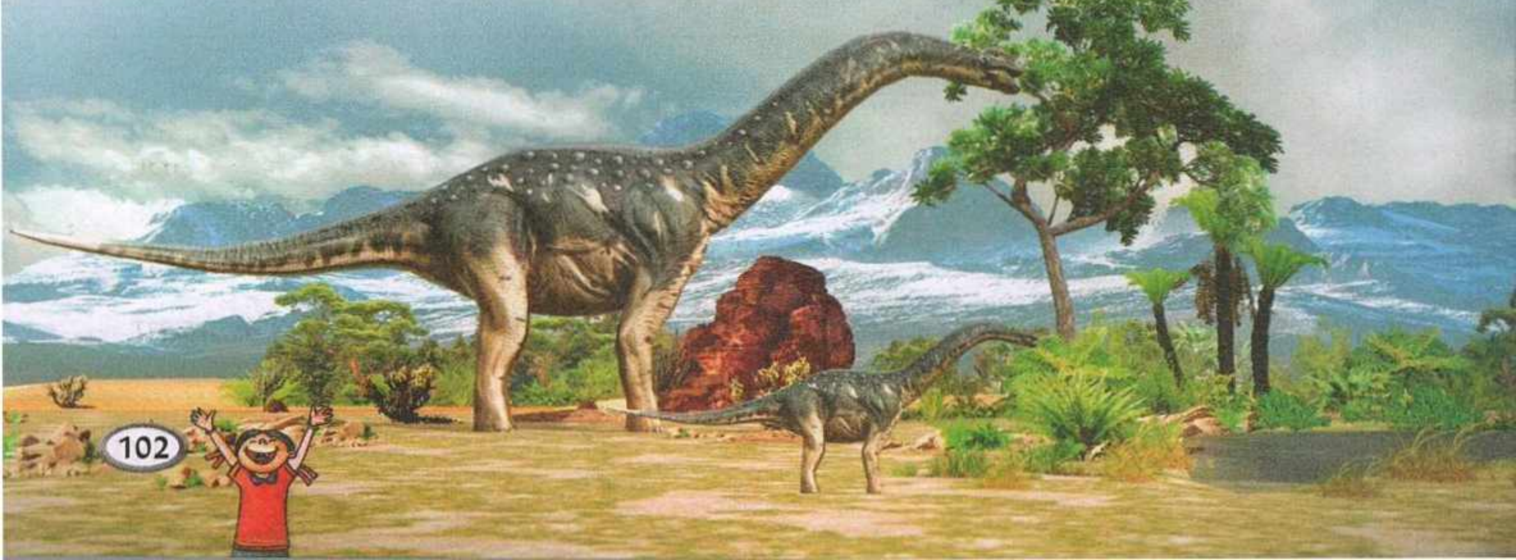

• **क्या बच पाएगी गौरैया?**

गौरैया जो घर-घर चहकने वाली चिड़िया है, उसका जीवन भी खतरे में आ चुका है। मकान पक्के बनने लगे हैं। घरों के पास से पेड़ काट लिए गए हैं। उन्हें पानी और चुग्गा आसानी से नहीं मिलता। इसके अलावा कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल बहुत हो रहा है। आम लोगों के साथ-साथ सरकार भी इस ओर ध्यान दे रही है। गौरैया के कई बनावटी घोंसले लगाए गए हैं। इन घोंसलों में गौरैया अंडे दे रही हैं और आराम से रह रही हैं। अब लोग पक्षियों को खाना देते हैं, खाना खिलाते हैं। गौरैया की संख्या आज कम हो गई है, पर अब सरकार व आम लोगों की जागरुकता के कारण इनको खत्म होने से बचा लिया जाएगा।

2050 तक क्या बंदर मनुष्यों के बीच ही रहने लगेंगे?

अंधाधुंध शहरीकरण, औद्योगिकरण के कारण जंगल कटते जा रहे हैं। पेड़ कटने से, जंगल सिमटने से बंदरों को रहने, भोजन व पानी की समस्या का सामना कर पड़ रहा है। अगर जंगलों को काटना बंद नहीं किया गया, तो निश्चित तौर पर ये मनुष्यों के आस-पास ही रहेंगे।

• **कौन से नए पक्षी देखने को मिलेंगे?**

नए पक्षियों को भी विकसित होने में हज़ारों साल लगते हैं। लेकिन ऐसा अनुमान है कि कुछ प्रवासी पक्षी अपने देश में आएँगे और जलवायु परिवर्तन के कारण वे उचित पर्यावरण को पाकर यहीं रह जाएँगे।

• **पेड़ों की संख्या घटने या ग्लोबल वार्मिंग का जानवरों व पक्षियों पर क्या फ़र्क पड़ेगा?**

ग्लोबल वार्मिंग के कारण समय से पहले बारिश, समय से पहले या बाद में सरदी या गरमी पड़ेगी। इस वजह से पक्षी समय से पहले ही अंडे या बच्चे देने लगेंगे। अतः समय से पहले जन्मे बच्चों को उनका भोजन नहीं मिलेगा और ज़्यादातर वक्त से पहले ही मर जाएँगे। यहाँ तक की इसी कारण कुछ प्रजातियाँ विलुप्त भी हो सकती हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रवासी पक्षी समय से पहले आना शुरू हो जाएँगे और समय से पहले वे लौट भी जाएँगे। इस क्रम से उनकी मृत्यु होने की संभावना भी ज़्यादा होगी।

क्या प्लास्टिक आदि खाने से भी जीवों को जान का खतरा होगा?

बिलकुल सही बात है। आज कई जीवों की मौत प्लास्टिक खाने से हो रही है। इनमें कुत्ते, कई पक्षी, बंदर, गाय साथ ही समुद्री व्हेल तक शामिल है। ये जानवर गलती से खाने की चीज़ों से साथ प्लास्टिक को खा जाते हैं, फिर इन्हें वे पचा नहीं पाते। प्लास्टिक गैस बनकर इनकी पाचन क्रिया में रुकावट पैदा करता है। जिस कारण वे मर जाते हैं। शहरों में गाय का अधिक दूध पाने के लालच में उन्हें ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन देकर दूध निकालते हैं, जिससे समय से पहले ही गाय मर जाती है। इस पर भी शोध चल रहा है।

• **क्या लाखों प्रजातियाँ नष्ट हो जाएँगी?**

भारत में हर साल लगभग 300 वर्ग किलोमीटर की दर से जंगल घटते जा रहे हैं। घटते जंगलों और बदलती जलवायु की स्थिति यही रही, तो वर्ष 2050 तक संसार में मौजूद प्रजातियों में 30 प्रतिशत विलुप्त हो जाएँगी। जिनकी संख्या लगभग दस लाख होगी।

–सुनीता तिवारी

15 कुंभ मेले का महत्व

चिंतन-मनन

भारतीय संस्कृति और कला सभी को प्रभावित करती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता विविधता में एकता है। लोगों को एकत्रित कर अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के जो साधन है, उनमें 'कुंभ मेला' भी है। इस मेले में लोग इकट्ठा होकर अपनी भावनाओं को उजागर करते हैं और अपनी एकता और अखंडता का परिचय देते हैं।

भारतीय संस्कृति आत्मा, परमात्मा और उसके बनाए विश्व पर ध्यान देना सिखाती है। हमारे पूर्वजों ने जीवन को संस्कार देने वाले अनेक कार्यक्रम निश्चित किए थे, जिनमें स्थान-स्थान पर लगने वाले मेलों का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत के विशाल मेलों में से सबसे महत्वपूर्ण कुंभ मेला है। कुंभ मेला भारत का महान पर्व है। इस पर्व पर देश भर से करोड़ों लोग कुंभ के स्थान पर श्रद्धा से आते हैं। यह मेला केवल चार स्थानों पर लगता है– हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक। इनमें से हर जगह पर बारह वर्ष बाद पूर्ण कुंभ का मेला लगता है। हरिद्वार और प्रयाग में दो पूर्ण कुंभों के बीच अर्ध कुंभ भी लगता है। हमारे पूर्वजों ने चारों तीर्थ स्थानों के लिए कुंभ के अलग-अलग समय निश्चित किए थे। वही परंपरा आज तक चली आ रही है।

हरिद्वार का कुंभ मेला

शब्दार्थ–पर्व–त्योहार (festival), **तीर्थस्थान**–पवित्र स्थान (holy place)

प्रयाग का कुंभ गंगा-यमुना के संगम पर जनवरी-फरवरी मास में होता है। हरिद्वार का कुंभ गंगा जी के तट पर अप्रैल मास में लगता है। नासिक का कुंभ गोदावरी के तट पर जुलाई मास के लगभग होता है। उज्जैन का कुंभ क्षिप्रा नदी के तट पर नवंबर मास में लगता है। कुंभ मेले पर सभी धर्म-संप्रदायों के हिंदू संन्यासी, संत, महंत आदि एकत्रित होकर धर्म-प्रचार करते हैं। धार्मिक श्रद्धा वाले हिंदू लोग साधु-संतों के आश्रमों में रहकर 'कल्पवास' करते हैं। उन्हें अनेक व्रतों व नियमों का पालन करना पड़ता है। वे कुटी में रहते हैं, ज़मीन पर सोते हैं। आश्रम में जो साधारण भोजन मिले, वही दिन में एक बार खाते हैं। नित्य तीन बार स्नान करते हैं। इस प्रकार वे कठिन नियमों का सहर्ष पालन करते हैं।

नासिक का कुंभ मेला

कुंभ मेलों का महत्व सर्वमान्य है। यहाँ तक कि वर्षों से एकांत में रहकर साधना करने वाले साधु-संत भी कुंभ मेलों में स्नान करना पुण्य का काम समझते हैं। कुंभ-मेलों में सारा भारत एक रहता है। इन मेलों में कोई भेदभाव नहीं होता है। प्रातःकाल या सायंकाल को ठंड में गंगा, यमुना संगम पर स्नान व पूजा, गंगा माता को दूध, फूल-बताशे, दीपक आदि अर्पित करते हुए भक्तों का दृश्य बहुत सुहाना होता है।

कुंभ मेले के विषय में समुद्र-मंथन से निकले अमृत-कुंभ की कथा प्रसिद्ध है जिसमें यह वर्णित है कि समुद्र मंथन के बाद निकले अमृत के घड़े को लेकर देव भाग रहे थे और असुर उनका पीछा कर रहे थे। उस समय जिन चार स्थानों पर घड़े में से छलककर अमृत गिर गया, वे स्थान पवित्र हो गए और वहीं कुंभ लगने लगा।

प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन के कुंभ मेलों में एकता का अमृत छलकता दिखाई देता है। ये भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संदेश देते हैं।

–संकलित

शब्दार्थ– श्रद्धा–विश्वास (faith), **साधना**–तपस्या, अभ्यास करना (to practice), **सुहाना**–अच्छा (pleasing), **असुर**–राक्षस (devil)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) हमारी संस्कृति हमें क्या सिखाती है?

(ख) कुंभ का मेला कहाँ-कहाँ पर लगता है?

(ग) कल्पवास करने वालों को क्या करना पड़ता है?

(घ) समुद्र-मंथन से क्या निकला?

(ङ) चार-धाम कैसे बने?

लिखित

1. उचित शब्दों का सहायता से रिक्त स्थान भरिए–

(क) .... भारत का महान पर्व है।

(ख) .... वर्ष के बाद कुंभ का मेला लगता है।

(ग) .... कुंभ क्षिप्रा नदी के तट पर होता है।

(घ) देवता .... का घड़ा लेकर भाग रहे थे।

(ङ) समुद्र-मंथन से निकले अमृत-कुंभ की कथा .... है।

2. उचित मिलान कीजिए–

(क) प्रयाग का कुंभ	(*i*) कोई भेद-भाव नहीं होता
(ख) नासिक का कुंभ	(*ii*) क्षिप्रा नदी के तट पर
(ग) उज्जैन का कुंभ	(*iii*) सहर्ष पालन करते हैं।
(घ) कुंभ मेलों में	(*iv*) गंगा-यमुना के संगम पर
(ङ) कठिन नियमों का	(*v*) गोदावरी नदी के तट पर

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भारत के विशाल मेलों में सबसे महत्वपूर्ण कुंभ मेला है। इसका क्या कारण है?

(ख) 'कल्पवास' का क्या अर्थ है? साधु-संत लोग कल्पवास क्यों करते होंगे? सोचकर लिखिए।

(ग) कुंभ मेले को लेकर कौन-सी पौराणिक कथा प्रसिद्ध है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'मेले भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संदेश देते हैं।' इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) कुंभ मेलों से एकता किस प्रकार बढ़ती है?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से वाक्य बनाइए–

(क) स्थान-स्थान – ....

(ख) अलग-अलग – ....

(ग) गंगा-यमुना – ....

(घ) साधु-संत – ....

(ङ) फूल-बताशा – ....

2. विलोम शब्द लिखिए–

(क) निश्चित – .... (ख) अनेक – ....

(ग) कठिन – .... (घ) पवित्र – ....

(ङ) अमृत – .... (च) प्रात: – ....

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) विश्व – ....

(ख) परमात्मा – ....

(ग) धरती – ....

(घ) समुद्र – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. आप भी कभी-न-कभी किसी मेले में गए होंगे। वहाँ आपने क्या-क्या देखा? सोचिए और बताइए कि इस तरह के मेलों की आज क्या प्रासंगिकता है?
2. मेले में कभी-कभी लोग अनचाही घटनाओं के शिकार बनते हैं। ऐसा क्यों होता है? इस पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

क्रियाकलाप

- यह चित्र आज की किस समस्या को बताता है? चर्चा कीजिए और लिखिए।

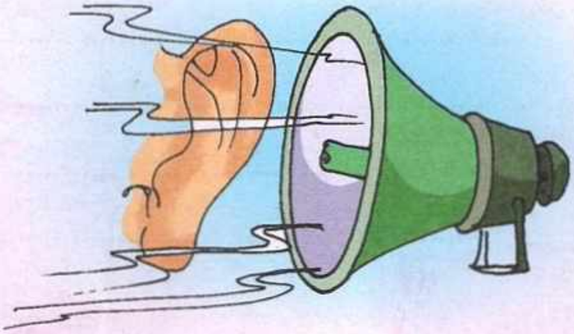

परियोजना-1

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन एक कला है। पत्रों द्‌वारा भावों और विचारों का आदान-प्रदान होता है। पत्र द्‌वारा लेखक का व्यक्तित्व उभरता है।

पत्र लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. पत्र की भाषा सरल, सुबोध और पठनीय हो।
2. पत्र अनावश्यक विस्तृत न हो।
3. विचारों में स्पष्टता हो।
4. पत्र संक्षिप्त लेकिन विषय संबंधी पूर्णता लिए हो।
5. पत्र का प्रभावशाली होना ज़रूरी है।
6. पत्र में विराम-चिह्नों का प्रयोग योग्य रीति से हो।
7. पत्र में उचित एवं योग्य शब्दावली का प्रयोग हो।

सामान्य रूप से पत्रों को दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं–

1. **औपचारिक पत्र (Formal letters)**–ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालयों, कर्मचारियों, प्रधानाचार्यों, अध्यापकों, प्रकाशकों, संस्थानों के अधिकारियों तथा दुकानदारों को लिखे जाते हैं, 'औपचारिक पत्र' कहलाते हैं।
2. **अनौपचारिक पत्र (Informal letters)**–ऐसे पत्र जो रिश्तेदारों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखे जाते हैं, 'अनौपचारिक पत्र' कहलाते हैं। बधाई-पत्र, निमंत्रण-पत्र तथा शोक-पत्र भी इन्हीं के अंतर्गत आते हैं।

संबोधन, अभिवादन तथा पत्र के अंत में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के कुछ उदाहरण

जिसे पत्र लिखा जा रहा है	संबोधन	अभिवादन	समापन
पिता जी/माता जी	आदरणीय/पूज्य/पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी आज्ञाकारी पुत्र/पुत्री

चाचा जी/चाची जी	आदरणीय/पूज्य/ पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी आज्ञाकारी भतीजा/ भतीजी
दादा जी/दादी जी	आदरणीय/पूज्य/ पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी आज्ञाकारी पोता/पोती
मामा जी/मामी जी	आदरणीय/पूज्य/ पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी आज्ञाकारी भांजा/भांजी
नाना जी/नानी जी	आदरणीय/पूज्य/ पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी आज्ञाकारी नाती/नातिन
बड़ा भाई/बड़ी बहन	आदरणीय/पूज्य/ पूजनीय	सादर चरण स्पर्श/प्रणाम	आपका/आपकी छोटा भाई/छोटी बहन
छोटा भाई/छोटी बहन	प्रिय/चिरंजीव	प्रसन्न रहो/ शुभाशीष	तुम्हारा अग्रज/तुम्हारी अग्रजा, तुम्हारा बड़ा भाई/तुम्हारी बड़ी बहन
मित्र	मित्रवर/बंधुवर/ प्रिय	नमस्ते/ मधुर स्मरण	तुम्हारा मित्र/स्नेह तुम्हारी सखी/सहेली
प्रधानाध्यापिका	श्रीमती/श्रीमान	महोदया/ महोदय	आपका/आपकी आज्ञाकारी छात्र/छात्रा

विभिन्न पत्रों के नमूने

अनौपचारिक पत्र

1. अपने पिता जी से पुस्तकें खरीदने और भ्रमण आदि हेतु रुपये मँगवाने के लिए पत्र लिखिए–

दुर्गा छात्रावास
डी०ए०वी० स्कूल
पानीपत (हरियाणा)

दिनांक: 26 अप्रैल, 20XX

पूजनीय पिता जी
सादर चरण-स्पर्श

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि इस बार वार्षिक परीक्षा में मैं कक्षा सात के चारों वर्गों में प्रथम आया हूँ। मैंने 93.6% अंक प्राप्त किए हैं। हमारा नया सत्र प्रारंभ हो गया है। मुझे नई कक्षा के लिए पुस्तकें और कापियाँ लेनी होंगी तथा दो मास की फ़ीस भी देनी होगी। हमारी कक्षा के सभी छात्र और अध्यापक जयपुर भ्रमण की योजना बना रहे हैं। यदि आप अनुमति दें तो मैं भी अपना नाम भ्रमण पर जाने वाले छात्रों की सूची में लिखवा लूँ। आपसे प्रार्थना है कि इस मास अतिरिक्त धनराशि के रूप में कम-से-कम एक हज़ार रुपये मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें।

पूज्या माता जी को सादर प्रणाम तथा नीलू को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
दृशान

2. मित्र के जन्मदिवस के अवसर पर उसे बधाई-पत्र लिखिए–

परीक्षा भवन
नई दिल्ली

दिनांक: 15 दिसंबर, 20XX

प्रिय रवि
नमस्कार

तुम्हारा निमंत्रण पत्र आज की डाक से मिला। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि गत वर्ष की भाँति इस बार भी तुम अपना जन्मदिवस बड़ी धूमधाम से मना रहे हो।

मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। मैं भगवान से तुम्हारे स्वस्थ रहने और शतायु होने की कामना करता हूँ। मैं इस अवसर पर अवश्य आऊँगा।

घर में बड़ों को प्रणाम व छोटों को प्यार।

तुम्हारा शुभचिंतक
क०ख०ग०

3. विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए–

सी–402, पश्चिम विहार
नई दिल्ली

दिनांक : 12 जनवरी, 20XX

प्रिय रवि

शुभाशीष

पिछले कई दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा था परंतु विद्यालय के वार्षिकोत्सव तथा अन्य कार्यक्रमों की व्यवस्था के कारण न लिख सका। इस पत्र में तुम्हें विद्यालय के वार्षिकोत्सव के बारे में बता रहा हूँ।

जैसा कि तुम जानते हो, हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष 6 जनवरी को मनाया जाता है, क्योंकि यही विद्यालय का स्थापना दिवस भी है। इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया। 5 जनवरी को वार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था, जिसमें सभी कक्षाओं की ओर से चित्रकला, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर चार्ट एवं मॉडल प्रदर्शित किए गए थे। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन हमारे क्षेत्र के शिक्षाधिकारी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों के प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। 6 जनवरी को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस दिन विद्यालय को खूब सजाया गया था। ठीक तीन बजे अपराह्न दिल्ली के मुख्यमंत्री अतिथि के रूप में पधारे। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उनका स्वागत किया। छात्रों ने लोकगीत, भजन, कव्वाली, देश-भक्ति के गीत, फैंसी ड्रेस, प्रहसन तथा 'पृथ्वीराज की आँखें' नामक नाटक किया। इसके बाद प्रधानाचार्य ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। मुख्य अतिथि ने वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों में प्रमुख स्थान पाने वाले छात्रों को पुरस्कार वितरित किए। मैंने भी नाटक में भाग लिया था तथा मुझे भी तीन पुरस्कार मिले। लगभग साढ़े पाँच बजे कार्यक्रम समाप्त हो गया।

पूज्य पिता जी, पूज्या माता जी को चरण-स्पर्श तथा बबलू को प्यार।

तुम्हारा शुभचिंतक

सदानंद

औपचारिक पत्र

1. **नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को अपने मोहल्ले की सफ़ाई के लिए पत्र लिखिए–**

मोहल्ला सुधार समिति

रघुवीर नगर, बी-ब्लॉक

नई दिल्ली

दिनांक : 6 जून, 20XX

सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी

दिल्ली नगर निगम

पश्चिमी क्षेत्र, राजौरी गार्डन

नई दिल्ली

विषयः मोहल्ले की सफ़ाई के संबंध में पत्र।

मान्यवर

इस पत्र के माध्यम से हम रघुवीर नगर, बी–ब्लॉक के निवासी आपका ध्यान इस क्षेत्र में व्याप्त गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

हमारी कालोनी में स्थान-स्थान पर कूड़े के ढेर पड़े हुए हैं जिनके कारण चारों ओर दुर्गंध आती रहती है। कूड़े के ढेरों से मक्खी तथा मच्छरों का बढ़ जाना स्वाभाविक है। गंदगी के कारण इस क्षेत्र के निवासियों का रहना दूभर हो गया है। वर्षा ऋतु आरंभ होने पर भी इस क्षेत्र में हैज़ा तथा मलेरिया जैसी बीमारियों के फैलने की पूरी संभावना है। इस क्षेत्र में नियुक्त अधिकारियों से हमने अनेक बार लिखित प्रार्थना की परंतु उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। सफ़ाई कर्मचारी तो हमारी बात सुनते ही नहीं।

आपसे नम्र निवेदन है कि तत्काल इस समस्या की ओर ध्यान दें और संबंधित अधिकारियों को उचित निर्देश देकर इस समस्या का समाधान करवाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

रघुवंश शर्मा (प्रधान)

2. पुस्तक-विक्रेता अथवा प्रकाशक को पुस्तकें मँगाने के लिए पत्र लिखिए–

6/33, दारागंज

इलाहाबाद (उ०प्र०)

दिनांक : 15 अप्रैल, 20XX

सेवा में

व्यवस्थापक

न्यू सरस्वती हाउस प्रा०लि०

19, दरियागंज

दिल्ली–110002

विषयः पुस्तकें मँगाने के संबंध में पत्र।

महोदय

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें वी०पी०पी० से शीघ्र भेजने का कष्ट करें। मैं एक हजार रुपये की अग्रिम धनराशि भी भेज रहा हूँ। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वी०पी०पी० आते ही उसे छुड़ा लूँगा। पुस्तकें भेजते समय कृपया ध्यान रखें कि सभी पुस्तकें नए संस्करण की हों, उनकी पैकिंग ठीक से की गई हो तथा उनपर उचित कमीशन भी काटा गया हो। पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है–

हिंदी व्याकरण (भाग-I) ..... तीन प्रतियाँ

हिंदी व्याकरण (भाग-II) ..... पाँच प्रतियाँ

हिंदी व्याकरण (भाग-III) ..... दो प्रतियाँ

भूगोल एटलस ..... चार प्रतियाँ

संस्कृत व्याकरण (भाग-III) ..... पाँच प्रतियाँ

धन्यवाद सहित

भवदीय

दिनेश

3. पड़ोस में हुई चोरी की रिपोर्ट करते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए–

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 6 सितंबर, 20XX

सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय

तिलक नगर

नई दिल्ली

विषयः पड़ोस में हुई चोरी की सूचना देने के संबंध में पत्र।

मान्यवर

मैं संत नगर बी-ब्लॉक का निवासी हूँ तथा इस पत्र द्वारा गत रात्रि में अपने पड़ोस में हुई चोरी की सूचना आप तक पहुँचाना चाहता हूँ।

गत रात्रि लगभग 11.00 बजे, जब मैं पढ़ रहा था, मैंने अपने पड़ोस में कुछ तोड़-फोड़ की आवाज़ सुनी। जब बाहर निकलकर मैंने देखा तो पाया कि हमारे पड़ोस के मकान नं० 2178 का दरवाज़ा खुला हुआ है तथा अंदर की बत्ती भी जल रही है। हमारे पड़ोसी श्री महेंद्र प्रताप शर्मा पिछले दो माह से बाहर गए हुए थे। मैंने समझा, शायद वे आ गए है। मैं उत्सुकतावश उनके पुत्र रमेश से मिलने भीतर गया, तो देखा कि तीन व्यक्ति कुछ सामान बाँध रहे हैं। मेरे शोर मचाने से पहले ही वे एक अटैची में सामान लेकर भाग गए। शोर सुनकर आस-पास के लोग अपने घरों से बाहर निकले।

मान्यवर, इस क्षेत्र में असामाजिक तत्व इस प्रकार की चोरियाँ आए दिन करते हैं। आपसे निवेदन है कि आप चोरों को पकड़कर श्री शर्मा जी का सामान दिलवाने का कष्ट करें। आपसे विनती है कि इस क्षेत्र में रात्रि में चौकसी और कड़ी कर दें तथा ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारियों को सतर्क रहने का भी आदेश दें जिससे भविष्य में ऐसी घटनाएँ फिर न हों।

धन्यवाद सहित

भवदीय
क०ख०ग०

अभ्यास के लिए

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए–

1. किसी दैनिक सामचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें अपने क्षेत्र में लगने वाली साप्ताहिक बाज़ार तथा अनुचित पार्किंग के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का वर्णन हो।
2. गरमी के मौसम में बिजली के संकट से ग्रस्त अपने इलाके के बारे में बताते हुए संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।
3. परीक्षा में असफल होने पर अपने मित्र को सांत्वना देते हुए पत्र लिखिए।
4. आपको अपने मनपसंद अभिनेता से मिलने का अवसर मिला। इस अनुभव के बारे में बताते हुए अपने नाना जी को पत्र लिखिए।

गतिविधि

पत्र लेखन

संपादक के नाम पत्र: इन पत्रों की शैली विशिष्ट होती है। इस पत्र में कुछ भाग संपादक को संबोधित करके लिखा जाता है तथा मुख्य विषय-वस्तु 'जनता' को संबोधित करके लिखी जाती है।

संपादकीय पत्र का प्रारूप

सेवा में,
संपादक महोदय,
.... (समाचार-पत्र/पत्रिका का नाम)
.... (पता)
....

.... (पत्र का विषय)
.... (संबोधन)
.... (संपादक को संबोधित करते हुए
.... विषयवस्तु से संबंधित तथ्य)
.... (मुख्य विषयवस्तु, जो सामान्य
.... जनता के लिए है)
....
.... (आत्मनिर्देश)
.... (पत्र-लेखक का नाम)
.... (पता)
....
....
.... (दिनांक)

उपर्युक्त प्रारूप के आधार पर किसी समाचार-पत्र के संपादक को बिजली की अव्यवस्था पर पत्र (लगभग 120 शब्दों में) लिखिए।

अपठित गद्यांश / काव्यांश

अपठित गद्यांश

वह गद्यांश जो पूर्व पढ़ा हुआ नहीं होता, वह 'अपठित गद्यांश' कहलाता है। यह गद्यांश पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अलग होता है। इसके अभ्यास से विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर बढ़ जाता है। इसके लेखन से सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है।

अपठित गद्यांश हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. गद्यांश के उत्तर लिखने के पूर्व कम-से-कम तीन बार गद्यांश को पढ़ें।
2. पहली बार पढ़ने के बाद गद्यांश में दिए गए प्रश्नों को पढ़ें।
3. कठिन शब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुसार लिखें।
4. गद्यांश के प्रश्नोत्तर हल करने से पहले गद्यांश के महत्वपूर्ण विचारों और शब्दों को रेखांकित करें।
5. पूछे गए प्रश्नों को पढ़कर उनके उत्तरों पर निशान लगा लें।
6. अपठित गद्यांश की भाषा तथा उद्धरण चिह्नों का प्रयोग करने से 50% अंक कट जाते हैं इसलिए उत्तर यथासंभव अपनी भाषा में लिखें।
7. उदाहरण आदि न दें।
8. गद्यांश का शीर्षक अधिकतम प्रारंभ की चार पंक्तियों में मिल जाता है।
9. गद्यांश का सारांश पूछने पर मुख्य भाव को संक्षिप्त रूप में लिखें।

उदाहरण–

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

युवा शक्ति किसी भी देश का प्राण और भविष्य होती है। जिस देश की युवा शक्ति भटक जाती है, उस देश को अवनति के गर्त में गिरने से कोई नहीं बचा सकता। दुर्भाग्यवश, आज

भारत की अधिकांश युवा शक्ति दिशाहीन है। अपराधियों की सूची में युवाओं की तादाद अधिक है। लूट-खसोट, डाकेजनी, चोरी, बलात्कार, हत्याकांड आदि में अधिकतर युवा वर्ग लिप्त पाया जाता है। यहाँ का अशिक्षित युवा वर्ग तो दिशाहीन है ही, शिक्षित वर्ग भी दिशाहीन है। वह बी०ए०, एम०ए० कर बेरोज़गारों की लंबी कतार में जा खड़ा होता है। उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। दूसरी ओर, उच्चस्तरीय जीवन-शैली उसे आकृष्ट करती है। उसे भी मोबाइल, मोटरकार, बंगला आदि की इच्छा होती है। ऐसी कर्महीन इच्छाएँ उसे अपराधों की ओर ढकेल देती हैं। शिक्षा को रोज़गार से जोड़कर और पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर इस दिशाहीनता को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है।

प्रश्न–

1. **गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।**
2. **किसी भी देश की युवा शक्ति के भटकने पर क्या होता है?**
3. **भारत के लिए दुर्भाग्य की बात क्या है?**
4. **युवा वर्ग को कैसी घटनाओं में सम्मिलित पाया जाता है?**
5. **युवाओं की दिशाहीनता को कैसे कम किया जा सकता है?**
6. **'दुर्भाग्यवश', 'बेरोज़गारी' शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए।**
7. **'युवा शक्ति किसी भी देश का प्राण और भविष्य होती है।' इस वाक्य को भविष्यत् काल में लिखिए।**

उत्तर–

1. देश का भविष्य– युवा वर्ग।
2. किसी भी देश की युवा शक्ति के भटकने पर देश अवनति के गर्त में गिर जाता है।
3. भारत के लिए दुर्भाग्य की बात यह है कि भारत का युवा वर्ग दिशाहीन हो गया है।
4. युवा वर्ग लूट-खसोट, हत्याकांड, चोरी, डकैती, बलात्कार जैसी घटनाओं में सम्मिलित पाया जाता है।
5. शिक्षा को रोज़गार से जोड़कर और नैतिक शिक्षा अनिवार्य करके युवाओं की दिशाहीनता को कम किया जा सकता है।
6. दुर्भाग्यवश – सौभाग्यवश
   बेरोज़गारी – रोज़गारी
7. युवा शक्ति किसी भी देश का प्राण और भविष्य होगी।

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश के प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व काव्यांश को दो-तीन बार पढ़ना बहुत आवश्यक है। काव्यांश पढ़कर उसके मूल भाव को ग्रहण करें तथा उसी के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें। उत्तर लिखते समय यह सावधानी बरतें कि जो प्रश्न पूछा गया है, मात्र उसी का उत्तर लिखा जाए। व्यर्थ ही उत्तर का विस्तार नहीं करना चाहिए।

उदाहरण–

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनिए–

देखो, कोयल काली है, पर इसकी मीठी है बोली।
इसने ही तो कूक-कूककर, आमों में है मिसरी घोली।
कोयल यह मिठास क्या तुमने अपनी माँ से पाई है?
माँ ने ही क्या तुमको मीठी बोली यह सिखलाई है?
बहुत भली हो, तुमने माँ की बात सदा ही है मानी।
इसलिए तो तुम कहलाती सब चिड़ियों की रानी।

प्रश्न–

1. **उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक चुनिए–**
   (क) चिड़िया (ख) कोयल (ग) मैना (घ) मोरनी
2. **कोयल की बोली कैसी है?**
   (क) कड़वी (ख) नमकीन (ग) मीठी (घ) तीनों सही
3. **कोयल कूक-कूककर किसमें मिसरी घोलती है?**
   (क) अमरूदों में (ख) जामुनों में (ग) संतरों में (घ) आमों में
4. **कोयल को मीठा बोलना किसने सिखाया?**
   (क) बहन ने (ख) भाई ने (ग) माँ ने (घ) पिता ने
5. **कोयल क्या कहलाती है?**
   (क) चिड़ियों की रानी (ख) चिड़ियों की दादी
   (ग) चिड़ियों की नानी (घ) चिड़ियों की बहन

उत्तर–

1. (ख) कोयल 2. (ग) मीठी 3. (घ) आमों में 4. (ग) माँ ने
5. (क) चिड़ियों की रानी

अभ्यास के लिए

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

मनुष्य का जीवन संसार के छोटे-बड़े प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है। वह इसलिए कि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और विचारवान प्राणी है। अपने विचारों के बल पर वह कुछ भी कर सकता है और बहुत ऊँचा उठ सकता है परंतु वे विचार सच्चे, मनुष्य के व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले, सादे और पवित्र होने चाहिए। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही सादे जीवन और उच्च विचारों को मानव-जीवन की सफलता की सीढ़ी तो माना ही गया, सारी मनुष्यता बल्कि सारे प्राणी जगत का हित साधने वाला भी माना गया। सादगी व्यक्ति के पहनावे से नहीं, बल्कि उसके प्रत्येक हाव-भाव और विचार से भी झलकनी चाहिए, तभी वह सब तरह की उन्नति और विकास का कारण बन जाया करती है। विश्व इतिहास गवाह है कि संसार में आरंभ से ही सादगी पसंद लोग ही दूसरों को उच्च विचार देकर उन्नति और विकास की राह प्रशस्त करते आ रहे हैं। महात्मा बुद्ध, संत कबीर, गुरु नानक, महात्मा गांधी, डॉ० राधाकृष्णन, बिनोवा भावे आदि महापुरुष इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

1. **गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।**
2. **मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ क्यों है?**
3. **सफलता की सीढ़ी का मंत्र क्या है?**
4. **सादगी के साक्षी कौन-कौन हैं?**
5. **इतिहास किसका गवाह है?**
6. **विलोम शब्द लिखिए–**

   ऊँचा – ....

   पवित्र – ....
7. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

   सफलता – ....

   उन्नति – ....

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो।।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो।।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को।
नर हो, न निराश करो मन को।।

1. **कवि ने क्या करने के लिए कहा है?**
2. **हमें नाम कहाँ करना है?**
3. **हमें किसको उपयुक्त करना है?**
4. **मन को क्या चेतावनी दी गई है?**
5. **काव्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।**

गतिविधि

काव्यांश प्रश्नोत्तर

कविता को पढ़कर अपने मन में उठने वाले विचारों को लिखिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

जादुई छड़ी

अम्मा, मुझे जादुई छड़ी देना
जिसे लेकर मैं खूब घूमूँगा।
जो भी गलत काम करता
उसको मैं सीधा करूँगा।
जो भी झूठ बोलेगा, उसे छड़ी का मज़ा चखाऊँगा।

जो अंधे का नाटक करता,
उसकी आँखें खोलूँगा।
आसमान में उड़कर इंद्रधनुष को
ज़मीं पर ले आऊँगा।
वन में जाकर मोर पंखों में रंगों को भरूँगा।

खेतों में जाकर धान उगाऊँगा
किसानों के लिए देवताओं को ले आऊँगा।
सभी तरफ़ घूमते-घूमते, खूब मज़े उड़ाऊँगा।
गौतम, महावीर, ईसा मिल जाएँ।
तो उन्हें फिर ले आऊँगा।

माँ एक बार फिर–
दंडी लिए घूमते 'गांधी बाबा' को ले आऊँगा।
जादुई छड़ी से सभी को
यहाँ ले आऊँगा.....
तभी मेरा भारत...
खुशहाल बन जाएगा।

मैं तब 'छड़ी' छोड़ 'किशन' की बंसी बजाऊँगा।
राम कथा के साथ 'गीता' का उपदेश सुनाऊँगा।
भारत माँ के चरणों में नतमस्तक हो
भारत के गीत गाऊँगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बच्चा माँ से क्या माँग रहा है?

....

....

(ख) छड़ी लेकर वह क्या करना चाहता है?

....

....

(ग) महान लोगों के आने से क्या होगा?

....

....

(घ) किशन की बंसी से क्या तात्पर्य है?

....

....

(ङ) कविता का सार लिखिए।

....

....

....

....

अध्यापन-संकेत–इस कविता का अभिनय वर्ग में कीजिए। आपके मन में 'भारत की प्रगति' के लिए क्या विचार उठते हैं, उन्हें लिखिए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गद्यांश प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

यह घटना उस वक्त की है, जब हमारा देश गुलाम था। उस वक्त हर क्षेत्र में भारतीयों के साथ भेदभाव किया जाता था, चाहे वह नौकरी हो या व्यवसाय। अंग्रेज़ों को मंज़ूर नहीं था कि कोई भारतीय उनकी बराबरी करे। स्कूलों व कॉलेजों में नियुक्त अंग्रेज़ व भारतीय अध्यापकों के वेतन में भी ज़मीन-आसमान का अंतर था।

उन्हीं दिनों जगदीश चंद्र बसु केंब्रिज यूनिवर्सिटी से अपनी शिक्षा पूरी करके लौटे। यहाँ आकर उन्होंने नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया, जिसमें वह सफल रहे। उन्हें कोलकाता के एक कॉलेज में लेक्चरर नियुक्त किया गया। एक महीना पढ़ाने के बाद जब उन्हें अंग्रेज़ लेक्चरर्स के मुकाबले कम वेतन दिया गया, तो उन्होंने सैलरी लेने से ही इनकार कर दिया। बसु को यह अन्यायपूर्ण लगा और उन्होंने इसका खुलकर विरोध भी किया लेकिन अंग्रेज़ अधिकारियों पर उनके विरोध का कोई असर नहीं पड़ा। बसु भी हार मानने वालों में से नहीं थे। उन्होंने तय किया कि वह नौकरी नहीं छोड़ेंगे।

बसु ने उसी कॉलेज में तीन साल तक बिना वेतन के कार्य किया। उन्होंने अपने काम करने के ढंग तथा लगन में कोई कमी नहीं आने दी। उन्होंने भारतीयों के खिलाफ़ हो रहे अन्याय को कभी नहीं सहा और इस बारे में लगातार अपने विचार व्यक्त करते रहे। इन तीन वर्षों में लेक्चरर के रूप में वह बहुत लोकप्रिय हो गए। उनके पढ़ाने के ढंग की हर कोई प्रशंसा करता था। विद्यार्थी भी उनसे बेहद प्रभावित थे। उनकी योग्यता और लोकप्रियता को कॉलेज के प्रबंधक भी देख रहे थे। वे कब तक उनकी उपेक्षा कर पाते? आखिरकार उन्हें इस विद्वान टीचर के आगे झुकना ही पड़ा और विवश होकर अंग्रेज़ टीचर्स के समान वेतन देना पड़ा। उन्हें पिछले तीन साल का वेतन भी दे दिया गया। बसु की इस दृढ़ता ने देश के और लोगों में भी आत्मविश्वास का संचार किया।

(क) इस परिच्छेद का एक-तिहाई लिखिए।

(ख) भारतीय व अंग्रेज़ अध्यापकों के वेतन में फ़र्क क्यों था?

(ग) जगदीश चंद्र बसु ने वेतन लेने से क्यों इनकार किया?

(घ) अंग्रेज़ जगदीश चंद्र बसु के सामने क्यों झुके?

(ङ) इस परिच्छेद का एक उचित शीर्षक दीजिए।

परियोजना-3

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद एक विचार या भाव पर लिखा गया वाक्य-समूह होता है। अनुच्छेद लिखने का विषय दैनिक घटना, अनुभव सूक्ति या काव्य पंक्ति आदि हो सकता है। अनुच्छेद अपने आप में पूर्ण होता है और एक विषय से संबंधित होता है। यह निबंध से अलग है। निबंध कई अनुच्छेदों से लिखा होता है। उसमें विचारों की विविधता होती है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. विचारों में क्रमबद्धता हो।
2. वाक्य छोटे और विषयानुकूल हों।
3. भाषा सटीक, सरल तथा स्पष्ट हो।
4. अनावश्यक वर्णन न हो।
5. अनुच्छेद 80–100 शब्दों का हो।

उदाहरण–

निम्नलिखित अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा अनुच्छेद-लेखन का अभ्यास कीजिए–

1. कोहरे की चादर से ढकी सुबह

24 जनवरी को हमें दिल्ली से भरतपुर जाना था। उस दिन सरदी अपनी चरम सीमा पर थी। ऐसा लग रहा था मानो सूरज भी रज़ाई ओढ़कर सो गया है। हमें सुबह 6:40 की ट्रेन पकड़नी थी। घने कोहरे के कारण पिछले कई दिनों से रेलगाड़ियाँ देर से चल रही थीं और हवाई जहाज़ देर से उड़ान भर रहे थे। कई ट्रेनें तो रद्द भी कर दी गई थीं। कोहरे के कारण मार्ग साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, इससे दुर्घटना घटने का खतरा बहुत बढ़ गया था। हम सभी रेलवे सूचना-विभाग में फ़ोन कर-करके थक गए थे, परंतु गाड़ी के आने के सही समय का पता नहीं चल पा रहा था। जब हम रेलवे स्टेशन पहुँचे, तब पता चला कि गाड़ी 12 से 14 घंटे देर से आएगी। ठंड के कारण हमारे दाँत किटकिटा रहे थे। मोटे-मोटे ऊनी कपड़ों से लदे होने पर भी सरदी के मारे हमारा बुरा हाल था।

उस समय तापमान लगभग 3° सेल्सियस था। इस अवस्था में प्लेटफ़ॉर्म पर 12 से 14 घंटे बिताना बहुत कठिन था, इसलिए कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद हम सभी घर लौट आए।

2. मोबाइल के दुरुपयोग

सूचना तकनीक के वर्तमान युग में संदेश भेजना और प्राप्त करना दिनों और महीनों की दूरी से सिमटकर कुछ मिनटों तक की सीमा में सिमट चुका है। ऐसे में मोबाइल आज परस्पर संपर्क साधने व उसे निरंतर बनाए रखने का अत्यंत आधुनिक एवं मज़बूत साधन बन चुका है। मोबाइल ने जादू के पिटारे की तरह आज मनुष्य की हथेलियों पर उसके संपर्क-संसार को समेटकर रख दिया है। मोबाइल अब केवल बात करने का साधनमात्र नहीं है, बल्कि इससे फ़ोटो खींचना, वीडियो बनाना, मनोरंजन करना, इंटरनेट का इस्तेमाल आदि करना सभी कुछ संभव है। इसे छोटा कंप्यूटर भी कहा जा सकता है। किंतु अब मोबाइल के दुरुपयोग भी निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। वे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर मोबाइल पर बात करने, गेम खेलने या इंटरनेट का इस्तेमाल करने में लगे रहते हैं। मोबाइल ने खेल-कूद को मैदानों से शयनकक्ष में विस्थापित कर दिया है। मोबाइल के दुरुपयोग से हमारी निजता समाप्त हुई है, जोकि एक गंभीर विषय है। नवीन तकनीकों को अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल से जोड़ा गया, परंतु कुछ असामाजिक तत्व लोगों की निजी जानकारी को बिना बताए चुरा लेते हैं और उनका दुरुपयोग करते हैं। मोबाइल फ़ोन के अतिप्रयोग के परिणामस्वरूप ही दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं। यही नहीं इससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी सामने आई हैं; जैसे–आँखों-मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव, हृदय के रोग आदि। मोबाइल के इन दुरुपयोगों के प्रति परिवार, समाज तथा सरकार द्वारा चिंता जाहिर की जा रही है और उसे रोकने के लिए जागरूकता पैदा की जा रही है। सरकार ने साइबर क्राइम कानून के तहत अनेक कानून भी बनाए हैं, लेकिन यह दुरुपयोग तभी रुक पाएगा जब हम व्यक्तिगत रूप से भी इनके दुष्परिणामों के प्रति गंभीर होकर सावधानीपूर्वक इसका इस्तेमाल करेंगे।

अभ्यास के लिए

निम्नलिखित विषयों पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–

(क) मेरे विद्यालय की घंटी

(ख) मज़दूर की आत्मकथा

(ग) एक दिन मैंने सपना देखा

(घ) सड़क पर घटी दुर्घटना

(ङ) समुद्र तट की सैर

गतिविधि

अनुच्छेद-लेखन

निम्नलिखित विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–

बढ़ता प्रदूषण

परियोजना-4

निबंध-लेखन

निबंध का अर्थ—बँधी हुई रचना। किसी विषय पर क्रमपूर्वक पूरी स्पष्टता के साथ अपने विचारों को व्यक्त करना, निबंध कहलाता है।

निबंध के प्रकार—वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, विचारात्मक। निबंध लेखन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दीजिए—

1. विषय को समझें।
2. पूरे निबंध की रूपरेखा बना लें।
3. प्रत्येक बिंदु का अलग अनुच्छेद हो।
4. निबंध सरल भाषा में हो।
5. स्पष्टता के लिए काव्य पंक्तियों, कथनों, उदाहरणों तथा लघुकथाओं का प्रयोग करें।

निबंध के अंग—भूमिका, विषय-विस्तार, उपसंहार।

निबंध के विषय—निबंध लेखन के कुछ महत्वपूर्ण विषय निम्नलिखित हैं—
समय का सदुपयोग, सब देशों से न्यारा भारत, टेलीविजन—लाभ और हानियाँ, क्रिकेट का खेल, महँगाई एक समस्या।

निबंध के लिए संकेत बिंदु—

विषय—समय का सदुपयोग— प्रस्तावना, समय का महत्व समझना, सभी कार्य समय पर करना, समय के सदुपयोग के लाभ, उपसंहार।

गतिविधि

निबंध-लेखन

दिए गए चित्र के आधार पर एक निबंध लिखिए तथा उचित शीर्षक दीजिए–

शब्दकोश का प्रयोग

'डिक्शनरी' शब्द को हिंदी में शब्दकोश कहते हैं। शब्दकोश अर्थात् शब्दों का खज़ाना। जिस पुस्तक में हज़ारों शब्द तथा उनके अर्थ भी हों, उसे ही शब्दकोश कहते हैं। यदि शब्द को भाषा का शरीर माना जाता है, तो अर्थ उसकी आत्मा है।

कोई भी पाठ पूरी तरह से तब समझ में आता है, जब हमें हर शब्द का अर्थ पता हो। कोई कितना भी ज्ञानी हो, कभी-न-कभी किसी शब्द के अर्थ से अनभिज्ञ रहता है, तब शब्दकोश काम आता है। यदि आपको भी किसी शब्द का अर्थ नहीं पता हो, तो आप शब्दकोश में से पता कर सकते हैं।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आप किसी भी शब्द का अर्थ आसानी से ढूँढ़ सकेंगे–

(क) शब्दकोश में शब्दों का एक विशेष क्रम होता है। शब्द के पहले अक्षर का क्रम वही रखा गया है, जो देवनागरी वर्णमाला का है।

(ख) पहले स्वरों का क्रम आता है; जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ग) स्वरों के बाद व्यंजन आते हैं, हर व्यंजन के साथ स्वर मात्रा के रूप में लगते हैं। शब्दकोश में इनका क्रम इस प्रकार दिया जाता है–

क ख ग घ ङ	→	च छ ज झ ञ	→	ट ठ ड ढ ण	→	त थ द ध न
प फ ब भ म	→	य र ल व	→	श ष स ह	→	क्ष त्र ज्ञ श्र

(घ) अं/अँ, अः को अलग अक्षर नहीं माना गया है, ये दोनों ध्वनियाँ 'अ' के साथ ही आएँगी।

(ङ) ङ, ञ, ण से कोई भी शब्द आरंभ नहीं होता।

(च) दूसरे अक्षर के रूप में निम्नलिखित क्रम होगा–
अं/अँ, अः, अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड, अढ, अत, अथ, अद, अध, अन आदि।

(छ) इस क्रम के बाद उस आदि (आरंभ) अक्षर के साथ मात्राएँ लगने का क्रम होगा; जैसे–
का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ।

(ज) मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होंगे; जैसे–
क्क, क्ख, क्च, क्थ, वन, क्न, क्प, क्म, क्य, क्र, क्व, क्ल, क्श, क्ष, क्ष (क्ष) क्स।